सकारात्मक स्पंदन द्रष्टि - पुष्टि

VIBRANT PUSHTI

“ जय श्री कृष्ण “

बस चल रहा हूं - जो राह पर - जो चल रहे थे - चल रहा था - चलता रहता था।

बस सुन रहा हूं - जो सुनते रहते है - जो सुना रहते है - जो सुना रहे थे।

बस कह रहा हूं - जो कह रहे है - जो कहते रहते है - जो कह रहे थे - जो कहते रहते थे।

बस जान रहा हूं - जो जान रहे है - जो जनाते रहे है - जो जना रहते थे - जो जानते रहते थे।

जन्म धरा - तो यही किया - वही किया - जो करते है - कहते है - सुनते है - बस! करते रहे 🙏

एक घरेड - एक ढसेड - एक हसेड - एक बसेड 🙏

क्यूंकि मेरे माता - मेरे पिता - मेरा सिंचन - मेरे संस्कार - मेरी शिक्षा - हमारे व्यवहार - हमारा धर्म 🙏

यही जीना - यही रहना - यही मरना 🙏

सोच लें! यही ही है ना!

तो मैं क्या! मैं कौन! बस एक चलता फिरता भटकता मुसाफिर🙏

सोच लें!

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ख़ाली हाथ आएं है

ख़ाली हाथ जाते है

बस बीच का समय

जो कहां कहां ले जाते है!

कुछ तो है यह बीच समय का रहस्य

जो उलझ गए तो फिरते रहो जनम जनम

जैसे ख़ाली हाथ आएं ख़ाली हाथ जाएं

बार बार लटकते आएं जाएं

आज के गुरु कहे ऐसा

आज के माता पिता कहे ऐसा

आज के समाज कहे ऐसा

ऐसा ऐसा में खो गए ऐसा

ऐसा ऐसा में छूट गया ऐसा

ऐसा ऐसा में भूल गए ऐसा

ऐसा ऐसा में तुट गया ऐसा

बस! जीते जाएं

राम बोलो भाई राम

न कोई बलिदान न कोई त्याग

न कोई संस्कार सिंचन

न कोई विद्या दान

बस! हर किसी का लेना ही लेना

जन्म जीवन मृत्यु को फेरना ही फेरना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मन "

मन जानती हो?

मन - माना तो जग जीता

मन - पाया तो श्री प्रभु पाया

मन - उलझा तो जीवन उलझा

मन - स्थिर शांति शांति और शांति

मन - तुटा सबकुछ वैर विखेर

मन - रंगा हर पल रंगीन

मन - चंगा कथरोट में गंगा

मन - प्रेमी - आत्मा प्रिय

मन - शुद्ध - कर्म विशुद्ध

मन से ही पूर्णता - मन से ही अपूर्णता

मन से मानव - मन से माया

मन से मनुष्य - मन से भविष्य

मन से मुश्किल - मन से मुक्ति

मन से महान - मन से धनवान

मन से मलाल - मन से मुस्कान

मन से मंदिर - मन से मूर्त

मन से मोहब्बत - मन से नफ़रत

सच! मन से सत्य - मन असत्य

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

मेरा मन तुझे नमन 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बहुत घूम घूमकर बहुत समझ समझ कर जीवन का हर पहलू - हर परिस्थिति - समय की परिवर्तता को पहचान कर एक ज्ञानी और आध्यात्मिक उच्च संस्कारित धनी व्यक्ति अपना जीवन शांति और आनंदमय लुट और लुटाकर जी रहा था।

कुटुंब-समाज और मित्र गणों को स्व जीवन की योग्यता का परिचय देता जी रहा था।

न कोई कक्षा का घमंड - न कोई विद्या का अभिमान - न कोई सामाजिक स्थान की अपेक्षा - न कोई व्यक्तिगत अधिकार 🙏

बस! जीना है साथ साथ - राम राम राम करते और आनंद करवाना है कृष्ण कृष्ण करते 🌷

बिलकुल अनोखा जीवन संसार 👍

क्या अपना भी ऐसा ही जीवन हो ऐसा एकांत में सोचते और विचार करते रहते है। 🙏

हां! ऐसा अवश्य हो सकता है - जो हम ओरों को लिए करें और अपने मन को किसी निम्नता में न बहकावे 🙏

जीवन मधुर - साथी प्रचूर सुखमय

जीवन रंगीन - कुटुंब कलात्मय

सच में जन्म जीवन सफल 🙏

चाहे सीताराम कहो - चाहे राधेश्याम

जग में सुंदर है यही काम बोलो राम राम राम

बोलो श्याम श्याम श्याम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चार साल का बालक जो संयुक्त कुटुंब में रहता है, अनेक प्रकार की परिस्थितियों, बातचीत, कुटुंब कलह के बीच उन्होंने एक ऐसी बात कहीं की आज के कौटुंबिक समय की अनोखी शिक्षा है🙏

दादा! मुझे भूख लगी है कुछ फल लेते है

दादा - चोक्कस! चलो

दादा और पोता दोनों चलते चलते फल की दुकान पर पहुंचे और

दादा ने दो फल हाथ में लिए और उनके दाम कितने देना है वह दुकान मालिक को कहने लगे

इतने में पोता बोला - दादा! यह दो नंग फल नहीं! हमें तो चार फल लेने है

एक - दीदी का

एक - मजले भैया का

एक - छोटे भैया का

एक - दोनों छोटे भैया का बड़ा भैया मेरा

हम चार हुए तो - चार लो - दो नहीं 🙏

दादा अचंभित हो गए और बोले - बेटा!

तुम्हारे छोटे भैया नहीं खा पाएंगे!

पोता बोला - दादा! मैं और दीदी उन्हें खिलायेंगे!

दादा ने कहा - बेटा! नहीं नहीं! मैं केवल दो ही ले सकता हूं।

पोता प्रणाम करते कहा - दादा! मुझे मेरे दोनों भैया और दीदी का ख्याल रखना है, यह मेरी जिम्मेदारी है 🙏

चार लो तो ही मैं खा पाउंगा 🙏

दादा ने चार के दाम चुकाते हंसते मुख से बाहर निकले, सोचने लगे -

क्या दीपक पाया है मैंने!

पोते को मनोमन प्रणाम करते उनकी उंगली पकड़े घर का रास्ते चलने लगें 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सभ्यता "

एक बुजुर्ग व्यक्ति अपने अनुभवों का निचोड़ की कमाई बचत से अपने कुटुंब के हर सपने पूर्ण करता था। एक दिन वह बाजार में ऐसे ही चलते चलते घूम रहा था, उनमें वह टोयोटा कार के एक शॉ रूम में जा पहुंचा। वहां उन्होंने एक कार देखीं और खरीद ने के लिए उनके सेल्स मैन से बात की तो सेल्स मैन उन्हें देखकर हंसने लगा और कहा - यह कार की कीमत बहुत ऊंची है आप की हैसियत नहीं है कहते कहते हंसने लगा और आसपास खड़े हुए शॉ रूम के साथीयों को कहने लगा - कैसे कैसे लोग बिना हैसियत कार खरीदने आते है! जेब में कोडी दाम नहीं और ख्वाब बड़े महलों का करते है - सब वह व्यक्ति के सामने देखकर हंसते थे, तब वह व्यक्ति ने कहा - आप का मेनेजर को बुलाए क्यूंकि मुझे यह कार खरीदनी है।

सेल्स मैन ने कहा - हमारा समय कीमती है, उन्हें हम ऐसे बिन हैसियत के लोगों के प्रति। समय बर्बाद करना नहीं चाहते! आप फिजूल का समय हमारा बर्बाद न करें🙏

वह व्यक्ति ऐसी बातें सुनकर और मश्करी करते सेल्स मैनो को तिरछी नज़र कर के नीचे उतर गया। दूसरे दिन दूपेर को वह व्यक्ति फिर वह शॉ रूम आया तो सब सेल्स मैन मश्करी करते कहने लगे क्या अब शॉ रूम खरीदने आए हो?

तब वह व्यक्ति ने अपने पाकीट से पेपर्स निकाला और कहा - हां! यह शॉ रूम मैंने खरीद लिया है - देखो यह पेपर्स! इतने में दौड़ता मेनेजर आया और अपने स्टाफ को कहने लगा - अपना यह शॉ रूम बिक गया है, अभी थोड़ी देर में नया मालिक आएगा, सब शिस्त और सही रहना, नहीं तो नया मालिक हमें नौकरी से निकाल देंगे।

सब वह व्यक्ति की ओर आश्चर्यजनक देख रहे थे। एक ने मेनेजर को कहा - सर! नया मालिक कबसे यहां खड़े है। यह हमारे सामने जो खड़े है वहीं हमारे नएं मालिक है। मेनेजर वह व्यक्ति की ओर देखते - हंसते हंसते बोला - अरे मश्करी न करो - वह मालिक आते ही होंगे - सब अपने काम पर लग जाओ और वह व्यक्ति को कहा - आप जाओ - जाओ - सिक्योरिटी इन्हें नीचे उतारो - ऐसे व्यक्ति को शॉ रूम में कभी आने नहीं दो।

इतने में दौड़ता दौड़ता जो व्यक्ति आया उन्होंने देखा तो बोल उठा - मालिक आप! आप दौड़ते दौड़ते क्यूं आएं! मुझे बुला लिया होता! वह व्यक्ति बोला - मेनेजर! वह जो नीचे उतर रहा व्यक्ति को बुलाओ, वह व्यक्ति यह शॉ रूम का नया मालिक है, उन्हें यहां से किसने उतारा?

मेनेजर अचंभित हो गया! आसपास का स्टाफ भी क्षोभित हो गये। पुराना मालिक क्षमा मांगते नया मालिक को कहने लगा - जेन्टल मैन! हमें माफ़ करें🙏 हमसे भूल हो गई है 🙏

मालिक ने कहा - आपने आपके स्टाफ को शिस्त और सम्मान देना नहीं सीखाया है! कोई भी ग्राहक को कैसा व्यवहार करना चाहिए! उनमें इतने संस्कार नहीं है!

पूरा स्टाफ डरने लगे - और कहने लगे - हमसे भूल हो गई 🙏 हमें नौकरी से नहीं निकालना 🙏

नया मालिक ने वही स्टाफ को शिस्त और सम्मान में रहने को सीखाया - आज वह अमेरिका में सबसे अधिक लोकप्रिय टोयोटा कार के मुख्य विक्रेता है। पूरी दुनिया में आज टोयोटा कार नंबर वन कार है।

हर व्यक्ति को शिस्त और सम्मान से देखें तो कोई भिखारी नहीं होगा 🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हां! धर्म अर्थात क्या? 🌷 🙏 🌷

बहौतो ने खूब खूब अपनाया अपने जीवन और औरों के चरित्रों से अर्थात जो कुछ भी समझाया और अपनाया जाता है अनुभव और चरित्रों से ही 🙏

जो कोई भी जो जानता है - पाता है - समझता है और अपनाता है उसके संकल्प, निश्चय और मान्यता प्राप्त किया प्रेरित आगे आगे कदम उठाए वह अपनी दिशा और मार्ग निर्धारित करता है 👍

यही ही हर एक के जीवन का सत्य है 🙏

अर्थात धर्म का बंधारण ऐसे निर्माण होता है 🙏

अपनी नज़र - अपनी समझ - अपनी विद्धता आधारित धर्म का पालन पोषण होता है। इसमें न तो कोई बल प्रयोग - कोई ज़ोर जबरदस्ती - कोई बंधन - कोई नीति नियमन या जो हुकमी नहीं होती है।

अगर जो हुकमी या जबरदस्ती हुईं तो धर्म की परिभाषा बदल जाती है🙏

आज इसलिए धर्म की व्याख्या - धर्म का अर्थ - धर्म की योग्यता - धर्म की समीक्षा - धर्म की समझ बहुत ज्ञ

" शृंगार निहारना "

कोई भी व्यक्ति कैसी भी उम्र का हो - छोटा हो या बड़ा हो शृंगार से वह आकर्षित होगा ही 🌷

कहीं भी कैसी भी स्थली या जगह हो, कोई भी व्यक्ति की नज़र शृंगार ही ढूंढ़ती रहती है 🌷 ऐसा क्यूं?

शृंगार प्रिय है - मधुर है - आनंददायक है 🌷

यह प्रियता में, यह मधुरता में, यह आनंददायकता में जो संस्कार और सम्मान का गुण संयोजन किया जाएं तो हम गोपी और गोपाल - श्यामा और श्याम हो जाएं 🙏

" शृंगार " द्रष्टि - सृष्टि - वृष्टि और पुष्टि से एकाकार 🌷

मन मुग्ध

नैन युक्त

तन शुद्ध

धन विरक्त

जीवन मुक्त

आत्मा प्रेमामृत

अलौकिक - अनोखा - अखंडता - सुसंस्कृत - सुद्रड - सुसंगत - प्रेमाधुर युग 🌷

आज इसलिए मीरा होने का मन होता है

आज इसलिए गोपी होने का पण होता है

आज इसलिए सखी होने का भृण होता है

आज इसलिए वृंदावन होने का वृण होता है

🌷 🙏 🌷 हां! हे प्रिये! श्री कृष्ण: शरणं मम!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" एक चुटकी मिट्टी "

नव व्यक्तियों का एक कुटुंब था। दादा दादी - माता पिता - दो भाई एक बहन दो बहू - एक बेटी। गांव की एक नन्ही सी करियाणा की दुकान से हर कोई हंसता, कुदता, पढ़ता और सुखमय जीवन बिताता।

बेटा विज्ञान में स्नातक, दूसरा बेटा नाणाकिय में स्नातक और बहन कोम्प्युटर में स्नातक। प्रथम बेटो स्कूल में शिक्षक, दूसरा बेटा बैंक में ओफिसर और बहन का विवाह से वह शहर में, बड़ा बेटे की बहू भी विज्ञान में स्नातक, नन्ही सी गुड़िया प्ले स्कूल में पढ़ती। सब हंसते कूदते रमते खेलते आनंद में जीते।

गांव में बीमारी आई पिता और दोनों बेटे चल बसे, रह गए केवल माता, बहू और बेटी। दुकान बिक गईं, नौकरियां चली गई और रह गईं हवेली। दवा - अस्पताल में धन दौलत खर्च हो गए - बहू पर आ गई जिम्मेदारी। नौकरी ढूंढने में नोंचे दुनिया से बैठी घर उमरियां।

शाहुकार को हवेली गिरवी रख कर भगवान आसरे जीवन संभालती बहू को अनेक कष्ट आ पड़े। दिन गुजरते गुजरते कर्ज़ा बहुत बढ़ गया। लाचार माता - लाचार बहू और लाचार नन्ही सी गुड़िया।

एक दिन शाहुकार का बेटा क़र्ज़ का पैसा लेने आया, देखा वह बहू को वह सहमा गया - अरे यह तो मेरे साथ पढ़ने वाली शहर की एक रहिस की लड़की है। उन्होंने ने कहा - बहन! यह कैसा हो गया! बहू ने कहा - भैया! कुदरती प्रकोप था। कोई कुछ नहीं कर सकता था।

शाहुकार के लड़के ने कहा - बहन! यह हाथ पर ररक्षा का धागा बांध दे, आज से मैं जिम्मेदारी संभालता हूं🙏

भैया ने एक चुटकी बहन के चरणों की मिट्टी ली और चल पड़ा कहीं ओर।

एक महीने के बाद बैंक कर्मचारी बहू के घर पैसा देने पहुंचा तो माता, बहू और गुड़िया अचंभित रह गए। थोड़े समय में सारा कर्ज़ा उतर गया और बहू को भी भैया ने सही और योग्य जगह पर नौकरी पर रख दिया।

एक दिन बहू ने भैया को कहा - भैया! मैं बार बार सोचती हूं कि - आपने मेरे चरणों से एक चुटकी मिट्टी क्यूं लिया और इसका मूल उद्देश्य क्या था?

भैया ने बहन के चरणों में बैठकर कहा - बहन! तु स्त्री है और स्त्री एक ऐसी ज्योत है जो ज्योत से आज सूरज उगता है🙏

धरती सहती है 🙏 नदी उदगमती है🙏

प्रकृति जीवन जीती है🙏

तुम्हारी एक चुटकी मिट्टी मेरी ऐसी शिक्षा और रक्षा है जो मुझे न रोगी - न भोगी और न द्रोही बनाता। मैं सदा मंगलमय ही करता और रहता हूं। यह मेरे जीवन की सर्वोच्च - सर्वोत्तम उपलब्धि है🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

"अच्युताय नमः अनन्ताय नमः गोविन्दाय नमः"

यह मंत्र का अर्थ है - अच्युताय नमः

हम सदा द्रृड रहे - निश्चयी रहे - अडग रहे - नि:संकोच रहे - स्थिर रहे🙏

अनन्ताय नमः अर्थात हम स्वयं अनंत है, हम स्वयं पर विश्वास रखें कि मैं जो भी करूं सत्य और सिद्धांत से - चाहे कोई परिस्थिति आएं - संजोग आएं - समय आएं👍

गोविन्दाय नमः अर्थात मेरी सारी अपेक्षाएं, इच्छाएं, मांग, इन्द्रियां सर्वत्र श्री गोविन्द को समर्पण 🙏

इससे मन - चित् एकाग्र रहेंगे

जिसका मन अस्थिर उनका रोग गंभीर

जिसका तन योगी उनका जीवन निरोगी

जिसका धन शुद्ध उनका निर्वाह बुद्ध

जिसका जीवन सरल उनका धर्म सफ़ल

आज का धन

आज का विचार

आज का व्यवहार

आज का स्वर

आज का पैर

आज का धैर्य

आज का वैर

बिन संकल्प - बिन नियमन - बिन कर्म है

पुत्र - पुत्री को समझाओ - व्यर्थ

तुरंत - खेल, संशयी, बिन सोचे तुरंत जवाब, छूपा छूपी, अहंकारी, स्वार्थी, घमंडी, निर्लज्ज, वादविवादी

ऐसा कोई स्पर्श नहीं होगा - केवल शांत सरल🙏

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" गाली बोलना "

दो मित्र थे - दोनों पढ़ें लिखे और अच्छे संस्कार और परम्पराओं से थे। एक दिन एक मित्र कुछ ऐसा बोल रहा था जो कभी दूसरा मित्र सुन भी न पा रहा था और समझ भी नहीं पा रहा था कि यह मेरा मित्र क्या बोल रहा है!

जो जो शब्द मित्र बोल रहा था - तब तब उनका चेहरा, उनके हांउ भाव, उनकी चेष्टा, आदि से वह अचंभित हो गया! अरे ऐसा मेरा मित्र!

वह मित्र जिसने सुना वह सोचने लगा - अरे यह मेरे मित्र ने जो जो बोला उसका असर कहां कहां और किस किस पर पड़ा!

१. सब सुनते है - हंसते है पर किसीने मन पर और अपने पर नहीं लिया

२. जो बोलता था वह खुद उनका संस्कार और चरित्र बयां कर रहा था जो कहीओं से विपरीत था इसलिए न सुनने जैसे कर रहे थे।

३. जो बोल रहा था - उनसे धीरे धीरे सब दूर हो जाते थे - कहते रहते थे - बकवास करने की उनकी आदत है - उनसे दूर रहो।

४. कौन उन्हें सहारा दे! कोई नहीं - क्यूंकि हर एक को अपनी विद्धता प्यारी है! गाली बोलने से कोई उन्हें विद्वान या समझदार की उपाधि की जगह - उनका कर्म और जन्म जीवन वह भूक्ते! हमें क्या?

५. न कोई उन्हें आर्थिक मदद करें या सही मार्गदर्शन दे! उनके लिए मत सोचो - यह नौटंकी टाईमपास है। ओहहह!

६. न विश्वास - न समझ - न मार्गदर्शन - न साथ 🙏 बस कहने के लिए मित्र! अरे घर में न घुसने दे - बाहर ही बाहर गुटली दांव 🙏

ऐसो के साथ सुबह! नहीं नहीं🙏

ऐसो के साथ दिन की शुरुआत! नहीं नहीं🙏

हमारी साथ जो बैठे वह योग्य होना ही चाहिए👍

मित्रता का सही अर्थ यही है👍

अपना समाज का फरजंद हमसे विशिष्ट होना चाहिए👍

गर्व से कहे - यह मेरा मित्र है 🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक एक कुटुंब में कोई न कोई पीड़ित है, कोई न कोई दु:खी है, मुश्किलें में है, तकलीफ में है।

हमारे हिन्दुस्थान के घर घर में देख लें, चाहे कोई कितना भी अमीर हो, वैभवी हो, सुख समृद्ध और धन दौलत से प्रचूर हो।

इसका अर्थ इतना तो सत्य है की वैभवशाली होने से, पैसादार होने से दु:ख मीट नहीं सकता।

दु:ख मीट सकता है - चोक्कस👍

मुसीबतों तुट सकती है - अवश्य👍

पीड़िता छूट सकती है - बिलकुल👍

हम सुखमय जी सकते है - चोक्कस🌷

हम शांति से जीवन व्यतीत कर सकते है - अवश्य🌷

हम अपनी इच्छा या अपेक्षाएं इच्छाएं पूर्ण कर सकते है - बिलकुल🌷

कमाल की बात कर रहे हो👍

सत्य और सैद्धांतिकता से कह रहा हूं - हम अवश्य आनंददायक जीवन बिता सकते है🙏

क्रमशः

“ Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

२०२४ > २०२५
दुनिया के गणित से एक वर्ष पूर्ण हो रहा है और नया वर्ष का प्रारंभ हो रहा है।
धन दौलत जो सबसे बड़ा कारण है अपने जीवन का
जो भी गणित करेंगे तो तोल मोल से पैसा
जो भी संबंध बनाएंगे तो पैसा
जो भी क्रिया करेंगे तो अनुसंधान पैसा
जो भी द्रष्टि से देखेंगे तो पैसा
जीयेंगे तो पैसा
बस इसलिए हम पीछे है
बस इसलिए हम भटकते रहते है
बस इसलिए हम रखडते रहते है
बस इसलिए हम बिछड़ते रहते है
🌷🙏🙏🌷🙏🌷🙏🌷
मुझे किसने कहा
आप नकारात्मक बहुत सोचते है
यह बात पर बहुत गहरी असर हुई
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
गंभीरता से चिंतन किया तो समझ आया कि आज हर कोई केवल वर्तमान को ही मानते है। कल तो मेरे पूर्वजों ने जो जीया वह उनका नसीब - और आने वाला कल में हम है या नहीं - क्या पता!
मेरे मित्रों! हां तो कल नव वर्ष है तो आज उनके आने के लिए क्यूं इतना हर्षोल्लास?
नव वर्ष के लिए तो हमें ऐसी भूमिका तैयार करनी होती है -
*जो सही निर्णय लिए उनमें उत्तमता और योग्यता कैसे हासिल हो।
-जो जो गलती द्रष्टि पात हुई उसका निवारण कैसे हो।
नहीं नहीं ऐस करो - कल जो होगा वह देखा जाएगा!
हम कितने अनुसरणीय है!
*जो वह करते है ऐसा करे
*अरे जो उन्होंने पाया उनमें उनकी सिद्धता कितनी है और भविष्य में वह कितनी प्रबलता से उपर उठने वाले है वह नहीं सोचते!
तय करे नकारात्मक कौन?
दुनिया की हर व्यवहार में वह प्राथमिक
दुनिया के हर नीति नियमन में वह प्राथमिक
दुनिया की हर दुनियादारी में वह प्राथमिक
दुनिया की हर व्यवस्था में वह प्राथमिक
तो हम कहां?
हम केवल अनुकरण में - गुलामी में🙏
हम भी नव वर्ष में कुछ योग्य करने का संकल्प करे और अवश्य करने का निश्चिंत प्रयत्न करने की प्रतिबद्धता अपनाएं तो नव वर्ष हर्षोल्लास से स्वागत करे🙏
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
Happy New Year 🥳🌷🙏🌷

માતા પિતા નું ખરાબ વિચાર્યું - અચૂક રોગિષ્ટ થવાનું છે

ભાઈ બહેન નું ખરાબ વિચાર્યું - અચૂક કંઈક ખોટું થવાનું છે

કાકા કાકીનું ખરાબ વિચાર્યું - અચૂક અકસ્માત થવાનો છે

કુટુંબ નું ખરાબ વિચાર્યું - અચૂક પાયમાલ થવાનો છે

પતિ માટે ખરાબ વિચાર્યું - કુષ્ટ રોગ થવાનો છે

પત્ની માટે ખોટું વિચાર્યું - અચૂક ધન દૌલત જવાની છે

માતા પિતા ની મિલકત ખાવો - અચૂક શાપ લાગવાનો છે

ઇતિહાસ જોઈલો

જેટલો ખરાબ વિચાર કુટુંબ માટે કરશો એટલું જ નજીક ભવિષ્ય બરબાદી નું નજીક આવવાનું છે.

જમો હોટલ લારી નું - જેવા તેઓ જીવે છે તેવું જ જીવન પોતાનું આવશે

કરો ખોદણી એક બીજાની - સદા નફરત પામશો દરેક થી

એટલું ચોક્કસ છે - જેવું વિચારો તેવું જ પામશો.

પિતા નો અર્થ ખૂબ જ ઊંચો છે

માતા નો અર્થ ખૂબ જ ઊંચો છે

પોતે માતા પિતા હોય ને પોતાના માતા પિતા ને તરછોડશો - તમે તમારી બરબાદી ની સજા ભોગવવા ભૂમિકા તૈયાર કરી રહ્યા છો.

અત્યારે ભલે નસીબ થી માતાપિતા ની મિલકતો નો ઉપયોગ અને ઉપભોગ કરો છો પણ તે નસીબ જો સિધ્ધાંત વિરુદ્ધ અને સંસ્કાર વગર કરશો તો કેવા હાલ થશે તે સત્ય નજીક જ છે.

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

“Principle of Identity “

"स्व चरित्र के सिद्धांत "

बच्चे से जो भी उम्र तक पहुंचें

बाल शाला से स्नातक पर पहुंचें

एक क्षण यह सिद्धांत के लिए सोचा है?

कुटुंब में एक बार जो धारा बही

बस बहाते चलो बहाते जाओ

एक ढंग व्यंग रंग संग चंग तंग

किसे मिले कहां मिले क्यूं मिलें

बस! बहती जाना गंदगी में रंदकी में

जुड़ते जाना मिलते जाना

एक एक करके जीवन धारा में डूबते जाना

नहीं कोई सोचें नहीं कोई टोके नहीं कोई रोके

राम तेरी गंगा मैली हो गईं

कृष्ण तेरी यमुना दूरित हो गई

ऐसे देश धर्मवासी नहाते नहाते

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

स्व चरित्र का सिद्धांत

जो शिक्षित नहीं - जो ज्ञान नहीं

उन्हें क्या पता भगवान याने कौन?

उन्हें क्या पता धर्म याने क्या?

बस! बैठ जाओ धारा में जो निकट से गुज़रे

चाहे गंदे नाले में जाएं या दूषित पानी में जाएं

एक क्षण सोचना🙏 अगर समय मिलें तो🙏

“Vibrant Pushti “

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सूरदास " जो चरित्र 🙏

जन्म से अंधे थे, अर्थात वह देख नहीं पाते थे, अर्थात अंधेरा ही अंधेरा - केवल अमावस्या।

उनकी प्रतिभा से कहीं शास्त्रों ने लिखा है वह अंधे थे पर उनके पास दिव्य दृष्टि थी, वह चर्मचक्षुओं से नहीं पर आंतरिक दिव्य चक्षुओं से देखते थे। 🙏

धैर्य और गंभीरता से सोचें - जो व्यक्ति जन्म से अंधा वह कोई भी प्रकार से कैसे देख सकते है?

अरे!

मुकं करोती वाचालम् पंगु चले वटेमार्गु चाल

कृपा श्री संस्कार की जीवन दौड़े भक्ति ताल

गंभीरता से सोचें - इसका अर्थ - इसका रहस्य - इसका वैज्ञानिक स्पर्श - इसका भक्ति आक्रंद वेदना और ज्योत से ज्योत का कोई तो आलिंगन होगा कि उनके दिव्य चक्षुओं उनकी ही सिद्धता से देखते थे।

शास्त्रों तो किसीका लिखा हुआ है जो कल्पना भी हो सकता है - पर आंतर तत्त्व ज्ञान से चिंतन और मनन और मंथन और अध्ययन करने से अनुभूति हो।

आज़ तो अनेकों गुरुओं और कथाकारों है🙏

जो शायद कोई ज्योत जगाएं 🙏

स्व चिंतन अवश्य करें 🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण "

" कृष्ण " कारागृह में जन्म धरा! क्यूं?

भगवान है!

परमात्मा है!

ईश्वर है!

परब्रह्म है!

इसलिए। 🌷🙏🌷🙏🌷 नहीं नहीं।

बस वार्ता सुनते है - पढ़ते है - कहते है, पर समझते नहीं।

कोई कहेगा - तुम भगवान के बारे में ऐसा सोचते हो - बोलते हो - कहते हो - लिखते हो! तुम पापी हो - अधर्मी हो - अज्ञानी हो! तुम गुरुओं की अहवेलना करते हो! उनका अपमान करते हो! तुम दोषी हो! तुम्हें विशिष्ट ज्ञानीओं का अपमान करने का हक़ नहीं है!

ओहहह! इतना गुस्सा! बाप रे!

मित्र! कोई बात नहीं🙏

सत्य तो उत्कर्ष से ही निकलता है।

श्री कृष्ण ने कारागृह में जन्म क्यूं धरा?

क्यूंकि वह सत्य है इसलिए उन्होंने कारागृह में जन्म धरा🙏

वह सत्य है - मतलब!

वह सत्य है - इसलिए उन्होंने कारागृह में जन्म धरा🙏

अब आप सोचो 🙏 मेरा चिंतन भी विमर्श करेंगे।

वार्ता - सुनते कहते पढ़ते लिखते नहीं ज्ञान

तो कब करेंगे श्री कृष्ण का ध्यान 🙏

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti “

" राधे राधे - राधे राधे " ओहहह! कितनी आंत: प्रेम विरह गूंज! जो पुकार अपने प्रियतम परब्रह्म इष्टदेव श्री प्रभु के प्रांगण में अनेकों दर्शनार्थियों की व्याकुलता से उठ रही थी। हर कोई श्री प्रभु की एक झलक पाने के लिए तरस रहे थे - तडप रहे थे। अपनी आंतर विरह पुकार से कह रहे थे - नहीं करवाओ इंतजार - मेरे प्रियतम! मैं आई तेरे द्वार🙏

इतने में टहल पड़ी - दर्शन आरती के शमा खूल दर्शन खुल रहे है! सारे जिज्ञासुओं में उमंग विभोरता छा गई और हर कोई की नज़र द्वार पर टिकी हुई। द्वार खुला और एक उंची घोष उठी - श्री नाथजी बावा की जय! सब उमड़ पड़े - दौड़ पड़े अपने नयनों में बसाने - अपने मन को तृप्त करने - अपने तन को उर्जित करने और अपने जीवन को धन्य करने 🙏

बस! एक झलक!

जैसे झलक पाई!

हर कोई रंग रंग!

हर कोई उमंग उमंग!

हर कोई चंग चंग!

हर कोई दंग दंग!

हर एक के मुखड़े पर - एक ही भाष

" आनंद उमंग भयो जय कन्हैया लाल की

नैन मन हृदय मधुर भयो जय श्री वल्लभाचार्य जी "

मन मुग्ध - तन तृप्त - धन मुक्त और जन्म सुक्त दर्शन पा कर धीरे धीरे गर्भगृह से बाहर निकल रहे थे। अलौकिक आभा और अनोखी तृप्ता से अपने अपने स्थान पर प्रस्थान कर रहे थे।

बोलो कृष्ण कन्हैया लाल की जय!

बोलो बंसी वाले की जय!

गोवर्धन नाथ की जय!

गिरिराज धरण की जय!

श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय!

बोल श्री वल्लभाचार्य जी की जय!

दंडवत प्रणाम करते करते हुए

एक दूसरे को " जय श्री कृष्ण " करते चल पड़े 🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

याद कर ऐसी बातें

जो कटती थी रातें

नजर से दूर है

नयनरम्य से दूर नहीं

पास से दूर है

सांसों से दूर नहीं

तु कहीं भी हो

तु मेरे ख्याल से दूर नहीं

तेरी हर राह में मैं हूं

तेरे हर इरादे में मैं हूं

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कृष्ण कृष्ण कृष्ण
नैनों से गाउं कृष्ण
नज़रों से गाउं कृष्ण
पलकों से गाउं कृष्ण
झलक से गाउं कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण!

मन से गाउं कृष्ण
विचारों से गाउं कृष्ण
एकाग्रता से गाउं कृष्ण
मचलता से गाउं कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण!

मुखड़े से गाउं कृष्ण
अधरो से गाउं कृष्ण
स्वरों से गाउं कृष्ण
मौन से गाउं कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण!

प्रेम से गाउं कृष्ण
विरह से गाउं कृष्ण
मिलन से गाउं कृष्ण
ख्यालों से गाउं कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण!

अंग से गाउं कृष्ण
रंग से गाउं कृष्ण
तरंग से गाउं कृष्ण
संग से गाउं कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण!

कृष्ण कृष्ण कृष्ण!
कहीं न छूपाउं कहीं न बिसराउं
कभी न छुडाउं कभी न ठुकराउं
कहीं न बहलाउं कहीं न बिखराउं
कभी न तरसाउं कभी न तडपाउं
साथ साथ साथ साथ
हाथों में हाथ हाथ
पास पास पास पास
आतम में पात पात
कृष्ण कृष्ण कृष्ण!🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" स्त्री स्त्री स्त्री "

गहराई से डूबे डूबे और डूबे

युगों से युगों बह गए

स्त्री के लिए कोई न कोई अचंभित बात करते ही है

तत्वचिंतक, तत्वज्ञानी, ऋषियों, आचार्यों, उपासकों, आत्मजनों, धर्मज्ञों, विद्वानों, तपस्वियों, सिद्धिओं और प्रेमीओं।

आस्था, अवस्था, साधना, उपासना और आराधना में ऐसे वैसे और कैसे बस वासना, मोह, माया में ' काया '

काम काम काम नहीं कोई नाम

पता नहीं अंधे - अंधा - अज्ञान - अविद्या आदि व्याधि और उपाधि।

बस ऐसे ही अनाचार, लाचार, व्यभिचार, दूराचार, भ्रष्टाचार।

पता नहीं ऐसा क्यूं और क्या?

लालसा, अभिलाषा, विलासा,

जो भी ज्ञाता जो कहे तो भी विकार नष्ट न हो तो हम मनुष्य कैसे?

हर निष्कर्ष में उन्हें साधन बनाया और निर्दोष - निर्मोह - ब्रह्मचर्य कौन?

नहीं नहीं नहीं नहीं!

श्री कृष्ण ने राधा की वंदना की

श्री कृष्ण ने राधा को अपनी आह्लादिनी उर्जा ज्ञाना।

गंगा यमुना सरस्वती को हमने जीवन उर्जा स्रोत समझा।

तो सामान्यतः ऐसा क्यूं?

क्रमशः

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृष्ण बोलो 🙏

राम बोलो 🙏

अपने मान्यत श्री प्रभु का स्मरण करो

तो भी हैरान - परेशान - दु:खी - दरिद्र - हिन - धूर्त - पापी - दुष्ट - विधर्मी - रोगी - अज्ञानी - निम्न - दोषी - आदि आदि आदि 🙏

नहीं नहीं नहीं नहीं!

ग़लत है

असंवैधानिक है

झूठ है

अनैतिक है

असैद्धान्तिक है

ओहहह!

श्री प्रभु का स्मरण करें

श्री प्रभु की सेवा करें

श्री प्रभु का मार्ग पर चलें

श्री प्रभु के नियमन पर चलें

अरे कौनसा युग! संजोग! समय! परिस्थिति!

अंधश्रद्धा में डूबे वह कभी नहीं बाहर निकले!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूर्य का भ्रमण परिवर्तन

धरती का मचलना

सागर का उछलना

हवा का थरथराना

आकाश का रंग बदलना

संकेत है हमें हममें भी परिवर्तन करना🙏

हमारा परिवर्तन

हमारे विचार में

हमारे नीति में

हमारे निर्णय में

हमारे संगत में

हमारे द्रष्टि में

हमारे स्वर में

हमारे सुनने में

हमारे क़दम में

हमारे रंग में

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हां! जन्म पाया है तो परिवर्तन प्रमाणिक हो

हां! जीवन पाया है तो परिवर्तन पवित्र हो

हां! निर्णय शक्ति पायी है तो परिवर्तन उत्तम हो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

कुंभ का यही संदेश है 🔥

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

“Vibrant Pushti “

“जय श्री कृष्ण “🌷🙏🌷

" महाकुंभ " सनातन संस्कृति का अनोखा सागर

श्री शंकराचार्यजी ने अपनी विद्धता से इतनी गहरी, सुशिक्षित, संस्कार विद्या का अनुष्ठान किया है कि ब्रह्मांड की कोई अज्ञानता, अंधश्रद्धा, धूर्तता, पाखंड, और निष्क्रियता जगत के जीवों पर पड़े🙏

महाकुंभ विद्या का ऐसा अनुष्ठान सागर है जिसमें हर जीव डूबकी लगाकर अपने को सरस्वती, गिरि, पर्वत, आश्रम, निरंजन आदि कहीं दिक्षा से शिशिक्षित उपाधि पा कर सारे अज्ञानी, अंधकारी, अशिक्षित जीवों को वैज्ञानिक सिद्धांतों आधारित शिशिक्षित कर के - दोष, पाप, अहंकार, अभिमान, राग, द्वेष, ऊंच-नीच की परंपरा को समाप्त करता है। 🙏

यही तो महाकुंभ की विशिष्टता है, सत्यता है, नग्नता है, आध्यात्मिकता है। 🙏

हम अनेकों बार कहते फिरते है - हमारे ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, आचार्यों और वैदिकों के पास अदभुत ज्ञान था, आज पाश्चात्य वैज्ञानिकों हमारे सिद्धान्तों आधारित ही संशोधन करते है, और हम!

अज्ञानी, अंधे हो कर सब कुछ गंवाते अपने आपको अंधश्रद्धा की गहरी खाइयों में डूबोते अपनी प्रकृति के साथ ख़ुद को भी बर्बाद करते करते अपने वंशीय जीवन को मूर्ख बनाते छोड़ देते है। 🙏

सोच लो🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

घर घर सुनेंगे - चौरे चबूतरे सुनेंगे
मेरे पूर्वज यह थे - मेरे धर्म गुरु यह थे
उन्होंने ऐसा किया तो हम ऐसे है
उन्होंने ऐसा समझाया तो हम ऐसे है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
अच्छा तुम पढ़ें लिखे और स्नातक हुए
तुम्हें सही ग़लत की समझ है
क्यूंकि बार बार बोलते फिरते हो
ऐसा किया होता तो!
ऐसा करते तो!
शाबाश! कितना अच्छे विचार पाएं है
अवश्य वह ऐसा करे - हिम्मत धरे
अपने आपको सत्य और सिद्धांत पर खड़ा होता करे
अवश्य हममें योग्यता आएगी
अवश्य हम विश्वास से जीवन घडतर करेंगे
अवश्य हम सिद्धांतों की ओर गति करेंगे
अवश्य हम अनेकों संशोधनों से जीवन चरित्र उत्तम बनाएंगे
हम स्वावलंबी, बुद्धिजीवी भारत का निर्माण करेंगे
राम कृष्ण बुद्ध जैसे होंगे तो घर घर आनंद परमानंद
मन शुद्ध जीवन पवित्र
तन मेहनती धन निर्मल
न रोग लगेगा न भोग आएगा
प्रवृत्ति विवेकी प्रकृति महकी
सारा जीवन सुख खुश हाल
चलो कदम बढ़ाएं अपनी विद्धता का
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

स्नान - ब्रह्ममुहुर्त स्नान - कुंभ स्नान - यात्रा स्नान ऐसे कितने स्नान जो हमारी मान्यता से, धार्मिक ऋढिचुस्तता से और आद्यात्मिक स्नान से यह स्नान सर्वोच्च स्नान है🙏
कभी यह स्नान का स्मरण करते करते जीवन का यह स्नान का अमृत जो हमने पिया है वह अपने माता पिता को कभी ऐसा अमृत स्नान किया है?

यह स्नान अनेकों कुंभ स्नान से सर्वोत्तम है🙏

"Vibrant Pushti ".

"जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

भगवान 🙏

ईश्वर 🙏

श्री प्रभु 🙏

परब्रह्म 🙏

परमात्मा 🙏

विधाता 🙏

विश्वात्मा 🙏

सर्वात्मा 🙏

पूर्णात्मा 🙏

प्रेमात्मा 🙏

परमअंश 🙏

कितना अदभूत जो हमारे लिए कण कण में - रज रज में - बूंद बूंद में - तरंग तरंग में - रस रस में उर्जा उर्जा में - ज्योत ज्योत में बस कर हर तरह का ख्याल करे!

कितना अनोखा अखंड प्रेमी सुरक्षित नाता 🙏

है कोई! एक अकेला मधुर बंसी बजाता

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ખૂબ અગત્ય નું વર્તમાન જીવન 🙏
એક નાનું ગામડું આશરે ૧૦૦ માણસો ની વસ્તી. એટલે આશરે ત્રીસ કુટુંબ વ્યવસાય ખેતી અને પશુપાલન નો. આ ત્રીસ કુટુંબ માં એક કુટુંબ એવું કે માતા પિતા દિવસે ખેતી કરે અને સાંજે ગામ નાં મંદિરે ભણવા જાય. કારણકે જ્યારે જ્યારે કોઈ પૂજારી યાત્રાળુ હોય તો તેને મંદિર માં ઉતારો આપી જેટલા દિવસ તે ત્યાં રહે અને જે સત્સંગ કે પૂજા પાઠ કરે અને જે કંઈ જ્ઞાન આપે તે ગામવાસી ભણે. શહેર ગામથી ખૂબ દૂર એટલે ન કોઈ વ્યવસ્થા. ગામવાસી જે ઉગાડે તેના પર નિર્વાહ.
એક દિવસ એક પૂજારી ત્યાં આવી પહોંચ્યો અને તેને જોયું કે આ ગામ બિલકુલ નિર્મળ અને સ્વચ્છ છે. ગામવાસીઓ એ તેમને મંદિર માં ઉતારો આપ્યો અને રોજ સાંજે ગામવાસીઓ ને શિક્ષા પ્રદાન કરે. ગામનાં જે લોકો અને બાળકો શિક્ષા પામે અને જગત જાણે.
એક દિવસ એક કુટુંબ ની નાની દીકરી એ પૂજારી ને તેના જિજ્ઞાસા પ્રશ્નો પૂછ્યા અને પૂજારીજી એ યોગ્ય જવાબ આપ્યા. જે જવાબો થી દરેક ગામવાસી ન્યાય અને સન્માન પૂર્વક જીવન જીવવા નો પ્રયત્ન કરતા.
સમય વિત્યો અને તે દીકરી ૧૦ વર્ષ ની ઉંમર પર પહોંચી ત્યારે પૂજારીજી એ તે કુટુંબ નાં પિતા ને કહ્યું - આ દીકરી ને કોઈ ઉચ્ચ શિક્ષણ આપવા શહેર મોકલો પિતા કહે - શહેર એટલે શું? ઉચ્ચ શિક્ષણ એટલે શું? અમને સમજ નથી.
પૂજારીજી એ તેઓને યોગ્ય માર્ગદર્શન આપ્યું અને નિશ્ચિંત કર્યા કે હું તમારી અને શહેર નાં શિક્ષણ થી જોડાયેલો રહીશ.
અને તે દીકરી ને શહેર માં શિક્ષણ પ્રવેશ મેળવ્યો.
આ વાર્તા માં આગળ કહીશું પણ
૧. આપણે નાના હતા ત્યારે આપણે કેવા હતા
૨. આપણાં માતાપિતા આપણને કેવીરીતે ભણાવતા હતા
૩. આપણે ભણીને શું શીખ્યા અને શું બનવા વિચારેલું.
આજે જો પરણ્યા પછી આપણે આપણા સમય ને
૧. મોબાઈલ જોવા માં
૨. આળસુ બની ને બેસી રહેવા માં
૩. ઘર માં કામ વાળી રાખી ને મોજ મસ્તી કરવામાં
૪. પતિ સાથે સિનેમા અને હોટેલ માં જમવા માં
૫. કોઈ નાનું મોટું કામ કરીને મોટી ધાડ મારવા માં
૬. પતિ મહેનત કર્યા કરે અને આપણે હૈસે દુલ્લા કરીએ
૭. આજે આ રીતે સમાજ ઉભો થઈ રહ્યો છે
શું આપણને લાગતું નથી કે આપણે આપણા જીવનને ક્યાં લઈ જઈ રહ્યા છે!
સમાજ આંધળો છે આપણે નહીં
આમતેમ વાતો કરીને આપણે જ આપણાં પગ પર કુહાડી મારીએ છીએ જે આપણાં બાળકો નાં ભવિષ્ય થી જોઈ રહ્યા છીએ.
આપણને આપણા માતાપિતા એ આ પરિસ્તિથી લાવવા ઉછેર્યા છે? ના
તેઓએ અમૂલ્ય સ્વપ્ના જોઈને પોતાના બાળકોને સીંચ્યા છે. જો આજે તેઓની સામે જ આવા દ્રશ્યો સર્જાય તો તે માતાપિતા ને શું અસર થાય તે વિચાર્યું છે?
તમારો સમય અલગ હતો અમારો સમય અલગ છે!
એક અજુગતો બનાવ આપણને એવી પરિસ્થિતિમાં મૂકી દેશે કે જીવનભર પસ્તાવો.
તે દીકરી શહેર માં આવી ને એને એ કુટુંબ, ગામ અને દેશને ગૌરવ અપાવ્યું.
આ જ સ્વપ્ન દરેક માતાપિતા જોતા હોય છે.
જય શ્રી રાધે! જય શ્રી કૃષ્ણ! 🌷 🙏 🌷
આગળ પુત્ર માટે 🙏

लहू का बोटल ले कर मैं अपनी त्वरित और बैचैन गति से मेरी गाड़ी आगे बढ़ा रहा था, इतने में चौराहा आया - रेड सिग्नल था, मैंने गाड़ी खड़ी कर दी, और इंतजार करने लगा ग्रीन सिग्नल का। इतने में एक स्कूटर वाला आगे आ कर खड़ा हो गया, ग्रीन सिग्नल हुआ और हम गाड़ी आगे बढ़ा रहे थे पर वह चालक का स्कूटर चल नहीं रहा था, वह गाड़ी की कीक मारता रहा और आसपास देख कर हंसता हंसता अपनी क्रिया में लगा था, हम सब होर्न की छड़ी लगाकर उन्हें साइड पर हटाने की कोशिश कर रहे थे पर वह चालक नहीं नहीं हटा और सिग्नल रेड हो गया, पुलिस आई उन्हें साइड किया और जैसे ग्रीन सिग्नल हुआ और हमें आगे बढ़ाया तब तक पांच मिनट हो चुकी थी, ऐसे वैसे स्पीड बढ़ा कर अस्पताल पहुंचा - डाक्टर बोले जल्दी जल्दी जल्दी! हम जैसे रूम में पहुंचे तो वह पेशंट ने आखिरी सांस ली और चल बसा। डाक्टर ने कहा आप एक मिनट लेट आएं।
मैं बाजु में खड़े हो कर अपने आपको कोसने लगा। यह क्या हो गया!
संभलता संभलता वह स्कूटर वाले को बहुत कोसा!
एक मिनट!
बस यही हादसा किसको नहीं होता होगा!
हर चौराहे पर ऐसी घटनाएं
हर रास्ते पर इधर-उधर चलना
हर व्हीकल इधर-उधर बिना सोचे खड़ी करना
एक मिनट एक मिनट - अभी निकला
अरे अभी कोई नहीं है - ऐसा ही पार्किंग
मैं मेरी जगह खड़ा हूं देखता हूं कौन मुझे हटाएं
न कोई नीति नियम - बस हर कोई अपनी मर्जी से
हर रास्ते - चौराहे - गली गली ऐसा ऐसा ऐसा
हर कोई एक दूसरे को कोसे पर न कोई शिस्त में रहें
बस ऐसे ही चलता - चलता रहे - चलता रहेंगे तो
अगर किसीका कोई मरे - हमें क्या!
नहीं सुधरे - नहीं सुधरेंगे - नहीं सुधारे
कैसा जीवन! कैसे हम! कैसे हम वासी!
स्वछंद - स्वतंत्र - स्वावलंबी!
नहीं नहीं नहीं!
कोई नहीं नियम का पालन करें तो मैं क्यूं करूं
नहीं नहीं नहीं!
कुछ करें - कुछ तो करना पड़ेगा
🌷🙏🌷
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना गहरा और अनोखा नाता है श्री कृष्ण से

पलकें उठें तो " जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पलकें झुकें तो " श्री कृष्ण: शरणं मम 🙏

नैनों में बसे तो " राधे राधे " 🌷🌷

नैनों में रमे तो " गोविंद गोपाल " 🙏🌷

अधरो से गुनगुने तो " माधव मोहन " 🌷🙏

अधरो से चुमे तो " लड्डु गोपाल " 🌷🙏🌷

कानों में गूंजे तो " कृष्ण कृष्ण " 🙏🌷🙏

कानों में सूरे तो " राधा कृष्ण " 🌷🙏🌷

हाथ से बजे तो " विठ्ठल विठ्ठल " 🙏🙏

हाथ से उठें तो " गोविंदा गोविंदा " 🌷🌷

जय जगन्नाथ! जय जगन्नाथ! 🌷🙏🌷

अंग से स्पर्शे तो " श्याम श्याम श्याम " 🌷

अंग में बसे तो " कान्हा कान्हा " 🌷🙏🌷

कान्हा कान्हा! बसे है तेरे द्वार तु ले चल गोकुल धाम

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

* अनुभव बार बार दोहराना

* मैं अकेला हूं

यह कभी नहीं समझना - जिसने जगत रचा है वह भी अकेला है और जब भी जो पुरुषार्थ करता है - बिना दोहराएं - अकेला अकेला 🙏🌷🙏

हम अंधे और मंदबुद्धि तो है नहीं जो बार बार अंधश्रद्धा और मूर्खता में रहे।

* कभी शर्मिंदा न होना

सिद्धांत से जीएं तो कौन हमें क्या झुकाएं

* न कभी हटना - स्थिर रहना

बार बार कोई ऐसा करें - ऐसा कहें तो भी न डगना - क्यूंकि हम तो सिद्धांत से है - सत्य से है।

🙏🙏🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे जगत के परम वैष्णव 🙏
हे मेरे पूज्य माता पिता 🙏
हे जगत आचार्य श्री वल्लभ 🙏
हे जगत धात्री श्री यमुना 🙏
हे जगत पालनहार श्री गोवर्धन नाथजी🙏
आपकी जय जय जय हो 🙏
आपके चरणों में
आपका सेवक का दंडवत प्रणाम 🙏
ख्याल से रक्षण किया 🙏
एक जीव को सुबोध शिक्षण दिया 🙏
एक जीव को वात्सल्य स्पर्श सींचा 🙏
सत्य तो यह है कि जहां जहां जो ककक्षा में हो
यह आंचल 🙏
यह आंगन 🙏
दिशा दशा का मार्गदर्शन से कदम बढ़ाया
अनेकों अनेक जीवात्मा जीवन समझाया
भाई बहन कुटुंब संबंधी ज्ञात जात समाया
पत्नी पुत्री पुत्र पुत्रवधू पौत्री पौत्र बसाया
सुख दुःख योग संयोग आनंद विभोर जताया
द्रष्टि द्रष्टि धुमाएं हर दिशा नजराया
स्वर स्वर सुनते सुनते ज्ञान गंगा बहाया
अक्षर अक्षर पढ़ते लिखते शास्त्र उभाया
क़दम क़दम चलते संसार पार्जन सहाया
सोक्रेटीस शंकराचार्य वल्लभाचार्य ध्याया
जीवन क्षण क्षण रज रज रस रस पीलाया
जो भी हूं दास आपका पुरुषार्थ से दासत्व जगाउं
शरण शरण जगत संसार के अंधकार मिटाउं
आपके दास का नमन स्वीकार करो 🙏
🌷🙏🌷🙏🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम मनुष्य और इनमें एक स्त्री - एक पुरुष 🙏
मां - पिता, पत्नी - पुत्र, बेटी - बेटा, पौत्री - पौत्र।
आत्मनिरिक्षण, आत्मचिंतन, आत्मअनुभूति, से ऐसा है की संसार जीवन जीते जीते हमने स्त्री और पुरुष का भेद करके हम अपने आपको कहां कहां ले गए और क्या क्या करते है और कहां कहां तक पहुंचे और क्या क्या करते रहते है!
अकेले बैठकर अपना खुद का निरीक्षण करना - आप स्त्री हो तो - आप पुरुष हो तो 🙏
मैं मेरी माता से
मुझसे मेरी पुत्री
मेरी पुत्री के विवाह से पौत्री
स्त्री स्त्री स्त्री 🙏
मैं मेरी माता से - मैं पुत्र
मेरा विवाह से - मेरी पत्नी से पुत्री
मेरी पुत्री का विवाह से - मेरी पौत्री
अवश्य 👍
अति गहराई से सोचें तो
हर स्त्री तत्त्व को अपने पुरुष तत्त्व से ही अधिक लगाव रहता है 🙏
मां को पुत्र से
पत्नी को पति से
बेटी को पिता से
पौत्री को दादा से
क्यूं?
संसार का सत्य 🙏
संसार की विशुद्धता 🙏
संसार का वैराग्य 🙏
संसार की तपस्या 🙏
संसार की पवित्रता 🙏
संसार का प्रेम 🙏
संसार की वात्सल्यता 🙏
संसार की योग्यता 🙏
संसार की पूर्णता 🙏
संसार की आध्यात्मिकता 🙏
संसार का सत्य 🙏
संसार का पुरुषार्थ 🙏
संसार का परमात्मा 🙏
संसार का विश्वात्मा 🙏 यहां से आविर्भाव - पार्दुभाव - यदाविर्भाव - सायुज्य भाव उत्पन्न होते है।
यही हमारी पुरुषोत्तमता है 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वृंदावन की गलियों से एक प्रेमी कहीं जा रहा था, एक वादा निभाने - एक उमंग लूटाने - एक रंग बिखराने। हंसता मुखड़ा, अंग उछालता, क़दम से क़दम कुदता दौड़ता हुआ। इतने में उन्हें एक गूंज सुनाई दी - हे बांके! वह ठहर गया, आसपास नज़र करने लगा पर कोई उनकी पहचान वाला या उन्हें पुकारने वाला नज़र नहीं आया। वह कदम बढ़ाने लगा, थोड़े ही दूर पहुंचा तो फिर गूंज आई - बांके! उन्होंने तुरंत वह गूंज की दिशा में नज़र दौड़ाई पर कोई नज़र नहीं आया। अब वह अपने कदम धीरे धीरे बढ़ाएं चलने लगा। थोड़ी ही देर बाद फिर गूंज आई - बांके! तुरंत नज़र घुमाई पर सब अपनी मस्ती में आ जा रहे थे, कोई उन्हें जानने वाला या पुकारने वाला नज़र में नहीं आया।

वह सोचते सोचते आगे बढ़ ही रहा था और गूंज आई - बांके! तुरंत उनकी नजर छप्पर पर बैठा - बंदर पर पहुंचीं, वह बंदर हंस रहा था, वह उन्हें देखकर हंसते हंसते चल पड़ा। थोड़े दुर पहुंचा तो फिर गूंज आई - बांके! वह रुक गया और चारों ओर देखा तो न कोई था वह सिर्फ अकेला ही वह गली में खड़ा था, वह असमंजस में आ गया, अरे मैं अकेला! कहां गए सब? घर के दरवाजे बंध, न कोई चहल पहल! मैं अकेला कैसे हो गया? वह सहमा गया और चारों ओर नज़र दौड़ाई और दौड़ा, चौराहे पर पहुंचा कोई नहीं, बाज़ार बंध, न कोई निवासी नज़र आया। अकेला - अकेला - बिलकुल अकेला। उन्होंने तुरंत अपने कदमों की गति बढ़ाई - चारों ओर नज़र फिराई और चलने लगा, इतने में गूंज आई - बांके!

वह ठहर गया, अपने आपको स्थिर कर दिया, एक स्पर्श पाया - बांके! मैं कबसे पुकारती हूं और तु दौड़ा चला जा रहा है! कितनी देर से मैं तुम्हारा इंतज़ार करती हूं! उन्होंने चारों ओर नज़र फिराई पर वह केवल वह स्वर सुन रहा था और स्पर्श पी रहा था।

बांके! क्या कर रहे हो? मुझे पहचाना नहीं? क्यूं यहां रुक गए, चलो चलें यमुना के तीर। वह चल पड़ा, कोई उनका हाथ पकड़े चला रहा था। थोड़े ही दूर यमुना का तट था। चलते चलते वही स्थली पर पहुंचे जहां उन्हें पहुंचना था। वह रुक गया - न कोई स्पर्श था, न कोई गूंज थी, अकेला अकेला खड़ा था किसीका इंतजार करता करता।

काफी समय से वह नज़र फिराता - घुमाता यमुना नदी के नीर तरासता खड़ा रहा। उन्होंने अपने खेस में बांधी हुई पैजनीया निकाली और धीरे धीरे नीचे बैठे वह पैजनीया पहनाने की चेष्टा करने लगा, जैसे पैजनीया बंधी वह पैजनीया छम छम ने लगी और वह बांका नाचने लगा।

दोनों स्वरूप प्रकट हो गया - युगल स्वरूप 🌷

अपनी धुन में मगन यमुना के नीर में समा गए। 🌷 🙏 🌷

राधा बांके लाल की जय 🌷 🙏 🌷

यदाविर्भाव आनंद आविर्भवति सर्वत: ।।

तिरोभवन्ति सन्तापास् तं श्रये गोकुलेश्वरम् ।।

श्री वल्लभाचार्य की अनुभूति 🙏

श्री वल्लभाचार्य का प्रज्ञान 🙏

श्री वल्लभाचार्य का वात्सल्य 🙏

अखंड भूमंडलाचार्य वह ऐसे पार्दुभाव हुए जो जीवन का हर काल को यदाविर्भाव आनंद की उपाधि में अनुभूत पाएं 🙏

जो श्री कृष्ण चरित्र से पाया वही उन्होंने ने अपनी विद्व प्रज्ञानता जगत के पुष्टि जीवों के लिए सर्वत: आविर्भव किया 🙏

पुष्टि जीवों प्रत्ये उनका अनोखा वात्सल्य🙏

पुष्टि जीवों में तिरोभाव जागृत करके संसार में ही बसते जीते श्री गोकुलेश्वर को पाया जा सकता है। 🙏

अनोखा प्रमेयात्मक गणित स्व चरित्र से प्रमाणित किया और जहां जहां पहुंचें वहां वहां उन्होंने सिद्ध किया।

यह अनोखा अखंड और अलौकिक आनंद विभोर पराकाष्ठा है जो श्री कृष्ण ने गोपियों में पाईं 🙏

हे श्री वल्लभाचार्य🙏 आपनी कृपा यह दास प्रत्ये बनी रहे 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

फूटपाथ पर चाय पी रहा था, मेरे साथ दूसरे भी कहीं लोग भी चाय पी रहे थे। इतने में कोने पर खड़े दो मित्रों में से एक मित्र ने कहा - मित्र! यार आजकल कुंभ स्नान की चर्चा बहुत है, तो चलो चलें! उदास चेहरे मित्र बोला - यार! इच्छा तो बहुत है पर परिस्थिति भी बहुत सर पर है, मैं तो हररोज उनका स्मरण करके स्नान करता हूं और धन्य धन्य हो जाता हूं।
पहला मित्र बोला - यह तो चलता रहता है, ऐसा मौका सदी में एक बार आता है। मैं तो अपना मन बना चुका हूं, और आखरी चुस्की लेते वह दोनों चल पड़े अपने रोजिंदा कार्य में, मैं भी चल पड़ा।
कहीं दिन गुज़रे। मैं अपनी चाय की चुस्की में मस्त था, इतने में मेरे कान में पास में बात करने वाले मित्रों में से आवाज़ सुनी - मित्र कैसी रही तेरी कुंभ स्नान यात्रा?
वह मित्र बोला - मित्र! गजब का संस्कृति विद्या सागर है! दोस्त! आध्यात्मिकता का अनोखा संगम है! आत्मा-परमात्मा-आनंद-परमानंद-संसार-वैराग्य-तपस्या-प्राण-जीव-पंचतत्वों की अदभुत पहचान अर्थात - कुंभ स्नान। ओहहह! तु पवित्र और शुद्ध हो कर आया 🙏। हंसते मुखड़े दोनों चल पड़े अपने रास्ते। थोड़े दिन गए आज़ फिर वह मेरी नज़र में आएं, मैंने सोचा वह मित्र भी कुंभ स्नान करके आया होगा। इतने में मैंने सुना - मित्र! यार! तु कहां था? थोड़े दिनों से तु गायब था? आज ही मिलें हम! कुंभ स्नान किया हुआ मित्र ने पूछा।
हां मित्र! जिस दिन तु कुंभ स्नान गया था तब एक ऐसी घटना घटी मैं उनमें कार्यशील था।
अचंभित से कुंभ मित्र बोला - क्या!
हां यार! थोड़े दिन पहले मैं घर से निकला और एक काम से जा रहा था, थोड़े दूर ही पहुंचा था इतने में एक बुज़ुर्ग दादा दादी रास्ता क्रोस कर रहे थे इतने में एक स्पीड से स्कूटर ने दोनों को टक्कर मारे भाग गया और वह बेहाल में नीचे पड़े थे, मैं फटके उन दोनों को मेरी गाड़ी में बिठाकर होस्पिटल ले गया, तुरंत सारवार हुइ और जब-तक वह स्वस्थ हुए तब-तक उनकी सेवा में था, आज उन्हें छुट्टी मिलेगी।
कुंभ मित्र बोला - ओहहह! तो उस दिन क्यूं नहीं बताया जब मैं कुंभ स्नान से लौटा था?
यार! उस दिन मैं तेरी कुंभ स्नान की बातों में इतना मग्न हो गया था की मैं यह कहना भूल गया।
चल कोई बात नहीं - चल मैं भी तेरे साथ अस्पताल चलता हूं और वह दादा-दादी को मिलूं!
दोनों चल पड़े, मुझे भी मन हुआ वह दादा-दादी को मिलने का - मैं भी उनके पीछे पीछे।
अस्पताल पहुंचा तो देखा - वह दादा-दादी इंतजार कर रहे थे। नज़दीक पहुंचते ही वह कुंभ स्नान मित्र बोला - अरे साधु महात्मा आप! अरे मैंने आप दोनों का हाथ पकड़ कर संगम में डुबकी लगाई थी! आप यहां कैसे? तुरंत दंडवत प्रणाम किया🙏
सब अचंभित हो गए।
साधु महात्मा आशीर्वाद देते बोले - बेटा! जब तु हमें स्नान करवा रहा था तब तुने तेरा यह परम मित्र का स्मरण करते करते डुबकी लगाई तब ही मैं अपनी सिद्धि से तेरे चेहरे पर जो मित्रता का भाव देखकर तेरे मित्र के रास्ते पर जा पहुंचा और उन्हें भी कुंभ स्नान का स्पर्श मिलें। दोनों मित्रों वह साधु महात्मा के चरणों में गिरकर आशीर्वाद पाया और गले लगकर अपने मित्रता के अश्रु संगम में डुबकी लगाएं एक हो गए।
मैं भी त्वरित उनमें शामिल हो कर साधु महात्मा के चरण स्पर्श किए और दोनों मित्रों को गले लगकर कुंभ स्नान के संगम में डुबकी लगाई।
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कलयुग - कलयुग का अर्थ जिस तरह से हिन्दू शास्त्रों करते है - कहीं कहीं अनेकों आचार्य करते है पर यही समय यही काल में श्री शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती जो जगन्नाथ पुरी के पीठाधीश्वर है, उन्हें कहीओं ने जिजिज्ञासा प्रश्न किया था और हर बार उनका अध्ययन, चिंतन और प्प्रज्ञान वर्धक उत्तर सही दिशा सूचक - मार्गदर्शक और सैद्धांतिक सत्य पूरक है।

ऐसे ही आज के श्री महामंडलेश्वर श्री अवधेशानंद गिरि जी भी कलयुग का सैद्धांतिक सत्य रूप हमें संस्कार दिदिक्षित करते है।

हम भी आज इतनी कक्षा तक तो अवश्य पहुंचे है कि सत्य - सिद्धांत और व्यवहार की संस्कारिता क्या है! हम और ऐसे जीव जो सदा अंधकार, अज्ञान और अंधश्रद्धा में ही खुद डूबे और अपने वंशजों को भी डूबोये।

नहीं नहीं 🌷 🙏 🌷

मैं एक रॉमन किताब पढ़ रहा था - उनमें समझा की सदियों पहले भी सत्य और सिद्धांत की खातिर खुद को बलि चढ़ा देते थे या खुद के कुटुंब और सामाजिक अनैतिकता में मार देते थे।

सोक्रेटिस, एरिस्टोटल आदि क्या थे?

हिन्दू आचार्यों में श्री शंकराचार्य जी, श्री रामानुजाचार्य जी और कहीं ऋषियों मुनियों आदि और हम आज यह कलयुग के अर्थ अनर्थो में! 🙏

हम स्वयं सत्याग्रही - स्वावलंबी - सत्यनिष्ठ - सैद्धांतिक - सत्यआचरणी - तो कौन-सा कष्ट, कौनसे संजोग, कौनसी परिस्थिति, कौनसे दोष, कौनसी तकलीफ-मुसिबत, पाप, द्रोह, विश्वासघात, चोरी, घमंड, अहंकार, अविद्या आधि व्याधि और उपाधि🙏

हम से है जमाना तो कैसा है हमारा जीवन!

🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

मेरा मन - मेरा तन - मेरा धन - मेरा जीवन

अपने आपको ब्राह्मण बनाओ

अपने आपको क्षत्रिय बनाओ

अपने आपको वैश्य बनाओ

अपने आपको क्षुद्र बनाओ

ब्राह्मण अर्थात - विद्याधर बनना है - संस्कार संयमी होना है

क्षत्रिय अर्थात - सिपाही बनना है - वीर निड़र बलिदानी बनना है

वैश्य अर्थात - व्यवहारिक बनना है - नैतिक गुणों सभर बनना है

क्षुद्र अर्थात - पवित्र बनना है - शुद्ध सेवक बनना है

जन्म से वर्ण कुल जो हो पर अपने मन कर्म वचन व्यवहार से यह चारों धर्म स्व में हो तो ही हम मनुष्य 🙏

श्री राम चारों वर्ण में जीये 👍

श्री कृष्ण चारों वर्ण में जीये 👍

श्री बुद्ध चारों वर्ण में जीये 👍

अहंकार अभिमान राग द्वेष ऊंच-नीच मुक्त

मन तन धन जीवन को टटोलें अगर विद्याधर हो

मन तन धन जीवन को टटोलें अगर सुरक्षक हो

मन तन धन जीवन को टटोलें अगर सुशील हो

मन तन धन जीवन को टटोलें अगर सेवक हो

इनमें से कोई नहीं तो वह धूर्त - पापी - दुष्ट - अधर्मी - संशयी - दुराचारी - लंपट - निर्लज्ज - मूर्ख - दोषी - द्रोही है।

यही स्व पहचान, चरित्र, पुरुषार्थ है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राम तेरी गंगा मैली हो गईं पापी ओं के पाप धोते धोते 🙏 गंगा जाओ यमुना जाओ जाओ अयोध्या मथुरा 🙏 पर यह सदा हो कर जाना - मैं पवित्र तो मेरी संस्कृति पवित्र 🙏

एक व्यक्ति हररोज मंदिर मंगला आरती का दर्शन कर गली के बाहर चाय की रेकडी पर चाय की चुस्की लगाता कहीं दर्शनार्थियों के साथ गपशप करता अपने काम में लग जाता।

दर्शनार्थियों की गपशप में वह सदा आकुल व्याकुल हो उठता क्यूंकि गपशप में शामिल ज्यादातर दर्शनार्थियों ठठ्ठा मश्करी और असभ्य वार्तालाप करते रहते और वह व्यक्ति टोकता रहता की सुबह श्री प्रभु के दर्शन करे और बाहर आकर असभ्यता!

पर कोई नहीं सुनता और उपर से वह व्यक्ति को और चीड़ चिड़ाते, सब हंसते खुश होते, चाय की चुस्की लेते मोज मस्ती करके बिखर जाते। हररोज का यह क्रम।

एक दिन ऐसा ही ठठ्ठा मश्करी चल रही थी और चाय की महफ़िल चल रही थी वह व्यक्ति के साथ उनका एक मित्र उनके साथ आया था, वह यह देखकर और सुनकर ज़ोर ज़ोर से हंसने लगा, तब वही मंडली भी खुशखुशाल हो गई और फिर तो

थोड़ी देर में चाय की चुस्की पूरी हो चुकी थी और बिखरने की तैयारी कर रहे थे तब वह व्यक्ति का मित्र बोला - मित्रों! आप लोग भाग्यशाली है कि ऐसी मजाक मस्ती कर लेते हो! तब वह व्यक्ति ने टोका और कहा - अरे मित्र! तु इनकी बातों में नहीं आना🙏 वह मित्र बोला - दोस्त! इनके पास जो है वही वह जता रहे है - सबको बांट रहे है! इनसे और क्या उम्मीद कर सकते है! वह जैसे है ऐसे ही जीएंगे! उनका जीवन चरित्र ऐसा ही है, इसलिए तो वह जहां जहां जाते है यही प्रकृति से जीते है इसलिए तो उनका कुटुंब, मित्र गण ऐसे ही होगा।

तुम श्री प्रभु के पास जाते हो तो श्री प्रभु तुम्हें वहीं देंगे जिसका तुम सही में उपयोग और उपभोग करो। यह सबको ठठ्ठा मश्करी और असभ्य वार्तालाप मिलता है चाहे वह योग्यता से विनंती करे या प्रार्थना करे नमन करे या दंडवत प्रणाम करे उन्हें यही मिलेगा जैसे वह है!

इसलिए स्व को असमंजस या नफ़रत से नहीं देखना🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"राधे राधे " 🌷 🌷 🌷
नयनन में राधे राधे🌷
द्रष्टि बिंद में राधे राधे🌷
नजर नज़र में राधे राधे🌷
आंतर चक्षु में राधे राधे🌷
बाह्य चक्षु में राधे राधे🌷
दर्शन में राधे राधे🌷
दर्पण में राधे राधे🌷
मनन में राधे राधे🌷
अंतर मन में राधे राधे🌷
बाह्य मन में राधे राधे🌷
चित्त में राधे राधे🌷
चिंतन में राधे राधे🌷
अध्ययन में राधे राधे🌷
तपन में राधे राधे🌷
तन में राधे राधे🌷
अंग अंग में राधे राधे🌷
तर्पण में राधे राधे🌷
स्मरण में राधे राधे🌷
अर्पण में राधे राधे🌷
वर्तन में राधे राधे🌷
नमन में राधे राधे🌷
दंडवत में राधे राधे🌷
वंदन में राधे राधे🌷
प्रणाम में राधे राधे🌷
आचरण में राधे राधे🌷
वरण में राधे राधे🌷
शरण में राधे राधे🌷
करण में राधे राधे🌷
तरण में राधे राधे🌷
बोलो वृंदावन बिहारी लाल की जय🙏
राधा रमण लाल की जय🙏
बांके बिहारी लाल की जय🙏
बरसाने वाली प्रेम विरहनी की जय🙏
व्रज की प्रेम ज्योत की जय🙏
कुंज बिहारी लाल की जय🙏
चरणों में राधे राधे🌷
जय जय श्री राधे🙏
“Vibrant Pushti “
"जय श्री कृष्ण " 🌷 🌷 🌷

एक भक्त था, वह सदा श्री प्रभु स्मरण में मग्न रहता था। सोते जागते, हरते फिरते, चलते रुकते, गाते बोलते, खाते पीते, हंसते रोते, अर्थात हर क्षण श्री प्रभु का गुणगान, मनन चिंतन और अध्ययन।
कितनी अदभूत प्रक्रिया 🙏
कितनी अनोखी तपस्या 🙏
कितनी अखंड प्रेम पीपासा 🙏
श्री प्रभु का स्मरण, ध्यान और योग!
जहां से भी गुज़रे, हर कोई उन्हें जय श्री कृष्ण 🙏 करे
जो कोई मिले उन्हें जय श्री कृष्ण कहे 🙏
उन्हें देखते ही हर किसीसे मुख से निकले - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷
हर कोई उनसे आनंदीत, हर कोई उनसे प्रेरित
कोई भी उन्हें जिज्ञासा से पूछे तो उन्हें आत्मीय स्पर्श भरे सत्संग से सन्माने 🙏
उनका हर अक्षर, स्वर, नज़र और क्रिया संस्कार और सत्य आधारित 🙏
आनंद आनंद और आनंद
प्रेम प्रेम और प्रेम
ज्योत से ज्योत जगाते चलो
प्रेम की गंगा बहाते चलो 🙏
कितना निराला जीवन

संसार के हर नियम से शिक्षित
जगत के हर संचालन से ज्ञानीत
प्रकृति के हर परिवर्तन से विकसित
सृष्टि के हर स्वभाव से विदित

हर कोई उन्हें स्मरण से स्पर्शे तो उनकी इच्छा पूर्ण
हर कोई उन्हें द्रष्टि से देखे तो उनकी आकांक्षा पूर्ण
अदभुत! अनोखी! अलौकिक - निधि
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
क्रमशः
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक दिन वह ऐसे ही जा रहे थे और सामने से एक मानव मंडली वही रास्ते से आ रही थी, जो मंडली में - एक क्रोधी, एक लोभी, एक क्रूर, एक पाखंडी, एक लंपट, एक दुष्ट, एक अन्यायी, एक अविश्वसनीय और एक झूठी थी। जैसे वह भक्त को उन्होंने देखा सब को अपने अपने ढंग से क्या करने का तय कर लिया। भक्त तो अपनी धुन में रहता हूं और राधे राधे करता हूं करता मंडली के निकट पहुंचा और सब गाने लगे - राधे राधे!

राधे राधे! हम और तुम में राधे राधे
राधे राधे! मेरे नयन में राधे राधे
राधे राधे! मेरे मन में राधे राधे
राधे राधे! मेरे तन में राधे राधे
राधे राधे! मेरे चित में राधे राधे
राधे राधे! मेरे रंग में राधे राधे
राधे राधे! मेरे संग में राधे राधे
भक्त भी गाये - मंडली भी गाये
भक्त भी नाचे - मंडली भी नाचे
एक अनोखा वातावरण
एक अनोखी गूंज
एक अनोखा संगीत
एक अनोखी मधुरता
एक अनोखा स्वर
एक अनोखी प्रक्रिया
सब मग्न सब डूबे सब खोये सब भूले सब छोड़ें

भक्त अपनी दिशा पर चल पड़ा, मंडली ठहर गई, सब अपने अपने स्वभाव में आ गए, उन्हें याद आने लगा - अरे! हम वह व्यक्ति को अपने ढंग से करने वाले थे वह भूलकर हम कहां खो गए थे! साथ साथ सोच रहे थे - यार! कैसा आनंद आ रहा था! कैसे हम नाचते गाते थे!

सबका स्वभाव वह हर गया और उनका प्रभाव हम पर छोड़ गया!
यही है भक्त की पहचान 🙏
यही है भक्त की कमाल 🙏
यही है भक्ति का रंग 🙏
यही है भक्ति का संग 🙏
सत्य 🙏 पवित्र 🙏 प्रेम 🙏 सेवा 🙏
हमसे है जमाना - जमाने से हम नहीं 🙏
हे! मानव!
इससे है हमारा ऐश्वर्य 👍
इससे है हमारा सिद्धि 👍
इससे है हमारी वृद्धि 👍
इससे है हमारी वृत्ति 👍
इससे है हमारी स्तुति 🙏
इससे है हमारी प्रकृति 🙏
इससे है हमारी द्रष्टि 🙏
इससे है हमारी कृति 🙏
राधे राधे! राधे राधे! राधे राधे! 🌷🙏🌷
"Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी गहरी बात है

एक युवक अपने माता पिता को पूछता है

हे माता-पिता! यह बार बार सुनता रहता हूं सत्य जानो - सत्य पहचानो - सत्य अपनाओ।

तो यह सत्य मुझे कहां मिलेगा?

माता-पिता मुझवण में पड गए, असमंजस में पड़ गए, गुमसुम हो गए।

हे माता! हे पिता! यह सत्य मुझे पाना है, तो मैं कहां जाऊं या क्या करूं?

माता-पिता को सत्य पता नहीं तो अपने पुत्र को कैसे मिलेंगे? कैसे समझाएंगे?

आपको पता है?

एक शिक्षक तुरंत ही किताब खोल कर - शास्त्रों खोल कर ढूंढने लगे, अनेक पुस्तकें टटोलें ने लगे। बहुत ढूंढा पर कोई दिशा दशा न पाई। वह सोचने लगा की - यह कैसी विडंबना? हर कोई एक दूसरे के साथ संताकूकडी रमत से सारा जीवन बीत जाएं तो भी पता न चले सत्य क्या? तो कैसा जीवन? कैसी शिक्षा? कैसा धर्म?

ऐसे टटोलते पूछते एक वडिल ने कहा - आप अपने गुरु के पास जाओ, शायद वह कुछ बता दें!

वह युवक श्री गुरु के पास पहुंचा, दंडवत प्रणाम करके पूछा - हे गुरुदेव! मुझे सत्य पाना है तो मैं क्या करूं?

गुरुजी क्षोभित हो गये और असमंजस में पड़ गए। युवक उनका मौन देखकर बोला, हे गुरुदेव! सत्य मुझे कहां मिलेगा? किसीने कहा - श्री गुरु के चरणों में🙏

तो आप मुझ पर अवश्य कृपा करें 🙏

गुरु आश्चर्यचकित हो कर एकांत में सोचने लगा - सत्य कहां है?

मुझे नहीं पता मैं ही कहीं काल से ढूंढ़ता हूं, मुझे नहीं पता तो मैं कैसे उन्हें बताउं!

अनेकों अनेक जन्मों से अनेकों को पूछा पर कोई नहीं मिला, हर कोई मेरे जैसे है।

🌷 🙏 🌷 कोई सत्याग्रही, सत्याभिलासी, सत्य प्रेमी। पर न कोई मिले तो हम कोई क्या करें?

आपको पता हो 🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

🌷🙏🌷 " ब्रह्म संबंध " 🌷🙏🌷

पुष्टि मार्ग का प्राथमिक वरण

श्री वल्लभाचार्य जी ने दामोदरदास हरसानी को प्रथम वरण करवाया।

ब्रह्म संबंध पुष्टि मार्ग का प्राथमिक सिद्धांत है। हमने ब्रह्म संबंध करवाया है, अवश्य करवाया है और बार बार कहते भी है कि मैंने ब्रह्म संबंध लिया है।

'ब्रह्म संबंध ' जो कोई बेचता हो तो ले सकते है, अगर कोई कहे कि जिसे ब्रह्म संबंध लेना हो तो अपना नाम रजिस्टर करवाये और यह निधि विधि और भेंट रख कर लेना है, तो पुष्टि मार्ग सैद्धांतिक नीति से कहता हूं - ऐसी रीति से ब्रह्म संबंध नहीं होता है और वह जीव अंगीकृत नहीं है। यह तो सौदा है - व्यापार है। ब्रह्म संबंध करने के लिए जीव में पुष्टि मार्ग सिद्धांतों की विद्यता और प्राथमिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अपने आपको प्राथमिक प्रबुद्ध हो कर नयन, मन, वचन, कर्म, तन और धन से विशुद्ध होना है। जो दामोदरदास हरसानी जी में पूर्णता से था।

श्री वल्लभाचार्य जी प्रखर प्रज्ञानी और आध्यात्मिक आचार्य स्वयं थे। आचार्य ही अपने शिष्य को सही शिक्षा, दिशा और मार्ग से सुशिक्षित करके उन्हें ब्रह्म संबंध के काबिल बनाकर " ब्रह्म संबंध " करवाता है।

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तीन रंगों "

दादा! दादा! देखो लाल रंग की लाईट

दादा ने तुरंत गाड़ी को रोक दिया

दादा! आपने गाड़ी क्यूं रोक दी? आगे बढ़ाओ

दादा ने कहा बेटा! लाल रंग की लाईट हमें कहती है रुको 🔴

दादा! ऐसा क्यूं? लाल रंग की लाईट से क्यूं रुकना?

बेटा! लाल रंग कहता है - मैं संकेत करता हूं ठहरने का, जो नहीं ठहरा वह मेरे जैसे लाल हो जाएगा और अपने आपको दोषी पाएगा।एक बार लाल रंग का उल्लघंन किया वह दोषी करार दिए जाने से उन्हें दंड भुगतना पड़ेगा।

इतने में हरा रंग की लाईट हुई और दादा ने गाड़ी बढ़ाई

दादा! यह क्या आप लाल रंग से गाड़ी रोकते हो और यह हरा रंग से गाड़ी बढ़ाते हो, क्यूं?

बेटा! हरा रंग 🟢 हमें कहता है सलामती से आगे बढ़ सकते हो - हम सुरक्षित है, हम अपनी नियंत्रण गति से गाड़ी चला सकते है, हम सही प्रकार से गाड़ी बढा सकते है बिना रूकावट।

इतने में पीला रंग की लाईट हुई तो दादा ने चारों ओर संभल कर गाड़ी त्वरित गति से बढ़ाई

दादा! आप इतना हड़बड़ाते गाड़ी क्यूं चलाईं? किसीसे टक्कर लग जाती तो!

दादा ने कहा - बेटा! यह पीली लाईट 🟡 कहती है कि रुकने के क्षण आ रहे है आप नियंत्रित हो कर अपना मार्ग पार करें नहीं तो अकस्मात होने की संभावना बढ़ गई है।

दादा! आपने जो अभी बताया

🔴 लाल रंग की लाईट - रुको

🟢 हरा रंग की लाईट - आगे बढ़े

🟡 पीला रंग की लाईट - नियंत्रित त्वरित गति से बढ़े

पर दादा! यह केवल आपके लिए ऐसा है?

नहीं नहीं यह तो सबके लिए है - जिससे सब सलामती से, नियंत्रण गति से बिना कोई मुश्किल अपने आपको आगे बढ़ा सकते है।

ओहहह! कितना उत्तम मार्ग दर्शक यह लाईट है।

इतने में धड़ाम आवाज आया, दादा ने गाड़ी रोक दी और नीचे उतरे, देखा एक बाईक सवार ने हमारी गाड़ी को टक्कर मारी। अकस्मात हो गया।

दादा! आगबबूला हो गए और बाईक सवार को पकड कर कहने लगे - दिखता नहीं है? और बहुत कुछ......

बाईक सवार को पुलिस हवाले किया और इनस्युरन्स ऐजेंट को बुलाकर कार्यवाही करके घर की ओर हम निकले, दादा का चहेरा अनेक रंग ढंग से व्यंग था।

घर पहुंच कर फ्रेश होकर खाना-पानी किया।

दादा! क्यूं ऐसे व्यग्रता में हो? क्यूं आकुल व्याकुल हो?

दादा ने कहा - बेटा! बिना दोषी हम संकट में नुकसान भूगते है!

दादा! मैं नहीं समझा!

बेटा! हम नियमन और नियंत्रण से गाड़ी चला रहे थे पर वह बाईक सवार ने उनकी गाड़ी हमारी गाड़ी से टकरा दी - हमारी गाड़ी को नुक्सान, मन को अशांति और समय पैसा की खुंवारी!

दादा! ऐसा क्यूं? हम क्यूं हैरान परेशान?

बेटा! इतनी बेफिक्राई! न कोई समझने को तैयार, बस ठोकते चलो - चलते रहो।

दादा! यह लाल 🔴 यह हरा 🟢 यह पीला 🟡 रंग की लाईट को हर कोई देखते है पर समझते नहीं है?

जो व्यक्ति यह लाल 🔴 यह हरा 🟢 यह पीला 🟡 रंग न जाने तो वह व्यक्ति कैसा? इतना अज्ञान, अशिक्षित लोगों के साथ जीना तो मूर्खता है। हम मूर्ख के साथ रहे तो हम मूर्ख और बेवकूफ है। पढ़ें लिखे शिशिक्षित मूर्ख - बेवकूफ! इतने अभण! असुरक्षित, अज्ञानी के अंधे चाहे श्री प्रभु सेवा, स्मरण, दर्शन और अध्ययन करे! वह दोषी और निर्लज्ज है। दादा! यहां जीवन काटना नर्क है।

ओहहह! इसलिए यहां अंधकार, अशुद्धि और अविश्वास है। 🙏

इसलिए - न दिशत धर्म वर्ण आनंद🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

“ अंधश्रद्धा "

कोई अज्ञानी उच्च कुल अनुसार अपना प्राधान्य जमाते जमाते अपने आपको सामाजिक गुरु या आचार्य समझे और समाज के ऐसे वर्ग को अपने रंग ढंग और व्यंगता से ऐसे हावी हो जाते है की - कोई सत्यता से, योग्यता से, सभानता से, जागृतता से कहे जिससे समाज सुशील, सुशिक्षित, संस्कारी और संस्कृत, संयमी, सदाचारी बने उन्हें पाखंडी, अधर्मी, अज्ञानी और असंस्कारी समझाएं।

वैष्णव चरित्र का सही अर्थ है निडरता, सत्यता, योग्यता और विश्वसनीयता।

पुष्टि मार्ग के अष्टसखाएं प्रमाणित है ऐसी सत्यता और जागृतता से। इसलिए तो श्री वल्लभाचार्य जी ने सखाओं को पुष्टि मार्ग के आत्मा और धरोहर थे।

हमें बार बार यह चरित्रों का ज्ञान भाव का ज्ञानार्थ करते है क्यूंकि ऐसे चरित्रों से स्व जीवन घडतर करना है।

कितना अनोखा व्यापार!

कितना अनोखा आधार!

स्व जीवन जो घड़े ऐसे किसी का घडाय

यही है श्री वल्लभाचार्य जी का सिद्धांत

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नमस्कार🙏 प्रधानमंत्री जी🙏

१. प्रमाणिकता, निखालसता, विश्वसनीयता के साथ हमारे स्वभाव, नीति और व्यवहार में आएगा

२. जो शिक्षा पाई है उनमें ही अर्थोपार्जन साधन प्रदान करेंगे तो ही हम सही निर्माण कर पाएंगे

३.अर्थव्यवस्था में सैद्धांतिक परिवर्तन चाहिए, हर कोई ऐसा ही सोचें आपका पैसा मेरी जेब में कैसे आएं

४. अनामत व्यवस्था के बदले समान व्यवस्था उत्तम परिणाम लाएगी

५. हमारे देश में सही व्यवस्था की इतनी कमी है की हैरान परेशान और असहाय की महसूसी

६. खड्डा पूरते पूरते सही विधायक अपनी विद्धता नष्ट कर देता है

७. करता हूं करता हूं करता हूं - प्राथमिक शिक्षा से निवासी को नीडर, सैनिक की तालीम में ही सत्यार्थी पाठ पढाओ

🌷🙏🌷🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

[11:16 pm, 17/2/2025] Pankaj Shah: https://youtu.be/ugmA8NC8WnI?si=9RonmGiTzVmDaVVU

हम उस देश के वासी जिस देश में गंगा बहती

संस्कार सींचे धर्म जगाएं

मन तन धन जीवन शुद्धि कराएं

होटों पर सच्चाई मन में सफाई

जीये हर कोई एक दूजे के साथी

करो आरती पूजा स्नान शृंगारी

राम तेरी गंगा हमरी माता भई

पवित्र प्रेम जगाते🌷🙏🌷

ओ ओ राम तेरी गंगा हमरी माता भई

पवित्र प्रेम जगाते🌷🙏🌷

प्रतिज्ञा करें हम निश्चय करें

सदा एक दूजे में सत्य जगाएं

विश्वास धरे हम वचन निभाएं

प्रेम से प्रेम नि:कलंक जगाएं

निस्वार्थ सेवा पवित्रता थाना

याचु सदा रहूं दास अमृत धारा

करूं रखवाली जात कुर्बान करते

राम तेरी गंगा हमरी माता भई

पवित्र प्रेम जगाते🌷🙏🌷

ओ ओ राम तेरी गंगा हमरी माता भई

पवित्र प्रेम जगाते 🌷🙏🌷

कुंभ स्नान के हर आत्मा को प्रणाम 🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

પધારો શ્રી વલ્લભ અમારે આંગણે
પધારો શ્રી યમુના અમારે આંગણે
અમારે આંગણે અમારે દ્વારે
પધારો શ્રી વલ્લભ અમારે આંગણે

ગિરિરાજ કેરી પુષ્ટિ રજ પથરાવી
ગોવર્ધન પૂજાની ગાયો બંધાવી
યમુના જળ ની ઝારી ધરાવી
મુખારવિંદ ની ઝાંખી શૃંગારી
પધારો શ્રી વલ્લભ અમારે આંગણે
પધારો શ્રી યમુના અમારે આંગણે
અમારે આંગણે અમારે દ્વારે
પધારો શ્રી વલ્લભ અમારે આંગણે

અષ્ટસખા નાં કીર્તન ગાઈએ
ચૌર્યાસી વૈષ્ણવોનાં ચરિત્રો પાઠીએ
ગોપીજનોની વિરહ વેદના જગાવીએ
ષોડસગ્રંથ નાં સંસ્કાર પામીએ
પધારો શ્રી વલ્લભ અમારે આંગણે
પધારો શ્રી યમુના અમારે આંગણે
અમારે આંગણે અમારે દ્વારે
પધારો શ્રી શ્રીનાથજી અમારે આંગણે
પધારો શ્રી નિધિ સ્વરૂપો અમારે આંગણે
અમારે આંગણે અમારે દ્વારે
વૈષ્ણવ જનો નાં ભજન ઝીલીયે
પધારો શ્રી વલ્લભ અમારે આંગણે
પધારો શ્રી યમુના અમારે આંગણે
અમારે આંગણે અમારે દ્વારે
પધારો શ્રી શ્રીનાથજી અમારે આંગણે
શ્રીનાથજી બાવા ની જય
શ્રી યમુના મહારાણી ની જય
શ્રી વલ્લભાચાર્ય ની જય
શ્રી ગિરિરાજ ધરણ ની જય
આજનાં આનંદ ની જય
પધારેલા વૈષ્ણવો ની જય
જય શ્રી કૃષ્ણ 🌷🙏🌷
“Vibrant Pushti “
“ જય શ્રી કૃષ્ણ “ 🌷🙏🌷

रास्ते पर सोचते सोचते चलता जा रहा था - किसने बनाया यह रास्ता?

एक पगदंडी से रास्ता, कौन चला होगा पहला कदम?

जो भी चला होगा उन पर चलते गए और हो गई पगदंडी।

यही पगदंडी पर अनेकों चले हो गया एक रास्ता।

हमारे जीवन में भी ऐसा ही है, जिसने पहला कदम चला कहीं चलते गए, यह पहला कदम जो चला वह जैसा ऐसे हम।

सोचे यह सैद्धांतिक है?

बार बार दोहराते है - यह चला वह चला तो रास्ता हो गया और हम सब चले। जो मंझील मिले।

यह सत्य है?

हां! यही सैद्धांतिक और सत्य है।

इसलिए तो आज यह मार्ग, यह धाम और यह गाम कहते है।

घर्म गुरु चले, पूर्वज चले, माता पिता चले तो मैं चला। 🙏

इसका अर्थ है कि प्रथम कदम सैद्धांतिक और सत्य कदम था पर जो चलते गए वह कैसा था? और कैसे परिवर्तन किया रास्ते का मर्म और अर्थ को?

यह परिवर्तनों से बदला गया और भटक गए और लटक गए जीवन में।

यह भटक और लटक से जीवन अव्यवस्थित।

इसलिए जो भी कदम बढ़ाएं तो संस्कार, सिद्धांत, सत्य और विश्वास से। 🙏

यही सैद्धांतिक और सत्य है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

મારો એક મિત્ર મને વારંવાર કહે યાર! ચાલને આ ગલી જઈએ આ ગલી જઈએ!

મેં ખૂબ ધીરજથી તેને સાંભળ્યો. તેનો મર્મ અને અર્થ હું જાણી ગયો હતો 🙏

એટલે મેં સમય સાથે તેની વિચાર ધારા સમજતો હતો, તેને એવું લાગવા જ નહીં દીધું કે હું ખૂબ સૈદ્ધાંતિક અને અતિ સૂક્ષ્મ દ્રષ્ટિ ધરાવતો વ્યક્તિ છું. હું કાયમ તેના માટે શ્રી પ્રભુને પ્રાર્થના કરતો રહેતો કે મારા મિત્રને ધીરે ધીરે યોગ્યતા આપતો જા જે 🙏

શ્રી પ્રભુની અકળ કૃપા કે મને શ્રી પ્રભુની સેવા અને સત્યતા પર મારા વધતા કદમ પર તેનું ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવા વિનંતી અને પ્રયત્ન કરવા લાગ્યો 🙏

તો તેનું જીવન તેની ઈચ્છા મુજબ સાકાર થવા લાગ્યું. તે ખૂબ ખુશ અને સ્વસ્થ જણાવા લાગ્યો.

મેં એની વાતમાં વાત મેળવતા કહ્યું - મિત્ર! તારા માં કેટલી અપાર શક્તિ છે કે તું આ શક્તિનો ઉપયોગ જો તું પવિત્રતા અને તેં જે કુળમાં જન્મ ધર્યો છે તે ઉજળા કુળ ને ઉત્તમ બનાવીશ તો તું હજુ જેટલું સારું અને સિધ્ધાંત થી આગળ વધીશ તો તને શ્રી પ્રભુ નો સાક્ષાત્કાર થશે.

અને એને સ્વીકારી લીધું.

હે પ્રભુ! તું ચોક્કસ દયાળુ અને કૃપાળુ છે. 🌷🙏🌷

हम जब किसीको वस्तु मान बैठे या समझ बैठे या जान बैठे या बना दिया तो समझ लेना है वह सौदा, व्यापार और व्यवहार की वस्तु हो जाएगी - चाहे व्यक्ति हो, मनुष्य हो, जीव हो या शिव हो।

प्रथम - व्यक्ति, मनुष्य, जीव

हम जीव को वस्तु जाने माने समझे वह बिकाउं हो गई - वह तोल-मोल हो गया - उसका व्यापार होने लगा। जैसे गुलाम, जैसे बली🙏

हम स्व मनुष्य पर हम देह व्यापार करने लगे - शारीरिक मजबुताई - सैनिक स्वरूप, आगुंतक स्वरूप, नौकर स्वरूप, मददगार स्वरूप, नियामक स्वरूप 🙏

हम व्यक्ति होते हुए व्यक्ति पर अधिकार जाने माने और समझे उनमें वह पत्नी हो (जैसे द्रोपदी) (जैसे नगर वधू) (जैसे स्त्री)।

हमने अपने आपको व्यवहार व्यापार और सौदाई वस्तु बना दिया। 🙏

स्त्री स्वगत अपने आपको वस्तु समझने लगी और स्व ही अपना देह व्यापार करने लगी। सब मानसिकता से उन्हें वस्तु मान लिया बस उनका सौंदर्य सौदा चालू हो गया। चाहे स्व पत्नी हो, संबंधी की स्त्री हो, मित्र की पत्नी हो और स्व स्त्री पात्र हो - सौदा सौदा सौदा।

नज़र में सौदा व्यापार

विचार में सौदा व्यापार

कर्म में सौदा व्यापार

तो हम क्या?

किसी की बहन, पत्नी, दीकरी, पुत्री, पौत्री, भाभी और आखरी मां!

क्या हम इनका व्यापार या सौदा कर सकते है?

और हम इन्हें सभ्यता, फैशन और व्यवहारु समझ कर बिकाउं कर दे तो! हम क्या और कैसे?

प्रश्न है - कोई अपनी स्त्री अर्थात बहन, पत्नी, बेटी, पौत्री, भाभी और मां को ऐसे व्यापार और सौदा में विचार या नज़र कर सकता है? नहीं🙏

तो औरों का क्यूं?

" राम तेरी गंगा मैली हो गई पापी ओं के पाप धोते धोते " 🌷 🙏 🌷

स्व बचो - स्व संवारो - स्व संस्कारों - स्व ललकारो - स्व पडकारो - स्व पहचानो - स्व जागो और जगाओ 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा!

एक झलक क्या पाईं

यह दिल तेरा हो गया

क्या हो गया है मुझे

चारों ओर तु दिखाने लगा

हे कान्हा!

एक नज़र क्या

तेरी तिरछी नज़र से मिल गई

न मैं मेरी रही

न यह जीवन मेरा रहा

हे कान्हा!

एक मुखड़ा क्या दर्शन पाया

तुने मेरा मन तन जीवन हर लिया

क्या से क्या हो गया

मैं तेरी दीवानी हो गई

हे कान्हा!

तु कौन है

जो मैं कहीं की न रही

अब तो जिधर जिधर है

मैं वहीं वहीं दासी रहूं

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरा एक मित्र जो पढ़ा है और विज्ञान विषय का स्नातक जो पानी उपर डोक्टरेट कर रहा है वह हिन्दु आस्था और श्रद्धा विश्वास से कुंभ स्नान के लिए उत्साहित गति से पहुंचा। 🙏

जो माहौल - जो व्यवस्था - जो धार्मिक सनातनता और जो निष्ठा देख कर अचंभित रह गया! ओहहह! क्या धर्मज्ञता है! क्या संन्यास उर्जा की तीव्रता है! क्या तेज़ है! भक्ति और ज्ञान की एकता अर्थात - संगम 🙏

मेरा मित्र इनमें डूब गया, इतना गहरा डूबा की वह अपने आपको उनमें खो दिया।🙏

वह शायद एक माह तक वहां रहा और हररोज क्षण क्षण रात रात दिन दिन वह हवा, रज और पानी की बूंद का अभ्यास करता रहा।

वह जब घर वापस लौटा तब वह अधिक एकांत में गहरी सोच और विचार धारा में ही बहता रहता।

कहीं दिन गुज़रे मैं उनका इंतजार में था, साथ साथ सोचता था - मित्र अभी तक नहीं आया! आखिर मैं ही उनके घर के लिए रवाना हुआ। देखा तो गुमसुम कोई अलग सी दुनिया में डूबा था। मैंने जोर से हिम्मत जुटा कर पुचकारा - मित्र!

वह मूड़ा और मुझे देख कर अचंभित हो कर दौड़ता आया और मुझे लिपट गया। उन्होंने मुझे इतने कससे पकड़ा था कि मैं हिल नहीं सकता था। कुछ ही पलों में वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। मैं अचंभित हो कर उन्हें कहता छुड़ाता कहने लगा - अरे मित्र! यह क्या? तेरी दोनों आंखों से गंगा औक जमुना अविरत बहती है 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

क्रमशः

यह जो लिख रहा हूं वह सत्य आधारित और विश्वास पूर्वक कह रहा हूं। जो हर व्यक्ति को तथ्य और श्रद्धा पूर्वक समझना आवश्यक है। 🌷🙏🌷

" शिव शिव शिव "

जीव को शिव होना 👍

हिन्दू संस्कृति का प्रथम सिद्धांत 🙏

हमारी वर्ण व्यवस्था यही शिस्त और नियमन आधारित है 🙏

ब्राह्मण - शिव रात्रि का प्रथम दो प्रहर स्व को संस्कारों से शिक्षित हो कर संसार का वैराग्य स्वीकारना है🙏

भिक्षां दे ही 🙏

शिव रात्रि का दूसरा दो प्रहर स्व को विद्याओं से निपुण कर संसार के अज्ञानता से सुरक्षित करना है🙏

क्षत्रियता - अहंकार अभिमान राग से कैसे बचना🙏

शिव रात्रि का तीसरा दो प्रहर स्व को जगत के व्यवहारों को धर्म से निभाना है🙏

धर्म का सत्य, अर्थोपार्जन का सत्य की विद्वता पा कर जीवन नि:कलंक - निस्वार्थ ज्ञान का ययज्ञ पुरुषार्थ करना है🙏

शिव रात्रि का आखिर दो प्रहर सेवा समर्पण और तर्पण विधि से सुसुप्त होना है🙏

जीवन में अशुद्धियां, अश्लीलता, लंपटता, धूर्तता, पाखंडता का नाश हो🙏

जीव जन्म जीवन तेजोमय हो कर शिव में एकात्म हो जाएं - यह है शिव रात्रि 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏

देह - अमूल्य
देह के हर अंग - अमूल्य
देह के हर रंग - अमूल्य
देह के हर तरंग - अमूल्य
देह का स्पर्श - अमूल्य
देह से कर्म - अमूल्य
देह से धर्म - अमूल्य
देह के वर्ण - अमूल्य
देह से पुरुषार्थ - अमूल्य
देह से सेवा - अमूल्य
देह से विद्यता - अमूल्य
देह से विज्ञान - अमूल्य
देह से अनुभव - अमूल्य
देह से विकास - अमूल्य
देह से सिद्धि - अमूल्य
देह से बंधे साधन - अमूल्य
देह से जुड़े तत्वों - अमूल्य
देह में बसे अंग उपांग - अमूल्य
देह की वृद्धि - अमूल्य
देह की सुरक्षा - अमूल्य
देह की सुश्रुषा - अमूल्य
देह की आहुति - अमूल्य
देह का परिवर्तन - अमूल्य
देह का धरण - अमूल्य
देह का वरण - अमूल्य
देह का शरण - अमूल्य
देह का सौन्दर्य - अमूल्य
दुर्लभो मनुष्य देह 🙏
हम देह को रोगी, भोगी और ढोंगी बनाते है
हम देह को लोभी, मोही, व्यापारी बनाते है
हम देह को निर्दयी, निर्लज्ज, दुष्ट बनाते है
अज्ञानी अहंकारी स्वार्थी हम देहधारी - कैसा शापित, पापीत, दूषित प्रयोग 🙏
सोच लो🙏
"Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण "

शांति बिकाऊ नहीं है 🌷🙏🌷

स्वयत्तता, समर्पण, सत्य बिकाऊ नहीं है 🙏

धर्म, कर्म, सेवा बिकाऊ नहीं है 🌷🙏🌷

देश, देह, सिद्धांत बिकाऊ नहीं है 🙏

देश की स्वतंत्रता बिकाऊ नहीं है 🌷🙏🌷

सामाजिक सेवक, धार्मिक सेवक, संन्यासी बिकाऊ नहीं है 🌷🙏🌷

माँ, पत्नी, दीकरी बिकाऊ नहीं है 🙏

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

એક પાસંઠ વર્ષનો યુવાન સડક ઉપર ચાલતો હતો અને આજુબાજુ નજર ફેરવતો આગળ ધપતો હતો. ત્યાં તેની નજીકથી ખૂબ જ સ્પીડ માં હોર્ન વગાડતો વગાડતો એક બાઈક સવાર પસાર થયો તે યુવાન તરત સાઇડ ઉપર ખસી ગયો

ત્યાં એક પગ રિક્ષાવાળો તે યુવાન ને કહ્યું - ભાઈ સાઇડ પર ચાલને

એટલે તે યુવાન વધુ સલામતી થી એક એક કદમ ભરતો જેવો આગળ વધ્યો ત્યાં ઓટોરિક્ષા તેને અડકી ને પસાર થઈ ગઈ, તે યુવાન અચંભિત થઈ હજુ ગલી ની કોર્નર પર વધે છે ત્યાં જ ગલીની બહાર નીકળતી કાર તેને હોર્ન મારી મારી ને કહેતી હતી કે ભાઈ સાઇડ આપ.

યુવાન રસ્તાની બાજુમાં એક દુકાનનાં પગથિયાં પર ચડી વિચારવા લાગ્યો - ચાલવું કેવી રીતે? બધાયે આગળ જવું છે.

આજુબાજુ નજર કરતો અને વિચારતો - આમ કરું, આમ થી આમ જાવ અને આમ થી આમ - નક્કી કરે તે પહેલા જ દુકાન માં જતો ગ્રાહક બોલ્યો - ભાઈ! સાઇડ આપો તો દુકાન માં જાઉં - ત્યાં જ દુકાન નો માલિક દરવાજા પાસે આવ્યો અને બોલ્યો - ભાઈ! આ કોઈ રાહદારી નો રસ્તો નથી કે અહીં ઊભા રહો!

પાસંઠ વર્ષનો યુવાન વિસ્મય થઈ બાજુમાં ઉભેલી ચાય ની લારી પાસે મૂકેલી ખુરશી પર બેસી ગયો - ચાય પીધી

થોડો સમય પસાર કર્યો અને જેવો પોતે નક્કી કરેલા કાર્ય પૂરું કરવા ઉભો થાય છે ત્યાં જ એક વ્યક્તિ તેની પાસે આવે છે અને કહે છે - સામે ફૂટપાથ જવું હોય તો દસ રૂપિયા લઈશ - બોલો મૂકી આવું!

યુવાન બોલ્યો - ના હું જતો રહીશ!

વ્યક્તિ પૂરપાટ ઝડપે સામે રસ્તે પહોંચી ગયો અને હાથ હલાવતો બૂમ પાડી

ભાઈ! આવતા જન્મે મળીશું, અને ભીડ માં ક્યાં ગયો તે ખબર ના પડી.

યુવાન થાંભલા ની જેમ ઉભો રહી ગયો

તે આજે પણ ત્યાં જ ઉભો છે 🙏

"Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

મારા નયનની દ્રષ્ટિ શ્રી મહાપ્રભુજી શ્રીનાથજી શ્રીગોવર્ધનનાથજી

મારું તન મન છે ચંપારણ્ય નાથદ્વારા

મારા નયનની દ્રષ્ટિ છે શ્રી મહાપ્રભુજી શ્રીનાથજી શ્રીગોવર્ધનનાથજી

હું નિત્ય સેવા કરું પુષ્ટિમાર્ગ સિદ્ધાંત થી

ગાઉં ધોળ કીર્તન આઠે શમા નિધિ વિધિ થી

મેં તો બ્રહ્મસંબંધ કર્યું શ્રી વલ્લભ શરણ થી

મારા નયનની દ્રષ્ટિ શ્રી મહાપ્રભુજી શ્રીનાથજી શ્રીગોવર્ધનનાથજી

अरे भाई! आप हमें " जय श्री कृष्ण " कह कर आगे बढ़ जाते हो, फिर कोई ओर मिलें तो उन्हें भी " जय श्री कृष्ण " कह कर आगे बढ़ जाते हो, ऐसा जो भी रास्ते में मिलें उन्हें करते रहते हो। क्या कुछ होता है आपको - या कुछ दिखता है आपको - या कुछ समझाना चाहते हो हमें?

दो हाथ जोड़े वह व्यक्ति ने कहा - भाई!

" जय श्री कृष्ण " कहने से मेरी द्रष्टि में श्री कृष्ण की झांकी होती है, ऐसे हर एक को कहता जा रहा होता हूं तब श्री कृष्ण प्रभु का दर्शन पा कर कृत कृत्य हो जाता हूं 🙏

जिज्ञासु प्रश्नार्थी ने कहा - ओहहह! तो हम भी रास्ते में मिलें उन्हें " जय श्री कृष्ण " कहें तो हमें भी झांकी होगी और दर्शन होगा!

अवश्य! 🙏

अब हर कोई जो मिलें उन्हें " जय श्री कृष्ण " कहते कहते आगे बढ़ने लगे। समय चलता गया - हर एक के मुखसे गूंजते " जय श्री कृष्ण " का उदघोष ऐसी चिनगारी बन गया कि जो भी " जय श्री कृष्ण " कहें उनमें विनय विश्वास विवेक और सत्य जीवन का संचार होने लगा। हर कोई व्यवहार, व्यवस्था, व्यवसाय, विचार पवित्र, प्रेम और निखालस नियमन से जीने लगा।

" जय श्री कृष्ण " में सुख शांति सुरक्षा समृध्दि पाने लगा। न कोई द्वेष ऊंच-नीच वैर विरोध दुर्व्यवहार, सबके साथ आनंद उमंग संग रंग। 🌷🙏🌷

" कृष्ण कन्हैया लाल की जय "

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पिता का आशीर्वाद!

कर्नाटक में बेंगलुरु के एक व्यापारी की यह सत्य घटना है। जब मृत्यु का समय सन्निकट आया तो पिता ने अपने एकमात्र पुत्र धनपाल को बुलाकर कहा कि..

बेटा मेरे पास धनसंपत्ति नहीं है कि मैं तुम्हें विरासत में दूं! पर मैंने जीवनभर सच्चाई और प्रामाणिकता से काम किया है।

तो मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि, तुम जीवन में बहुत सुखी रहोगे और धूल को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जायेगी।

बेटे ने सिर झुकाकर पिताजी के पैर छुए 🙏 पिता ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया🙌 और संतोष से अपने प्राण त्याग कर दिए।

अब घर का खर्च बेटे धनपाल को संभालना था। उसने एक छोटी सी ठेला गाड़ी पर अपना व्यापार शुरू किया।

धीरे धीरे व्यापार बढ़ने लगा। एक छोटी सी दुकान ले ली। व्यापार और बढ़ा।

अब नगर के संपन्न लोगों में उसकी गिनती होने लगी। उसको विश्वास था कि यह सब मेरे पिता के आशीर्वाद का ही फल है।

क्योंकि, उन्होंने जीवन में दु:ख उठाया, पर कभी धैर्य नहीं छोड़ा, श्रद्धा नहीं छोड़ी, प्रामाणिकता नहीं छोड़ी इसलिए उनकी वाणी में बल था, और उनके आशीर्वाद फलीभूत हुए, और मैं सुखी हुआ 🙏 उसके मुंह से बारबार यह बात निकलती थी।

एक दिन एक मित्र ने पूछा - तुम्हारे पिता में इतना बल था, तो वह स्वयं संपन्न क्यों नहीं हुए? सुखी क्यों नहीं हुए?

धर्मपाल ने कहा: मैं पिता की ताकत की बात नहीं कर रहा हूं, मैं उनके आशीर्वाद के ताकत की बात कर रहा हूं।

इस प्रकार वह बारबार अपने पिता के आशीर्वाद की बात करता, तो लोगों ने उसका नाम ही रख दिया " बाप का आशीर्वाद "

धर्मपाल को इससे बुरा नहीं लगता, वह कहता कि मैं अपने पिता के आशीर्वाद के काबिल निकलूं, यही चाहता हूं।

ऐसा करते हुए कई साल बीत गए। वह विदेशों में व्यापार करने लगा। जहां भी व्यापार करता, उससे बहुत लाभ होता।

एक बार उसके मन में आया, कि मुझे लाभ ही लाभ होता है! तो मैं एक बार नुकसान का अनुभव करूं।

तो उसने अपने एक मित्र से पूछा, कि ऐसा व्यापार बताओ कि जिसमें मुझे नुकसान हो।

मित्र को लगा कि इसको अपनी सफलता का और पैसों का घमंड आ गया है, इसका घमंड दूर करने के लिए इसको ऐसा धंधा बताऊं कि इसको नुकसान ही नुकसान हो।

तो उसने उसको बताया कि तुम भारत में लौंग खरीदो और जहाज में भरकर अफ्रीका के जंजीबार में जाकर बेचो। धर्मपाल को यह बात ठीक लगी।

जंजीबार तो लौंग का देश है, वहां से लौंग भारत में लाते हैं और यहां 10-12 गुना भाव पर बेचते हैं। भारत में खरीद करके जंजीबार में बेचें, तो साफ नुकसान सामने दिख रहा है।

परंतु धर्मपाल ने तय किया कि मैं भारत में लौंग खरीद कर, जंजीबार खुद लेकर जाऊंगा, देखूं कि पिता के आशीर्वाद कितना साथ देते हैं।

नुकसान का अनुभव लेने के लिए उसने भारत में लौंग खरीदे और जहाज में भरकर खुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुंचा।

जंजीबार में सुल्तान का राज्य था। धर्मपाल जहाज से उतरकर के और लंबे रेतीले रास्ते पर जा रहा था, वहां के व्यापारियों से मिलने।

उसे सामने से सुल्तान जैसा व्यक्ति पैदल सिपाहियों के साथ आता हुआ दिखाई दिया।

उसने किसी से पूछा कि, यह कौन है?

उन्होंने कहा: यह सुल्तान हैं।🙏

सुल्तान ने उसको सामने देखकर उसका परिचय पूछा, उसने कहा: मैं भारत देश का गुजरात राज्य के खंभात शहर का व्यापारी हूं, यहां पर व्यापार करने आया हूं। 🙏

सुल्तान ने उसको व्यापारी समझ कर उसका आदर किया और उससे बात करने लगा।

धर्मपाल ने देखा कि सुल्तान के साथ सैकड़ों सिपाही हैं, परंतु उनके हाथ में तलवार, बंदूक आदि कुछ भी न होकर बड़ी-बड़ी छलनियां है।

उसको आश्चर्य हुआ। उसने विनम्रता पूर्वक सुल्तान से पूछा: आपके सैनिक इतनी छलनी लेकर के क्यों जा रहे हैं?

सुल्तान ने हंसकर कहा: बात यह है, कि आज सवेरे मैं समुद्र तट पर घूमने आया था, तब मेरी उंगली में से एक अंगूठी यहां कहीं निकल कर गिर गई।

अब रेत में अंगूठी कहां गिरी, पता नहीं। तो इसलिए मैं इन सैनिकों को साथ लेकर आया हूं। यह रेत छानकर मेरी अंगूठी उसमें से तलाश करेंगे।

धर्मपाल ने कहा: अंगूठी बहुत महंगी होगी।

सुल्तान ने कहा: नहीं! उससे बहुत अधिक कीमत वाली अनगिनत अंगूठी मेरे पास हैं, पर वह अंगूठी एक फकीर का आशीर्वाद है।

मैं मानता हूं कि मेरी सल्तनत इतनी मजबूत और सुखी उस फकीर के आशीर्वाद से है। इसलिए मेरे मन में उस अंगूठी का मूल्य सल्तनत से भी ज्यादा है। 🙏

इतना कह कर के सुल्तान ने फिर पूछा: बोलो सेठ, इस बार आप क्या माल ले कर आये हो?

धर्मपाल ने कहा कि: लौंग!

सुल्तान के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। यह तो लौंग का ही देश है सेठ। यहां लौंग बेचने आये हो? किसने आपको ऐसी सलाह दी।

जरूर वह कोई आपका दुश्मन होगा। यहां तो एक पैसे में मुट्ठी भर लोंग मिलते हैं। यहां लोंग को कौन खरीदेगा? और तुम क्या कमाओगे?

धर्मपाल ने कहा: मुझे यही देखना है, कि यहां भी मुनाफा होता है या नहीं।

मेरे पिता के आशीर्वाद से आज तक मैंने जो धंधा किया, उसमें मुनाफा ही मुनाफा हुआ। तो अब मैं देखना चाहता हूं कि उनके आशीर्वाद यहां भी फलते हैं या नहीं।

सुल्तान ने पूछा: पिता के आशीर्वाद! इसका क्या मतलब?

धर्मपाल ने कहा: मेरे पिता सारे जीवन ईमानदारी और प्रामाणिकता से काम करते रहे। परंतु धन नहीं कमा सकें।

उन्होंने मरते समय मुझे भगवान का नाम लेकर मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिए थे, कि तेरे हाथ में धूल भी सोना बन जाएगी। 👍
ऐसा बोलते-बोलते धर्मपाल नीचे झुका और जमीन की रेत से एक मुट्ठी भरी और सम्राट सुल्तान के सामने मुट्ठी खोलकर उंगलियों के बीच में से रेत नीचे गिराई तो..
धर्मपाल और सुल्तान दोनों का आश्चर्य का पार नहीं रहा। उसके हाथ में एक हीरेजड़ित अंगूठी थी। यह वही सुल्तान की गुमी हुई अंगूठी थी।
अंगूठी देखकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हो गया। बोला: वाह खुदा आप की करामात का पार नहीं। आप पिता के आशीर्वाद को सच्चा करते हो।
धर्मपाल ने कहा: फकीर के आशीर्वाद को भी वही परमात्मा सच्चा करता है।
सुल्तान और खुश हुआ। धर्मपाल को गले लगाया और कहा: मांग सेठ। आज तू जो मांगेगा मैं दूंगा।
धर्मपाल ने कहा: आप 100 वर्ष तक जीवित रहो और प्रजा का अच्छी तरह से पालन करो। प्रजा सुखी रहे। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए। 🙏
सुल्तान अधिक प्रसन्न हो गया। उसने कहा: सेठ तुम्हारा सारा माल में आज खरीदता हूं और तुम्हारी मुंह मांगी कीमत पर। 🙌
पिता के आशीर्वाद हों, तो दुनिया की कोई ताकत कहीं भी तुम्हें पराजित नहीं होने देगी। 🙌
पिता और माता की सेवा का फल निश्चित रूप से मिलता है। आशीर्वाद जैसी और कोई संपत्ति नहीं। 🙌
बालक के मन को जानने वाली मां और भविष्य को संवारने वाले पिता यही दुनिया के दो महान ज्योतिषी है। 🙌
अपने वडीलों का सम्मान करें! यही भगवान की सबसे बड़ी सेवा है। 🙌
🙏 जय श्री कृष्ण 🙏

बार बार जनम लेंगे

हर बार फना हुए

हे कान्हा! तुम्हें कभी नहीं भुला पाएं

नज़र से नज़र मिली

हमारी प्रीति जगी युगों की

हम दूर नहीं एक दूजे से

जले एक प्रेम अगन विरह की

बार बार जनम लेंगे

हर बार फना हुए

हे कान्हा! तुम्हें कभी नहीं भुला पाएं

तेरी तिरछी नज़र का तीर

चुभे रोम रोम रस असर

तेरी मधुर बंसी की तान

जगाएं दिल कंवल मुस्कान रंगी

बार बार जनम लेंगे

हर बार फना हुए

हे कान्हा! तुम्हें कभी नहीं भुला पाएं

बार बार जनम लेंगे

हर बार फना हुए

हे कान्हा! तुम्हें कभी नहीं भुला पाएं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वल्लभ स्मरण में मन करे पुकार

श्री नाथ के शरण में हो जीवन उद्धार

आनंद परमानंद पाता हूं इन चरणों में

पुष्टि प्रीत जगाता हूं इन दर्शन में

आ आ आ आ आ आ

एक तेरा आश्रय वल्लभ बसे तु मेरे ख्यालों में

मैं सेवक दास हूं सदा रहूं तेरा एक स्मरण में

जनम जनम का प्यासा हूं यादों में तुझे ढूंढता हूं - मेरे चंपारण्य के नाथ

आनंद परमानंद पाता हूं इन चरणों में

पुष्टि प्रीत जगाता हूं इन दर्शन में

द्वार द्वार भटकूं श्री नाथ तेरा ही गुणगान गाऊं

नज़र नज़र दौडाऊं श्री नाथ तेरा ही चरण पखाळु

द्रष्टि पुष्टि गिरिराज तेरी सेवा में जीवन शृगार - मेरे नाथद्वारा के श्री नाथ

आनंद परमानंद पाता हूं इन चरणों में

पुष्टि प्रीत जगाता हूं इन दर्शन में

वल्लभ स्मरण में मन करे पुकार

श्री नाथ के शरण में हो जीवन उद्धार

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वल्लभ स्मरण में मन करे पुकार

श्री नाथ के शरण में हो जीवन उद्धार

आनंद परमानंद पाता हूं इन चरणों में

पुष्टि प्रीत जगाता हूं इन दर्शन में

आ आ आ आ आ आ

एक तेरा आश्रय वल्लभ बसे तु मेरे ख्यालों में

मैं सेवक दास हूं सदा रहूं तेरा एक स्मरण में

जनम जनम का प्यासा हूं यादों में तुझे ढूंढता हूं - मेरे चंपारण्य के नाथ

आनंद परमानंद पाता हूं इन चरणों में

पुष्टि प्रीत जगाता हूं इन दर्शन में

द्वार द्वार भटकूं श्री नाथ तेरा ही गुणगान गाऊं

नज़र नज़र दौडाऊं श्री नाथ तेरा ही चरण पखाळु

द्रष्टि पुष्टि गिरिराज तेरी सेवा में जीवन शृगार - मेरे नाथद्वारा के श्री नाथ

आनंद परमानंद पाता हूं इन चरणों में

पुष्टि प्रीत जगाता हूं इन दर्शन में

वल्लभ स्मरण में मन करे पुकार

श्री नाथ के शरण में हो जीवन उद्धार

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन का यह फसाना

हे प्रभु! तुझे ही सुनाये

जहां जहां नजर घुमाये

वहीं वहीं तु छूपता जाएं

विचारों में आज़ मेरे

तेरी दुनिया घूम रही है

असर मन बैचैन कर रही है

मेरा हर एक आंसू देने लगी दुहाई

जीवन का यह फसाना

हे प्रभु! तुझे ही सुनाये

सांसों में आज मेरे

तूफान उठ रहे है

दुनिया वालों से कह दो

मुझे दुनिया से उठा दे

जीवन का यह फसाना

हे प्रभु! तुझे सुनाये

जहां जहां नजर घुमाये

वहीं वहीं तु छूपता जाएं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" महिला दिवस "

मन से मजबूत

हि से हिम्मत

ला से लाजवंती

सशक्त स्वरक्षित सुशिक्षित सुशील सत्यार्थ स्त्री - महिला 🙏

🌹 महिला 🌹

कुटुंब की आन👍

मर्यादा की बान 👍

समय की शान 👍

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

व्रज में एक स्थली है, जो स्थली की चारों ओर जंगल है, वह जंगल की जितनी गहराई में एक ऐसा पेड़ है, जिसकी सबसे उपर की डाली पर एक चुनरी लहराती है।

चाहे कितनी बारिश गिरे, पर वह चुनरी भीगे तो भी लहराती है। वह गहर वन में न कोई पहुंच सकता है पर प्रेमी को वह चुनरी नज़र आती है, जिसने वह चुनरी जिसने देख लिया वह अपने आपको ऐसा खो देता है कि वह कभी भी वह जंगल से बाहर निकलने की खेवना ही नहीं करता। वह चुनरी की ओर खींचा रहता है और मुख से केवल " राधे राधे " की गूंज में डूबा रहता है।

🌷🙏🌷 राधे राधे 🌷🙏🌷

मेरे नैनन में
ओ मेरे नैनन में उड़ा गयो मुख रंग
नैनन न पलक झपके
ओ मेरे नैनन में उड़ा गयो मुख रंग
नैनन न पलक झपके

तिरछी नज़र से मार गयो रंग
ऐसे इशारे से मार गयो रंग
की मेरे नैनन बरसाएं विरह नीर
मुख रंग मार गयो 🌷

मेरे नैनन में
ओ मेरे नैनन में उड़ा गयो मुख रंग
नैनन न पलक झपके

नज़र नज़र से बस गयो रंग
प्रेम रंग में लिपट गयो अंग
की मेरा दिल पुकारे श्याम सूर
जीवन बस गयो रंग 🌷

मेरे नैनन में
ओ मेरे नैनन में उड़ा गयो मुख रंग
नैनन न पलक झपके

नैनन पलक झपके
मनन मुख तरसे
दिल श्याम झांकें
प्रेम प्रेम पुकारे
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
"Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्य प्रमाणित

सिद्धांत यथार्थित

अनुभव आधारित

विश्वास संचित

आत्मीय स्पर्शीत

अक्षर - स्वर - द्रष्टि - सूचन - विचार और कार्य

सफलता तो पाएगा

पर

वह धर्म कर्म सेवा रक्षक हो जाएगा 👍

चाहे कितना बड़ा अहंकार अभिमान का पहाड़ हो

या कितना गहरा अथाग सागर हो

या प्रचंड गतिशील वायु वंटोळ हो

या तीव्र तेजोमय सूर्य अग्नि हो

या अति संवेदनशील धरती हो

या अगिनत फ़ैला आकाश हो

एक टमटमाती चिनगारी पहाड़, सागर, वायु, अग्नि, धरती और आकाश सारे सांसारिक अधटित काल को नष्ट कर सत्य का सूर्य उगाते है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मनुष्य जीवन का सत्य "
जो मैंने दूसरे के लिए
जो निर्णय बांधा वही मेरे साथ होगा

जो मैंने दूसरे के लिए सूचन किया
वह सूचन मुझे भी निभाना ही होगा

जो मैंने दूसरे के लिए जो मंतव्य बांधा
अवश्य वह मंतव्य मेरे लिए भी है ही

जो मैंने दूसरे का अघटित किया
अवश्य मेरा अघटित है ही

जो मैंने दूसरे के लिए तर्क किया
अवश्य वह तर्क मेरे साथ होगा

चाहे कितनी भी ऐसी नीति रीति विधि निधि मैं करता रहूं
अवश्य वही नीति रीति विधि निधि मेरे साथ होती ही रहेगी

टटोलना 🙏
चिंतन करना 🙏
अध्ययन करना 🙏
अभ्यास करना 🙏

यही सत्य है 👍
यही सिद्धांत है 👍
यही उपलब्धि है 👍
यही संज्ञान है 👍
इसलिए भक्ति एक ऐसा साधन है जो शायद निर्माण कार्य को समाप्त कर दे 🙏
इसलिए - कर्म का सिद्धांत अतूट है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" रंग "
कितना मधुर शब्द है
" रंग "
हम आनंद पाएं " रंग " से
हम स्पर्श पाएं " रंग " से
हम शुकून पाएं " रंग " से
हम सौन्दर्य पाएं " रंग " से
हम स्पंदन पाएं " रंग " से
हम आकर्षण पाएं " रंग " से
हम चैन पाएं " रंग " से
रंग रंग रंग
कितना अनोखा अद्वितीय है रंग
सदा संग संग चले यह रंग
नज़र में रंग
अधर पर रंग
मन में रंग
तन पर रंग
जीवन में रंग
रंग रंग रंग
रंग भरे प्रेम में हर रंग निराला
रंग से रंग उड़ाएं
रंग से रंग बिखराएं
रंग से रंग लिपटाएं
रंग से रंग डूबाएं
रंग से रंग मिलाएं
राधा श्याम हो भई
श्याम राधा हो भएं
🌷🙏🌷🙏🙏🙏🌷🙏🌷
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दादा उनके पौत्र को लेकर हररोज पुष्टिमार्गीय हवेली दर्शन करने आते 🙏

दर्शन आरती के बाद वह हवेली की चित्रकला, गौशाला, पुस्तकालय, सिंह - हाथी के पुतले पर बिठाते और चल पड़ते अपने घर।

जब भी कुछ दिखलाते तब वह वस्तु आदि का विवरण भी करते। पौत्र भी कभी कभी उनकी काली काली भाषा में कुछ न कुछ बोलता रहता। ऐसे आनंद मगन से दोनों दर्शन आरती करते - जय श्री कृष्ण करते - दोनों हाथों से नमन करते🙏

यह नित्य क्रम में आते हुए कहीं दर्शनार्थियों दोनों को पहचानने लगे थे। हर कोई उनसे आनंदीत होते थे और जय श्री कृष्ण करते 🙏

ऐसे कहीं महीने बीत गए, होली का त्यौहार आया, हर कोई हवेली में रसिया खेलें और अपने आपको धन्य करते स्व आनंद परमानंद में जीवन जीते थे। वह बालक भी अपने दादा के साथ आनंद उमंग संग रहता।

एक दिन बालक ने दादा से कहा - दादा! यहां पप्पा मम्मी को भी ले आएं तो वह भी कितने खुश होंगे, और आज होली भी है।

दादा ने कहा - अवश्य बेटा! घर में जीक्र करते पर कोई रिस्पांस नहीं मिला।

शाम हुई घर में ऐसे ही बैठे थे तब पौत्र बोला - दादा चलें हवेली!

दादा - पप्पा मम्मी को बोल - हम तो सुबह दर्शन आरती करके आएं है।

दादा! पप्पा मम्मी ना कहते है।

दादा पौत्र को लेकर हवेली पहुंचे - रसिया खेलें और घर आएं। पर दादा के मन में एक प्रश्न उठा था, बेटा बेटी दर्शन आरती करने हवेली क्यूं नहीं जाते है?

घर में भोजन प्रसाद लिया और दादा ने बात छेड़ी - बेटा! आप लोग हवेली दर्शन आरती के लिए समय निकालें, कुछ धर्म के बारे में पता चले।

बेटा विनम्र के साथ अपने पिताजी के पास आकर बोला - पिताजी! आपकी बात हम स्वीकार करते है, पर हवेली में ऐसा क्या करते है जिसमें हमें धर्म-ज्ञान, स्व जीवन चरित्र सत्यापन हेतु कोई कार्य हो। हर कोई कुछ न कुछ मांगने हेतु निवेदन करते रहे और अपने आपको समर्थ और श्री वल्लभाचार्य समान समझें, ऐसे आडंबर में हम मार्ग विहीन हो वहां कैसे जाएं?

आपका सम्मान के लिए जाएं पर उदवेग भरे जाना - वहां बिराजते श्री प्रभु को भी सही न लगे।🙏

बेटा का सत्य भरा वचनों सुनकर पिताजी को गर्व महसूस हुआ कि बेटा बेटी बहुत सही समझ से है।

क्रमशः

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" होली " की शुभकामनाएं 👍 🌷

तुम्हें रंग दूं और खुद रंग जाउं

तु मुझे रंग दे तो तु खुद रंग जाएं

है यह त्यौहार

रंग से रंग में एक हो जाएं

तुझे पसंद है गुलाबी कंवल रंग

सदा सजाएं तु अपने अंग अंग

मुझे पसंद है हरा हरियाली रंग

सदा लहराएं मेरा मन उमंग

आओ खेलें हम होली 🌷

गुलाबी रंग से तेरा आंचल रंगू

अंग अंग से प्रेम रंग में बांधू

थिरक थिरक तेरा जोबन नचाउं

भर पिचकारी तेरा दिल भीगाउं

आओ खेलें हम होली 🌷

नज़र नज़र से हर रंग चुराउं

हाथ साथ से फेर फुंदडी फेराउं

नाच नचनीयां से पायल छनकाउं

प्रेम रंग से प्रीत यौवन डूबो दू

आओ खेलें हम होली 🌷

होली है होली है होली है

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

જપીલે હરિ નું નામ રસાળ

કરીલે દર્શન રૂપ વિશાળ

સદા રહે તુ નિકટ ગોપાળ

દુનિયાનો આ યોગ માયા કાળ

સંસારની આ અહંકાર જંજાળ

ક્યાં સુધી હે તું અબુધ બાળ

જપીલે હરિ નું નામ રસાળ

એક એક ક્ષણ પ્રભુ ભાળ

જીવન છે ખૂબ વિકરાળ

કરશે તારું રક્ષણ સંભાળ

જપીલે હરિ નું નામ રસાળ

જપીલે હરિ નું નામ રસાળ

કરીલે દર્શન રૂપ વિશાળ

સદા રહે તુ નિકટ ગોપાળ

શ્રી અવધૂત સ્પર્શ 🙏

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

" मायका - पीयर "
मायका या पीयर हम उसे कहते है जहां से बेटी - दीकरी - पुत्री बिदा होती है 🙏
हर कोई स्त्री के जीवन में यह भूमि जुड़ी रहती है 🙏
" मायका - पीयर " हर कोई जानता है, समझता है, पहचानता है स्त्री के माता-पिता का घर - स्थल 🙏
" मायका - पीयर " का अर्थ हर कोई के दिमाग और जानने में है - मां का घर - मैका 🙏 पर यह सोच और जानना ग़लत है🙏
" मायका - पीयर " सही ज्ञान, भाव और समझ है - पिता का घर - पिता का प्रेम - पिता का रक्षण - सुलक्षण 🙏
नहीं नहीं! ग़लत🙏 योग्यता से, सभानता से, जागृतता से सोचें 🙏 अवश्य सत्य समझ आयेगा की - बेटी - पुत्री - दीकरी मूल भूमि क्या?
पिता का पुरुषार्थ और मां की ममता का जहां सिंचन होता है वह भूमि है - मायका - पीयर "
पिता का पुरुषार्थ जिसमें - प्रेम, वात्सल्य, रक्षण, शिक्षा, शिस्त, विश्वास, पवित्रता, निश्चिंतता, गर्व, हिम्मत केवल पिता से ही मिलती है🙏
वह चोखट एक बार पार कर दी 🙏
केवल पिता अकेला ही जानता है - मैं किसे बिदा कर रहा हूं 🙏
इसके लिए तो " कन्यादान " कहते है 🙏
बिदाई के बाद - एक एक कदम पर पिता के कदम, विचार, लाक्षणिकता, पुरुषार्थ पर ही सोचना, जीवन का मार्ग तय करना, जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना।
गहराई भरी बात है और हर कोई को पता है कि - यही सत्य है। 👍
मायके में - पीयर में किसीसे भी बात करेगी - पिता का जिक्र हमेशा करेगी। 🙏
पिता से कम बात करेगी पर कोई निर्णायकत्मक सलाह सूचन होगा तो अवश्य पिता का निर्णय पर अघिक विश्वास करेगी🙏
पिता को खरोंच भी आएगी वह हर ख्यालों से तत्पर होगी🙏
ऐसे ही पिता भी बेटी-पुत्री-दीकरी का हर परिस्थिति का ख्यालों में डूबा रहेगा और सदा तत्पर रहेगा उनकी हर उम्मीदें, ख्वाहिशें, इच्छाएं पूर्ण करने के लिए🙏
" मायका - पीयर " का सही अर्थ, योग्यता पिता की भूमि और भूमिका से ही निश्चित है 🙏
हर बेटी को समर्पित 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

१४० करोड़ व्यक्तिओं का देश - भारत देश

हर एक व्यक्ति " जय श्री राम " बोले - कितनी बड़ी गूंज

पूरा ब्रह्मांड राममय हो जाएं 🙏

हर एक व्यक्ति " सत्य आचरे " सत्य का आचरण करे

" सत्य नारायण " प्रकट हो जाएं 🙏

चारों ओर सत्याग्रह तो सतयुग जीवन हो जाएं

हर एक व्यक्ति " प्रेम ज्योत प्रक्टाय "

आनंद उमंग संग परमानंद हो जाएं🙏

घर घर नंदलाल एक एक गोपि गोपाल हो जाएं

एक एक व्यक्ति " धर्म कर्म सिद्धांत " स्वीकारें

सुख वैभव ऐश्वर्य में जीवाय 🙏

एक एक कुबेर हो जाएं

हर कोई व्यक्ति " बुद्धि मता " हो

ज्ञान विज्ञान जीवन हो जाएं 🙏

जीव जगत जन्म ब्रह्मांड का संज्ञान विद्वत हो जाएं - अहंकार अभिमान अविद्या आधि व्याधि उपाधि नष्ट हो जाएं

स्वभाव विजयो भवेत् 🌷🙏🙏🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राम " कितने अर्थ यह नाम के
वचन
सत्य
शिस्त
विद्याधर
संस्कार
विश्वास
मर्यादा
रक्षक
सम्मान
सेवा
मित्र
पुरुषोत्तम
सेवक
न्याय
एकांत
योद्धा
क्षत्रिय
निर्मोही
बलिदान
कृपालु
राम
🌷🙏🌷🙏🌷
" जय श्री राम " 🌷🙏🌷
मुझे पता है " राम " का अर्थ सब जानते है
पर
स्व स्वभाव से पहचानते नहीं है
अगर
स्वभाव विजयो भवेत् 🙏
तो अवश्य पहचानते
स्वभाव विजय करने - स्व को सत्य वचन विद्या व्यवहार के संस्कार पुरुषार्थ में जीना है। 🌷🙏🌷
“Vibrant Pushti “
" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

“अभिनंदन " अंतरिक्ष में जो वैज्ञानिक रिसर्च कर रहे है इनमें एक सफलता और पायी 👍

हम कितने ज्ञान उपासक है कि हमारे वैज्ञानिक अपनी पीपासु विद्यता हर क्षेत्र में प्रिंसिपल के साथ कदम बढ़ा रहे है।

सकारात्मक से समझना है कि

१. जाती से हम शोध नहीं कर पाएंगे

२. अपनी विद्वता दूसरे के सकारात्मक शोध में निर्णायक है - इनमें अपनी काबेलियत पर सब कुछ मिलेगा पर जैसे अहंकार अभिमान आया - सर्वनाश 🙏

३. हम इतने भाग्यशाली है कि हमारे ऋषि मुनियों ने अनेकों संशोधनों से सिद्धि प्राप्त की है पर हमारी नजर उनके बदले प्राश्च्यात की ओर - जो भौतिक सुख सुविधाओं से सुसज्जित में आकर्षित करते है, इसके बदले स्वयं ही उत्पादित करके जगाएं 🙏

४. हमारे ऋषियों साघन संपन्न नहीं थे तो भी अनेकों संशोधन किये, कैसे? उनकी धैर्यता और स्व विश्वास से 🙏

५. स्वायत्तता 🙏 न कभी परावलंबी 🙏

६. कहीं प्राध्यापक रीटायर्ड हट है, वह स्व का उपयोग सही दिशा में करना है 🙏

७. पता नहीं पैसा ही सब कुछ! कमाल है!

८. एक व्यक्ति बताओ जो पैसा से सुख वैभव ऐश्वर्य पाया? गांव के पेड़ के नीचे बैठा व्यक्ति जो आनंद से पर है

हां! अगर कोई उन्हें गुमराह न करे! 🙏

९. एक एक व्यक्ति किसीको भी गुमराह करें! तो हम अंतरिक्ष तो क्या रज, ज़र्रा, कण, घड़ी न मिल पाते है - बैल की तरह पूंछ उछालते फिरते है। 🌷🙏🌷

१०. कब हम ज्ञान उपासक बनें!

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " " जय श्री राम " जय श्री भोले "

हिन्दुस्थान में तो हर ओर सनातन ही सनातन

हर कोई एक दूसरे को - " जय श्री कृष्ण " करते हैं 🙏

हर कोई एक दूसरे को - " जय श्री राम " करते हैं 🙏

हर कोई एक दूसरे को - " जय श्री भोले " करते हैं 🙏

व्हाट्सअप पर चित्र जी - दर्शन - सत्संग और क्या क्या 🙏

फेसबुक पर - कथा, आरती, प्रवचन और क्या क्या 🙏

हर कोई भक्तिमय - प्रभुमय - सेवामय 🙏

कोई भी उत्सव, मनोरथ, सेवा सूचन, पुस्तक, कथा आदि सब डिजिटल मीडिया पर 🙏

जिससे कोई भी देखें, सुने, पढ़ें और भक्त हो जाएं 🙏

हिन्दुस्थान के हर व्यक्ति की भक्ति डिजिटल मीडिया पर 🙏

हिन्दुस्थान की बहुत बड़ी उपलब्धि 👍

सनातन - सनातन - सनातन 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

प्रार्थना करते हैं 🙏

सबको सन्मति दे भगवान🙏

हर एक इच्छा पूर्ण करो भगवंत 🙏

फिर से हो जाएं गंगा पवित्र 🙏

फिर से हो जाएं यमुना प्रेममय 🙏

सबको मेरा नमन 🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" साधु नाम दर्शनम् पुण्यम् "
शिष्ट व्यक्ति 🌷
सदाचार व्यक्ति 🌷
विद्यावान व्यक्ति 🙏
निष्ठावान व्यक्ति 🙏
विश्वासपात्र व्यक्ति 🙏
आदर्श व्यक्ति 🙏
विशुद्ध व्यक्ति 🌷
पवित्र व्यक्ति 🌷
जो व्यक्ति को देख कर स्व में आनंद जगे
जो व्यक्ति को देख कर अपने आप शीश नमे
जो व्यक्ति को देख कर सत्यता प्रकट हो
जो व्यक्ति को देख कर प्रेम पले
जो व्यक्ति को देख कर उत्स बढ़े
जो व्यक्ति को देख कर स्फूर्ति जगे
" साधु नाम दर्शनम् पुण्यम् "
व्यक्तित्व की श्रेष्ठ पहचान है 🙏
व्यक्ति को देख कर अपशब्द स्फूरे
व्यक्ति को देख कर क्रोध उठे
व्यक्ति को देख कर वासना जागे
व्यक्ति को देख कर जूठ पले
व्यक्ति को देख कर घृणा भड़के
हम हमारी पहचान अपने आप कर सकते है
पैसा, धन दौलत, रुप आडंबर से उच्चता नहीं कर सकते
अपनी द्रष्टि अपनी वाचा अपनी कार्यशैली अपनी वैचारिकता से हर कोई पहचान सकते है - हम कौन है - क्या है - कैसे है?
" साधु नाम दर्शनम् पुण्यम् " 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे कहीं ओ ने कहा
समय के मुताबिक संबंध बनाना नहीं तो कुछ भी हो सकता है।
क्या हो सकता है?
बरबाद
कहीं नहीं का
एकेला
कोई नहीं किसी का
भूला भटका
रास्ता पलटना
नज़र अंदाज़ करना
बार बार टिप्पणी
काम निकला
बात टली
न कोई साथी न कोई भाती
मैं सोचता रहा - सोचता रहा - सोचता रहा
क्यूं ऐसा?
मैं सहमा गया, क्या जमाना! क्या फसाना!
संस्कार, संस्कृति, धर्म, फर्ज, ऋण ऐसे वचन, कवन कहां गए?
टटोल टटोल टटोल!
सोचता ही रहा - सोचता ही रहा
कैसा परिवर्तन! कैसी स्थिति!
मैं जी रहा हूं ऐसे काल में!
कुछ तो करना पड़ेगा 👍
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
कदम कदम जो हर कोई चलें 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

" वैराग्य "
कितना श्रेष्ठ शब्द जीवन का 🙏
वैराग्य शब्द कहीं बार सुना
समझा इतना की सबकुछ त्याग करके जीवन जीना उसे वैराग्य कहते है 🙏
श्री कृष्ण का जीवन वैराग्य जीवन
श्री शंकर का जीवन वैराग्य जीवन
श्री आचार्य का जीवन वैराग्य जीवन
ऋषि मुनियों का जीवन वैराग्य जीवन
संत का जीवन वैराग्य जीवन
धैर्य से समझना है - वैराग्य
वय - वय अर्थात जीवन का समय
जन्म से लेकर यह क्षण - वय
बचपन बिलकुल निश्छल 🙏
बचपन से युवानी - शिक्षा संस्कार विद्या
वैवाहिक जीवन - संस्कार, शिक्षा और विनयशील - एक तपस्वी आधारित निरपेक्ष जीवन 🙏 जिसमें मौलिकता, विद्वता, सुशीलता, जीवन मूल्यता, स्वावलंबी 🙏
राग - अपेक्षा, इच्छा, भौतिकता, स्वार्थ, आडंबरता, अभिमान, द्वेष, ऊंच-नीच, निम्नता, रोगी, भोगी, द्रोही, लोभी, मोही, परावलंबी, आधि व्याधि उपाधि का त्याग किया हो 🙏
अय - अयन अर्थात तपस्या - क्षण क्षण निरपेक्षता - न सोचना, न विचार में लाना, न ख्याल करना, जीवन में नहीं प्रवेश करवाना, अपना स्वमान अडग रखना 🙏
सैद्धांतिक और सत्य आधारित शिस्त, संयम का पालन करना 🙏
" वैराग्य "
राजा परीक्षित 🙏
आचार्य श्री वल्लभ 🙏
श्री राम 🙏
श्री कृष्ण 🙏
श्री बुद्ध 🙏
वैवाहिक जीवन - विशुद्ध और पवित्र
यही वय में " वैराग्यता " जीवन उत्कृष्ट - उत्तम 🙏
वैराग्य की महक - महत्ता - मधुरता 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" ज्ञान विज्ञान प्रज्ञान "

" भाव विभाव प्रभाव "

हमारे ऋषियों मुनियों चिंतन अध्ययन और ज्ञान की प्रतियोगिता करते थे - जो जीते उनके मार्गदर्शन और न्यायिका में जीना🙏

गुरुकुल रीत सदा चली आई जो ज्ञान विज्ञान और प्रज्ञान सींचे 🙏

जिसमें धर्म कर्म और वर्ण जीवन जीएं।

परिवर्तन परिवर्तन से जो जो साम्राज्य आएं - बहुत कुछ सैद्धांतिक, आचार विचार शिल - ज्ञान वर्धक की पद्धति पर इतना परिवर्तन आया की हम मूलत्व खो बैठे - विद्या विनय मंदिर नष्ट कर दिया। अपने पूर्वजों भौतिक और शारीरिक सुख में डूब गए। नष्ट कर दिया सत्य जीवन और बतंगड़ करने लगे - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग। 🙏

खुद ने न शिक्षा ग्रहि और भावनात्मक रूप रंग में लिपट गए।

आज़ भी हम वही प्राचीन चरित्रों और ग्रंथों से शिक्षा प्राप्त करते है - स्नातक बनते है पर भौतिक और शारीरिक सुख वैभव पर ही केन्द्रित है। 🙏

जहां जहां नजर घुमाये हर नजर पर पैसा 🙏

कितनी बड़ी उपलब्धि से हम हमारा और अपने वंशजों का जीवन मार्ग सींचते है! हम खुद पैसा से नापतोल करे तो हमारी पीढ़ियां क्या कम होगी! 👍

हम खुद न बदले तो क्यूं बदले ज़माना!

प्राश्च्यात भूमि पर हमारे ही पुत्र पुत्री जाएं और वह ही हमसे हैरान तो कैसे है हमारा ज्ञान ध्यान और विधान!

इसलिए तो अखा कवि ने कहा

" औरों को मूर्ख कहते रहते कभी खुद की मूर्खता पर जीवन धोया "

ऐसे बीज रोपते गए जो खुद की खांट थोपते गए " 🌷🙏🌷

स्नातक बने खुद और खुद संस्कार संस्कृति से तुट गए और कहते फिरते है - बनावट की दुनिया सबको निपट कर तोड़ दिए।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

मुझसे है जमाना - नहीं जमाना से मैं

जमाना जमाना करते हर कदम बढ़ाता हूं

तो कौन ....

🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अभिनंदन 🌷

एक और प्रार्थना हमारी सफल हुईं 🙏

हमारे देश की बेटी सुरक्षित अंतरिक्ष से धरती पर आईं 👍

हम सभी नासा और स्पेश एक्ष की टीम को यह उपलब्धि की बधाई देते है 👍

हमें गर्व महसूस करना है और हिम्मत, धैर्य, योग्यता से हम सभी अपने आपको और अपने पुत्र पुत्री को भी ऐसी विद्या, विज्ञान में उच्च शिक्षित हो कर स्व सम्मान बढ़ाएं।

ज्ञान विज्ञान और प्रज्ञान की परिभाषा को समझे 🙏

व्यक्ति को भ्रष्टाचार, दुराचार, निराधार और व्यभिचार से मुक्त होने के लिए अपने आपको प्रखर योद्धा बनाना है 👍

दारू पीने से

अच्छे आभूषण से

दूसरे पर रूआब करने से

धूर्त और बलिष्ठ कर्मों से

विश्वासघात करने से

हम अपने आपको निम्न न बनाएं

चलो कदम बढ़ाएं -

उच्च प्रशिक्षण का 👍

सत्य न्याय का 🙏

पवित्र व्यवहार का 👍

"Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रीत भरी मटुकी मेरो प्रियतम फोडे

भर भर यमुना नीर मेरो मोहन मोडे

छलक छलक मेरा मन भिगोउं

मन मोहना में डूबकी लगाउं

मोहे मेरो रसिया छेडे

अंग अंग तरसाये

प्रीत भरी मटुकी मेरो प्रियतम फोडे

नयन नयन मेरो साँवरियो तरसे

घडी घडी बंसी सूर रेलाएं

मोहे मेरो बावरियो पुकारे

तील तील तडपाये

प्रीत भरी मटुकी मेरो प्रियतम फोडे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

सुबह ६ बजे तन मन धन की शुद्धि करके निकल पडे चलते चलते श्री कल्याणरायजी प्रभु के हवेली की ओर मंगला दर्शन आरती के लिए 🙏
हररोज की यह वेला श्री भक्त की जिज्ञासा और श्री प्रभु की कृपा🌷
टहलते टहलते मन संकल्प करके की आज श्री प्रभु हमसे बात करेंगे🙏
ऐसी जिज्ञासा विनंती श्री प्रभु के चेहरे पर साफ दिखाई देती पर श्री प्रभु अपनी मर्यादा में रहते🌷
पर पता नहीं आज़ श्री कल्याणरायजी श्री प्रभु ने अपनी द्रष्टि को खोलकर वह नियमित सेवा अर्चन करते श्री भक्त पर स्थिर हो गई 🙏
वह श्री भक्त की नज़र श्री प्रभु के कृपा चक्षु पर ठहर गई - जो हररोज मंगला दर्शन आरती समय पर ठहरती है ऐसे स्थिर हो गई 🌷
चार नयन एक हो गए 🙏
श्री भक्त के हृदय से आंतर नाद उठा 🌷
"श्री कल्याणराय प्यारे की जय "
यह आंतर नाद से हवेली में एक गूंज उठी - " श्री कल्याणराय प्यारे की जय " 🙏
वह श्री भक्त दंडवत प्रणाम करके श्री प्रभु के समक्ष अपलक हो गया 🌷
दो नैना एक हो गए 🙏
सारे दर्शनार्थियों एक ही स्वर में बोल उठे - धन्य हो गया 🌷 🙏 🌷 👍
श्री भक्त गुनगुनाने लगा
एक नज़र आज़ ऐसी जागी
दिल खो गया
मन ठहर गया
मुझको क्या हो गया
न मैं अपना रहा 👍
मुझे कोई खींच रहा है 🌷
अपने नयनों से श्री प्रभु मुझे बांध रहे है।
चैन आता नहीं खुद को लुटाता गया👍
श्री कल्याणराय प्यारे की जय 🙏
श्री भक्त जहां वहां से श्री प्रभु पर नज़र करता है वहां वहां श्री प्रभु उन्हें अपने नैनों से ओझल नहीं करते 🙏
अतूट विश्वास 🙏
" Vibrant Pushti “
"जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे श्याम!

जो न मिट सके वो विरह हूं

जो न ठहर सके वो इंतजार हूं

है यह ख्वाहिश तेरे दर्श की

वह न पा सकू तो कैसे जी पाऊं

जो न तुट सके वह बंधन हूं

जो न ठुकराएं वह उल्फत हूं

है यह प्रीत तेरे जनम की

वह न निभा सकू तो कैसे मृत सकू

है यह उल्फत में मेरी पूजा

जो वफ़ा करुं मैं सूफा करूं

🙏🙏🌷🙏🌷🙏🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक कथाकार " श्री राम चरित मानस " की चौपाईयों पर अपना ज्ञान, भाव और विचार प्रस्तुत कर रहे थे इनमें उन्होंने प्रारंभिक एक सूत्र -

" हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे "

" हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे "

यह सूत्र का बार बार उदघोष किया 🌷

अंत में बताया - यह सूत्र जीव की हर इच्छा, महत्वकांक्षा, अपेक्षा पूर्ण करता है, अगर इसका उद्देश्य, नियम , उर्जा और विश्वास सही में स्वीकार्य हो। 🌷

ओहहह! अनेक जिज्ञासुओं ने व्रत ले लिया, यज्ञ ले लिया, तपस ले लिया 🙏

बिलकुल विश्वास और धैर्य से वह यह सूत्र का अपने जीवन का परमोत्तम मंत्र - मन मंत्र, कर्म मंत्र, धर्म मंत्र में एकात्म कर लिया। 👍

समय पर्यांत उनके मन, तन धन और जीवन में आमूल परिवर्तन आने लगा 🙏

उनकी दृष्टि में करुणा

उनके मन में विशुद्धता

उनके तन में निरोगता

उनके धन में पवित्रता

उनके जीवन में एश्वर्य, आनंद और शांति की घटमाळ परख ने लगी 👍

कौटुंबिक वंशवेल उर्जावान और निष्ठावान आंगन में महकने लगी 🌷

समृद्धि, प्रबुद्धि, धर्मिष्ठा प्रखर ने लगी। सामाजिक वैभव, सेवा समर्पित करने लगे 🙏

और हर एक को यह सूत्र

" हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे "

" हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे "

का मार्मिक और आध्यात्मिक असर का माहात्म्य शिक्षित सिंचन करते रहे 🙏

अनेक सामाजिक सांसारिक जागतिक विडंबना, परिस्थिति आईं पर सदा सुरक्षित 👍

आज भी वह कौटुंबिक वंशवेल आनंद विभोर में अपना जीवन संस्कार महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटका और पूर्वांचल में अविरत गंगा बहाते है 🙏

शायद हम भी ऐसे है! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हवेली दर्शन और श्री वल्लभाचार्य जी का ज्ञान भाव और जीव जीवन नियमन शिक्षण आधारित 🙏 निरपेक्ष, सदाचार, करूणानिधान, सत्याग्रही से जीवन व्यवस्थित करते करते मुझमें न्यायिक, पावित्रिक, नि: स्वार्थीक, नि: संशयी धारा सिंचित होने लगी 🙏

श्री वल्लभाचार्य जी के प्रति आदरता, विश्वसनीयता, विनम्रता, सम्मानितता और समर्पणता का ज्ञानोदय मुझे आनंद परमानंद और शांतता प्रतिपादन कर रहा था। मेरा यह आमूल परिवर्तन मुझमें ऐसी उर्जा प्रज्वलित कर रहा था कि मेरे नैनन, मनन, तनन, धनन और जीवन में आद्र्रता, दासत्त्वता का आध्यात्मिक वैराग्य जागृत कर दिया था। 🙏

मेरा मन श्री वल्लभाचार्य जी के शरण और चरणों में समर्पित होने को बार बार संकेत कर रहा था। 🙏

मैंने निश्चय किया कि आज़ दिक्षा ग्रहण किया जाय 🙏 मैं नीति नियमन संस्कार आधारित दिक्षा के लिए जैसे उनके शरणागत हुआ 🙏 तुरंत उन्होंने मुझे अपने पास बिठाकर कहीं बातें निश्चित की, मेरा मन संशयविहिन हो गया 🙏 मैंने मेरा सर्वस्व न्यौछावर कर दिया🙏

मुझे ब्रह्मसंबंध की दिक्षा से शिष्यत्व प्रदान किया🙏 श्री श्रीनाथजी सम्मुख मेरा निवेदन और विनंती करके श्री श्रीनाथजी की आज्ञानुसार मेरा स्वीकार किया🙏

मुझे गृहसेवा की आज्ञा से मेरे प्रबोध जीवन की आरंभिकता प्रारंभ कर दी🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" माता-पिता "

हमारी संस्कृति में " श्रवण " " पुंडरीक " चरित्रों हर हिन्दू व्यक्तित्व जानता है।🙏

हर चरित्र में श्री प्रभु का साक्षात्कार की अनुभूति करवाता है।

हर भारतीय यह चरित्रों को इतनी गहराई से पहचानते है कि उनकी यथार्थता सार्थकता योग्यता उनके हर विचार चिंतन और अध्ययन में बसा है।

सच है ना?

हां!

तो हमारे माता-पिता के लिए क्या करते है?

तो हमारे पति या पत्नी के माता-पिता के लिए क्या करते है?

हम माता-पिता बनते है तो क्या सोचते है?

ऐसा क्यूं?

खुद " माता-पिता " की योग्यता समझते है?

नहीं 🙏

ओहहह! तो " माता-पिता " की योग्यता न पाई 🙏

तो सुख वैभव ऐश्वर्य आनंद कैसे मिले?

चाहे पैसा हो

चाहे सोना झवेरात हो

चाहे माल मिलकत हो

पर हम खालीपन की ही अनुभूति करते है

क्यूं?

ओहहह! माता-पिता 🙏

" माता-पिता "

युवानी में माता-पिता की योग्यता पायी हो तो ही माता-पिता की भूमिका पर क़दम बढ़ाना है। 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

देश का नागरिक क्या कर सकता है!

एक मिकेनिकल इन्जिनियर अपनी पढ़ाई पढ़ते पढ़ते ऐसे प्रिंसिपल और तकनीक सीखा की जब भी कोई पुराना प्रोजेक्ट कोई कारण और बिना कारण बंध हो जाता या रुक जाता तो वह प्रोजेक्ट वह इतने कम समय में योग्य प्रमाणों से पूरा करता की हर कोई दंग रह जाते और तुरंत कहते - वाह! क्या काम किया है! 👍

बस! ऐसे ऐसे वह एक के बाद एक ऐसे कितने प्रोजेक्ट देश के पूर्ण किये की हर गवर्नमेंट उन्हें ऐसे अधूरे काम उन्हें सौंप कर पूरा करवाने लगे।

एक राष्ट्रपति के नज़र में यह मिकेनिकल इन्जिनियर आया और उन्हें देश का इन्फ्रास्ट्रक्चर का मंत्री पद की जिम्मेदारी सौंप दी। 👍

देश का हर इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट समय और पैसे की सही लागत से तय किये वचन आधारित पूर्ण होने लगे। पूरा देश उनकी लायकात से प्रेरित होकर जबरदस्त प्रगति करने लगा। उन्नति और विकास की डोर सारे देश को समृद्ध और शक्तिशाली की उच्च कक्षा पर ले पहुंचा। सारे विश्व में वह देश का डंका बजने लगा👍

वह देश विश्व की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित है।

एक इन्जिनियर क्या कर सकता है! सलाम है👍

बस! राष्ट्रपति ने नियम बनाए - देश के गवर्नर, संसद सभ्य, विधान सभ्य, कोर्पोरेटर - जो गवर्नमेंट संस्थाकिय विभाग हो उनमें निपुण अधिकारी ही नियुक्त हो। 👍

एक देश का नागरिक क्या कर सकता है 👍

" Vibrant Pushti “ 🌷 🙏 🌷

" शबरी "
एक भील राजकुमारी 👍
छोटी सी उम्र में विवाह 🙏
विवाह में रीति रिवाज आधारित दान बलिदान 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
माता-पिता कबिला के अधिकारी
उनका महल और दास दासी
अनेकों प्रकार के गहने आभूषण कपड़े झर झवेरात
आसपास सलामती के सैनिकों
ओहहह! कितना सुख, वैभव और ऐश्वर्य
उपर से सुंदर वान हर कोई आकर्षे
एक अशिक्षित कन्या केवल माता-पिता के इतना ही संस्कार - बेटा! न किसी का लेना - न बिन मेहनत खाना और न कभी हिम्मत हारना - सदा श्री प्रभु पर विश्वास रखना 🙏
बाल विवाह में मूंगे प्राणओं की हत्या 🙏 जानी और वह भागी 👍
छोड दिया महल बंगला, झर झवेरात, पैसा आभूषण. अनेक प्रकार के सुख साधनों🙏
भागी विरह बीहड़ वन जंगल 🌷 जहां बसे जंगली हिंसक पशु प्राणीओं - न डर, न भय, न हिचखिचाट, न उचाट, न खेद 🙏
न वर्तमान, न भविष्य 👍 बस ढ़ड संकल्प
कहीं रात दिन चलकर लपककर आवाज दबाकर दिशा शून्य में भटक भटककर न प्यास और भूख 🙏 बस एक ही संकल्प - दया करुणा और प्रेम🌷
मैं सोचता हूं - आजकल तो हर स्त्री पात्र पैसा, वैभव, राच रचिलु, माल मिलकत, धन दौलत, गाड़ी बंगला, झर झवेरात आभूषण, कपड़े लता पत्ते के लिए तो बेबाकाळ, तरस, तडप, आकुल व्याकुल और स्वरुप वान दिखने अनेकों प्रकार के संसाधनों औप पारिचारिका 🌷 आराम और भटकने की सुविधाएं 🙏 यह पाने के लिए अनेकों व्रत, बाधा, धागा, दान उपवास और आदि आदि मान्यताओं पर दौड़ना, लड़खड़ाना, भटकना, झुकना, खोना और डूबना 🙏 अंधविश्वास में लूटना और लूटाना 👍
मेरी बेटी अच्छा पढ़ें और अनेकों सुख वैभव ऐश्वर्य पाएं 🙏
रूपवान, धनवान, गाड़ीवान, सुखवान, कामवान, सेवकमान, बॉडीगार्ड, पति, रति और गति क्रियावान आदमी चाहिए 🙏🌷🙏🌷🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
कितने ज्ञान विज्ञान और महानता के उपासक 👍
स्वार्थ, लोभ मोह माया से भरपूर व्यक्ति चाहिए 👍
अपेक्षा, इच्छा, मान सम्मान अहंकार अभिमान राग से उपाध्यक्ष साथी चाहिए 👍
नेता, अज्ञान, गाली गलौज, लड़ते झगड़ते संबंधी चाहिए 👍
कितने महान है हम की हर तरह का ख्याल करके ही विवाह करना 👍
कितने प्रतिष्ठित है हम की हर सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कुछ भी करना 👍
शाम दाम दंड भेद ही श्रेष्ठ ज्ञानी, पुरुषार्थी, उच्च न्यायिक चरित्र 👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
क्रमशः 🙏

भागते भागते शबरी इतने घने जंगल में पहुंची जहां चारों ओर सन्नाटा था, निरव शांति और ऐसा उदीप्त वातावरण जहां केवल एकांत, न कोई कोलाहल और न कोई चहल पहल। शबरी लपक कर एक पेड़ पर चड गई और अपना आश्रय स्थान बना दिया।
इतने में उन्होंने पैरों की आहट सुनी वह सहमा गईं और पेड़ की डालियों में खुद को छूपा दिया। वह आहट धीरे धीरे उनकी ओर बढ़ रही थी, जैसे नजदीक आईं तो उनकी व्याकुल नज़र ने देखा दो ऋषियों कहीं जा रहे थे, वह आखिर तक देखा तो दूर अनेकों कुटिया और आश्रम जैसा कुछ था। थोड़ी देर के बाद अंधेरा हुआ तो वह लपक लपक कर वह कुटिया की ओर पहुंची, देखा एक आचार्य अपने शिष्यों के साथ शिक्षा और सत्संग कर रहे थे। उन्होंने दूर से प्रणाम किया और अपने पेड़ पर जा बैठी। केवल शांति और गाढ़ अंधेरा। थकी हुई शबरी नींद में डूब गई। 🙏
पंखीओं का कलरव सुन कर उनके नयन जाग गए, वह झट से नीचे जाकर न...
" शबरी "
मुझे अवश्य पता था की " शबरी " का यह लेख सबको पसंद आएगा 🙏
" शबरी की आत्मीयता "
शबरी हर रात को पूरे आश्रम की साफ़ सफाई और फूलों की महक से सारा आश्रम खुशनुमा हो जाता था।
आश्रम के आचार्य और शिष्यों ने कहीं बार ढूंढने की कोशिश की - यह साफ़ सफाई और फूलों का सिंचन इतनी सुंदरता से मावजत कौन करता है। आचार्य भी चकित हो गए थे, हर शिष्यों के मन में ऐसा था कि कोई शिष्य अपने आप बुहारी करते रहते होंगे।
एक दिन आचार्य ने सत्संग सभा का आयोजन किया - सब ऋषियों यह आश्रम की साफ़ सफाई पर विशेष बात करते नज़र आए, जब उन्हें पता चला कि कोई शिष्य नहीं पर कोई बाहर का व्यक्ति यह सेवा करता था। 🙏
आचार्य ने सबको चौकाया और कहा कड़ी निगरानी रखें - कौन यह बुहारी करता है?
एक एक शिष्य अपने आपको को निहारने लगा कि - मैं नहीं तो कौन?
समय बहता गया, एक रात आश्रम के आचार्य रात को ऐसे ही टहलने निकले तो देखा एक स्त्री साफ़ सफाई कर रही थी, वह चकित रह गए - हमारे आश्रम में स्त्री! हम ब्रहमचर्यव्रत धारी, यह कैसा घनघोर पाप! वह गुस्से में आग बबूला हो गए। सब शिष्यों को बुलाया और कहा यह किसकी हरक़त है? यहां स्त्री कौन लाया?
सब नतमस्तक खड़े रह गए।🙏
आचार्य ने शबरी को बुलाया और प्रश्नों की झड़ी लगा दी। शबरी रोती रोती सब बात बताई 🙏
भील थी पर उच्च संस्कामय थीं, आचार्य ने उन्हें दिक्षा प्रदान की और सदा के लिए आश्रम की बुहारी की सेवा उन्हें संभालने की जिम्मेदारी सौंप दी।
क्रमशः
" शबरी " अपने नियम और सेवा में इतनी मुग्ध और एकात्म हो गई की आश्रम के आचार्य और पूरा शिष्यगण जो ब्रहमचारी थे उन्हें भी परमतत्वीय का अनुभव से स्त्री तत्त्व के सिद्धांत को पर कर दिया था और अद्वैत के ज्ञान के साथ स्वैकार्य अनुमति प्रदान कर दी। 🙏
काल अपना कार्य करते चला, एक दिन आश्रम के आचार्य श्री मतंग ऋषि ने शबरी को बुलाया और कहा - बेटी! हम सभी तुम पर अति प्रसन्न है 🙌। हम सभी यहां से प्रस्थान होंगे और हमारी

परमगति को पाएंगे 🌷 तुम हमसे जो मांगना चाहती है वह मांगो 🙌 हमारा आशीर्वाद और तपस्या शक्ति तुम्हें अर्पित करते है। तुम्हें एक और बात कहते है की तुम्हारी तपस्या से यहां परब्रह्म परमात्मा श्री राम तुम्हारी कुटिया में पधारेंगे 🙌 तो तुम्हें उनकी प्रतिक्षा में यहां रहना है।
शबरी ने श्री आचार्य को दंडवत प्रणाम किया 🙏 सर्वे शिष्यों को प्रणाम किया ओर बोली - हे प्रभु! मैं तो अबुध और अज्ञानी जीव मैं आपसे क्या मांगू? मेरा जीवन का एक ही कर्तव्य है - सेवा 🙏
जो मुझे निरंतर करनी है और अविरत बहानी है🙏
न तो कोई मेरी अपेक्षा है और न कोई महत्वकांक्षा, बस केवल आपका सानिध्य और आपकी सेवा 🙏
श्री आचार्य मतंग ऋषि और सारे शिष्यों चकित रह गए। एक अबुध अज्ञानी जीव हम तपस्वी मन तन और आत्मीय एकाग्र से शिक्षा और साधना में ब्रहमचर्य व्रत का पालन करते परब्रहम की अनुभूति करने संसार का त्याग किया है और वैराग्य जीवन में रहे, यह स्त्री तत्त्व बिना त्याग वैराग्य तपस्या परब्रहम परमात्मा पाएंगी🙏
अदभुत अविरल अद्‌वितीय अलौकिक 🙏
" शबरी " 🌷 🙏 🌷
श्री मतंग ऋषि ने कहा हे परम वैष्णव दासी 🙏
तेरी सेवा और भक्ति से पूरा लोक परलोक आनंदमय है और परब्रहम परमात्मा तुम्हें मिलने को आतुर है 🙏
तुम मांग लो! मैं ऐसा तुम्हें आआज्ञा भी नहीं कर सकता क्यूंकि तुम महान तपस्विनी स्वयंप्रभा हो 🙏
हम तो केवल तुम्हें निवेदन कर सकते है तय करना तुम्हारा सम्मान है। 🙏
शबरी ने दो हाथ जोड़े और बोली - हे सत्य वचनिय आचार्यवर!
मैं एक कबीले की कुंवरी, मेरे पिताजी के पास अढळक धन दौलत शौहरत और माल मिलकत, महल, दास दासी, नौकर चाकर, संपत्ति सम्मान और स्वरुप वान जिससे मुझे न सुख मिला न वैभव मिला न ऐश्वर्य मिला न शांति मिली न जीवन मर्म मिला - मिला तो गृहत्याग - जो आडंबर और अहंकार और अभिमान की संगत रंगत और अंगत की सांसारिक मान्यताओं से 🙏
संसार की हर स्त्री यही चाहती है - गाड़ी मिले, बंगला मिले, सुख वैभव ऐश्वर्य और सम्मान मिले।
मुझे आश्चर्य होता है की सही जीवन, संसार और समाज ऐसी वस्तुओं से नहीं पर स्व जागृतता, स्व योग्यता, स्व संस्कार, स्व पुरुषार्थ से प्रेम, आनंद, शांति, सत्संग, सिद्‌धि, संस्कृति मिलती है। जो न कोई लूटे और तोड़े 🌷
हे आचार्य! शिस्त, विश्वास, शिक्षा, धर्म का मूल्यांकन ऐसी विद्‌या से सिंचित होते है।
आज संसार, जगत, दुनिया में खलबली, हाहाकार क्यूं है? स्वार्थ, जूठ, फरेबी, संशययुक्त जीवन स्त्री की वृत्ति पर आधारित है। 🙏
मुझे तो आपकी सेवा का ही धर्म समझ में है। जो मुझे तेजस्वी, समद्रष्टि, समानता, विवेक, विनय और सत्यार्थी से ही निश्चित मिलते है। 🙏
श्री आचार्य! आपकी कृपा और भक्ति सभर आशीर्वाद ही मेरी कृतज्ञा है। 🙏
मुझे सांसारिक वस्तुओं नहीं चाहिए🙏
मुझे मेरा जीवन उत्कृष्ट और आनंदमय कृति, प्रवृत्ति और निवृत्ति चाहिए। 🙏
मुझे आडंबर, अनपढ़ता नहीं चाहिए 🙏

एकाग्र से डूबे श्री आचार्य!
मुझे तो आप जो भी जीवन रस की उत्तमता चाहिए, जो निराली, वीराली, नि:संदेह आनंद चाहिए जो मैंने आपके सानिध्य से मिला है। बस इससे ही जीवन गुजारा कर लूंगी 🙏
श्री आचार्य मतंग अति प्रसन्न हो गए। इतनी अदभुत पहचान! 🌷
इतना अखंड ज्ञान 🌷
इतनी अनोखी सिद्धि 🙏
इतना उच्च जीवन 🌷
इतना पवित्र भक्ति रंग 🌷
मुझे और क्या चाहिए?
आप हम पर कृपा बनाए रखे🙏
श्री आचार्य गद गद हो गए और तुरंत उठ कर शबरी को आशीर्वाद दिया, कहा बेटी तेरे घर " श्री राम पधारेंगे 🙏
सुनते हुए शबरी आकुल व्याकुल हो गई। दंडवत करते श्री आचार्य को अपने आपको समर्पित करने की विनंती करी 🙏
क्रमशः
" Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🔴🌷🔴🌷

" प्रेम "
श्री कृष्ण लीला
राधा श्याम लीला
गोपि गोपाल लीला
मीरा गिरिधर चरित्र
सूरदास श्याम चरित्र
चैतन्य महाप्रभु श्री हरि चरित्र
प्रेम - स्त्री पुरुष रुप स्वरूप है ही नहीं
प्रेम - स्त्री सखी और सखा है ही नहीं
प्रेम में वासना, उपासना, धारणा, मानना नहीं है
प्रेम तो अलौकिक, अदभुत और अनोखा अखंड और अटल है।
प्रेम नि:कलंक है, निर्मल है, विशुद्ध,
नि:स्वार्थ है, नि:कपट है, पवित्र है।
प्रेम में न कोई नियामक व्यवहार है।
नजर से नजर मिली- प्रेम है? नहीं
विचार से विचार मिले - प्रेम है? नहीं
मन से मन मिला - प्रेम है? नहीं
तन से तन मिला - प्रेम है? नहीं
प्रेम - आत्मा से है
प्रेम - विश्वास से है
प्रेम - विरह से है
प्रेम - वैराग्य से है
प्रेम त्याग से है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
क्रमशः
" Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण "

मानव संशोधन में मानव क्या चाहे?
मानव संसाधनों में मानव क्या चाहे?
मानव संस्कारों में मानव क्या चाहे?
मानव जीवन में मानव क्या चाहे?
पूर्वजों पूर्वजों को टटोलता आया 🙏
मानव संशोधनों में मानव ने चाहा - सभ्यता 🙏
मानव संसाधनों में मानव ने चाहा - परिवर्तन 👍
मानव संस्कारों में मानव ने चाहा - प्रेम 🌷
मानव जीवन में मानव ने चाहा - शांति 🙏
मानव केवल चाहे - आनंद 🥰
तो भी मानव क्यूं ऐसा?
सब कुछ पता होने से यही धारा में मानव क्यूं विखवाद करे?
परिवर्तन में तारने का - प्रगति और विकास करना 👍 तो भी मारने का, संहारने का 🙏
यह आकाश ✅
यह धरती ✅
यह सागर ✅
यह वायु मंडल ✅
यह सूर्य ✅
यह इन्द्रियों ✅
यह बुद्धि ✅
यह प्रकृति ✅
यह धर्म ✅
यह स्वतंत्रता ✅
यह स्वभाव ✅
यह मन ✅
यह तन ✅
यह हृदय ✅
क्यूं है?
सभ्यता 👍
प्रेम 👍
शांति 👍
आनंद 👍
क्यूं मानव जीव सृष्टि को हिंसक घटे?
क्यूं मानव पशु जीव सृष्टि को हिंसक घटे?
संस्कार - सभ्यता - प्रेम - प्रगति प्रिय मानव संशोधनों 🤝
तो कर्म का सिद्धांत मानव को परम सिद्धि प्रदान करवा सकता है 🙏
उंचनीच, भेदभाव, असमानता क्यूं? 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

तरसते नैनों से तुम्हे निहारते है कान्हा

बरसते नैनों से तुम्हे याद करते कान्हा

थरथराते अधरों से तुम्हे पुकारते है कान्हा

भरते सांसो से तुम्हे जीवन सुश्रुते है कान्हा

धडकती धडकनों से तुम्हे धडकडाते है कान्हा

चुभते दिल से तुम्हे चुमते है कान्हा

जुडते हाथों से तुम्हे अधर्य धरते है कान्हा

लडखडाते पैरों से तुम्हे थामते है कान्हा

कान्हा तु आजा स्पंदन स्फूराजा

कान्हा तु आजा झलक दिखाजा

कान्हा तु आजा दरश जताजा

कान्हा तु आजा सेवा स्वीकारजा

कान्हा तु बसजा प्रेम स्पर्शजा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राम " आए ब्रह्मत्व पाएं

मैं अहल्या बनूं मुझमें प्राणत्व जगाएं 🙏

" राम " आए भक्ति पाएं

मैं शबरी बनूं मेरे जूठे बेर आरोगें 🙏

" राम " आए सेवा धरें

मैं नाविक बनूं मुक्ति चरण धोएं 🙏

" राम " आए गृह पावन करें

मैं निषाद बनूं मित्रता शरण निभाऊं 🙏

" राम " आए विद्युत दूत आएं

मैं हनुमान बनूं सदा स्मरण मग्न रहूं 🙏

" राम " आए परब्रह्म आएं

मैं रावण बनूं मूल राक्षसत्व त्यजूं 🙏

" राम " आए रामराज्य स्थाएं

हम प्रजा बनें प्रेम भक्ति संस्थापाएं 🙏

" राम " तेरे संस्कार में मर्यादा ध्याएं

सदा तेरे ही गुण उर्जित प्रज्वलाएं 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

आसमान से पाया मैंने विशाल होना

सूरज से पाया मैंने विशुद्ध जीना

सागर से पाया मैंने बहते उछलना।

धरती से पाया मैंने अडग रहना

वायु से पाया मैंने अविरत महकना

यही है यात्रा जीवन का ज्ञान विज्ञान संज्ञान 🙏

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक माता अपने कुटुंब के साथ वियेटनाम सैर करने गई थी। अपने बेटे बेटी को कहीं कहीं स्थलों को बता कर समझा रही थी - यह ऐसा देश है जिसके हर नागरिक सेवा, सम्मान और प्रामाणिक जीवन जीते है और आज यह देश पूरी दुनिया में अपनी सच्चाई और ईमानदारी से पहचाना जाता है 👍
बेटे बेटी ने तुरंत कहा मम्मी हमारा देश सच्चाई और ईमानदारी से है?
मम्मी ने कहा - हमारा देश यह सब बातें समझते नहीं है।
बेटे बेटी ने कहा - क्यूं मम्मी ऐसा?
इतने में एयरपोर्ट आ गया और अपनी सिक्योरिटी पता कर डिपार्चर गेट पर पहुंचे उतने में बेटे ने कहा मम्मी - पानी पीना है!
मम्मी ने आसपास नजर घुमाई और देखा तो थोड़े दूर पानी का कुलर था और दो व्यक्तियों कतार में खड़े थे, तुरंत वह वहां गई तो जो कतार में खड़े थे उनके आगे जाकर पानी भरने लगी, दोनों व्यक्तियों हुमन काईन्ड की शिस्त से कुछ कहा नहीं, जैसे उनकी एक बॊतल पानी की भर गई तुरंत दूसरी बॊतल भरने लगी तब आगे खड़ा व्यक्ति ने टोका - बहन! हमें भी पानी भरना है - तो बेटे बेटी की मम्मी बोली - अपने आपको संभालों!
वह व्यक्ति बोला - बहन पानी सबको पीना है सबका ख्याल रख कर!
तुरंत बहन बोली - मैं पानी भरकर रहूंगी!
बेटा बोला - मम्मी! हम लाईन में नहीं खड़े थे और सीधा पानी भरने लगे! उनका नंबर था, तो भी हमें कुछ नहीं बोले - मम्मी! उन्हें भी पानी भरना है तो हम उन्हें भरने दें!
मम्मी बोली - तु छोटा है! तु यह जगत की रीत नहीं समझता है! तु चुपचाप खड़ा रहे! बेटा सहमा गया।
पानी भरकर मम्मी और बेटे जा रहा था तब ही बेटा गीर गया और उनको चौट आई, तुरंत वह पानी भरने खड़े हुए व्यक्तियों दौड़कर बेटे को उठाया और जो चौट आई तुरंत उन्हें दवा मलम लगाया।
बेटा बोला मम्मी यह लोगों मेरी सारवार क्यूं करते है? हमने तो उन्हें पानी भरने नहीं दिया तो यह लोगों मुझे क्यूं संभालते है?
मम्मी ने कहा - सबका ख्याल रखना चाहिए - यही संस्कार और मानव धर्म है।
बेटा बोला - मम्मी जब हम पानी भर रहे थे तब एक अंकल ने बोला था - बहन हमें भी पानी भरना है! तो तुमने बोला था - तु छोटा है - तु नहीं समझेगा!
शायद हम संस्कार और मानवता में नहीं समझते है इसलिए हमारा देश सच्चाई और ईमानदारी से नहीं पहचाना जाता है।
तुम ही हम बच्चों को ऐसा समझाती हो तो हम भी बड़े होकर ऐसे ही होंगे!
मम्मी शरम से गुमसुम हो गई।
यही है हमारी हिन्दुस्थानी की पहचान और परिभाषा! 🙏
मित्रों! हर देश परदेश में हमारी पहचान सुधारनी है 🙏
" जय श्री कृष्ण " 👍

हे श्याम! मैं तुझमें हूं

मेरा नैन श्याम श्याम

मेरा मन श्याम श्याम

मेरा तन श्याम श्याम

मेरा रंग श्याम श्याम

मेरा पण श्याम श्याम

मेरा वर्ण श्याम श्याम

मेरा शरण श्याम श्याम

मेरा धरण श्याम श्याम

मेरा करण श्याम श्याम

मेरा किरण श्याम श्याम

मेरा पर्ण श्याम श्याम

मेरा तरण श्याम श्याम

मेरा मरण श्याम श्याम

मेरा गुण श्याम श्याम

मेरा सगुण श्याम श्याम

मेरा भ्रमण श्याम श्याम

मेरा ग्रहण श्याम श्याम

मेरा श्रवण श्याम श्याम

मेरा शिक्षण श्याम श्याम

मेरा तृण श्याम श्याम

मेरा भृण श्याम श्याम

मेरा क्षण श्याम श्याम

मेरा ऋण श्याम श्याम

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌹🙏🌹

भगवान आज अति प्रसन्न थे, ब्रह्मांड के हर जीव तत्वों को ऐलान किया कि " हे जीव! आज आप जो भी चाहो वह मैं तुम्हें हंसी खुशी से प्रदान करुंगा 🙏
अगर आप मेरे पास भी आ न सको तो केवल संकल्प से भी प्रदान कर सकूंगा 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏
जगत के हर वासी - जीव उछल कूद करने लगे, सर्वत्र हर्षोल्लास और खुशी से झूम उठे और नाचने लगे 👍
जो भी कोई जो संकल्प करें या प्रार्थना करें वह हाजर 😜
सब अपने अपनी तरह लेने लगे अपनी अपेक्षा महेच्छा और योग्यता से प्रदान करने लगे 👍
कहीं दिन बित गए, कितनो ने बहुत कुछ पा लिया। धीरे धीरे जिसने जो चाहा वो पा लिया। चारों ओर ख़ुशी ही ख़ुशी छा गई। कोई भी ऐसा न रहा जो ऐसी कृपा से वंचित हो। सब अपने में मग्न और झूमता हुआ हंसता हुआ, मस्ती में।
भगवान ने आखरी बार ऐलान किया कि कोई भी जीव सृष्टि बाक़ी न रह जाए कि भगवान हमें अन्याय करें! सबको जो चाहा वह पाया जितना चाहा इतना पाया।
भगवान ने एक दिन निश्चित किया - यह दिन से यह कृपा समाप्त होगी। न कोई फरियाद न कोई शिकायत न कोई विनंती और न कोई प्रार्थना 🙏
सबने सहर्ष स्वीकार कर लिया 👍
सब अपने में मग्न और मस्त थे और वह दिन, घड़ी आ गई। सब उछलते कूदते आनंद से श्री भगवान कि कृपा स्वीकार कर कृतकृत्य हो गए थे। दिन की समाप्ति 🙏
हर कोई अपने जीवन में मस्त व्यस्त रहने लगे। समयांतर कोई ऐसी कक्षा के धनी हुए कोई ऐसी कक्षा के धनी हुए। कोई इनमें स्नातक हुए कोई उनमें स्नातक हुए।
सब अपनी मानसिकता से अपनी अपनी विद्धता, योग्यता, समाजता, वैविध्यता में रहने लगे। सबको अपना जीवन, संस्कार, संस्थापन, व्यवहार, व्यवसाय और व्यवस्था में संतुलन बनाए थे और श्रेष्ठता से आनंद मंगल में कुशलता पूर्वक अपने वंश वेलीओं के साथ रहते थे।
समय की गति प्रकृति की प्रवृत्ति समझते हर कोई अपने आपको धन्य समझते थे।
कालानुसार धीरे धीरे हर जीव कोई ऐसी गतिविधियों में डूबने लगे, खोने लगे, जाने लगे जिससे असमानता, असमंजस, अराजकता, अंधाधुंधी, हक्केदार, अहंकार, अभिमान, संशयता की वृत्ति, प्रवृत्ति उठने लगी। अन्याय, अधिकार, आधिपत्य की असामाजिक लहरों अपना जोर पकड़ने लगी। सबका जीवन अस्त व्यस्त रहने लगा। उंचनिंच का भेदभाव, धर्म असहिष्णुता, सामाजिक विध्वंस बढ़ने लगा।
हर कोई के मन में विचार आने लगा, ऐसा कैसा!
क्रमशः
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" राम राज्य " हमने कहीं कथा, प्रवचन, सत्संग में सुना। राम राज्य में हर कोई सुखी, निरोगी, वैभवी और सुरक्षित। हमने सुना पर अनुभव नहीं पाया 🌷 🌷

वार्ता तो हर कोई करते है पर अनुभूति कौन कर सकता है?

राम राज्य की अनुभूति जो शिष्ठाचारी हो, विनयशील हो, सत्यवादी हो, धैर्यवान हो, परमविश्वासु हो, वीर हो, नि:संशयी हो, न्यायी हो, धर्मपारायण हो, एकवचनिय हो, आत्म निर्भर हो, सदगुणी हो, परोपकारी हो, कष्टभंजन हो, सत्याग्रही हो, प्रिय हो, प्रेमी हो।

रामराज्य का प्रस्थापन ऐसे आत्मीय जनों से नहीं की श्री भगवान राम से - श्री राम ऐसे प्रजाजनों से ही प्रक्ट भये 🌷 🙏 🌷

हमें तो गर्व लेना है कि हमारे पूर्वजों रामराज्य की धरोहर थे तो हम क्या ऐसे नहीं हो सकते?

चलो बढ़ाएं कदम 👍

"Vibrant Pushti "

" जय श्री राम " 🌷 🙏 🌷

ઘરમાં પધારે બાળક જન્મ ધરી

કુટુંબની ઊર્મિઓથી વાત્સલ્ય ભરી

ખોળે બેસે ખભે ઊંચકે ઘડી ઘડી

મન મલકાવે તન દોડાવે હંસી હંસી

રાત જગાડે નિંદર ન આવે રડી રડી

ઠુમક ઠુમક દિવસ પસારે

સરરર સરરર વર્ષો વિતાવે

આવ્યો સંસ્કાર શિક્ષા દિન

ચાલ્યો મતવાલો દૂર પ્રતિદિન

કેવી છે ઘટમાળ જીવનની

પોતાનું છે તે છૂટે નૈન અયન

હૃદયનું અંકુર ખીલે દૂર ગગન

પામે ન કદી શાંતિ પ્રેમ આસન

લીલા પ્રભુની અકળ ગમન

ક્યારે મળીશું એ વંશ ચમન

કેવું છે આ આત્માનું બંધન

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

બાળક સ્કૂલે જાય - 🙏

બસ! તે છેલ્લી ક્ષણ છે

વાત્સલ્યની ઊર્મિઓની 🌷🙏🌷

“જય શ્રી કૃષ્ણ “બેટા!

एक बार हमारे प्रधानमंत्री जी अमेरिका गए थे, उन्हें मान सम्मान बहुत मिला और जब वापस हिन्दुस्थान लौट रहे थे तब वहां के एक पत्रकार ने पूछा - प्रधानमंत्री जी! आपके देश के लोगों बार बार अपने संप्रदाय धर्म आधारित चित्र, सत्संग, प्रार्थना, कथा प्रवचन के विडियो बार बार एक दूसरे को भेजते रहते है और धर्मिष्ठ का आंचल ओढ़े रहते है, क्या आपके यहां ऐसी प्रवृत्ति से श्री प्रभु प्रसन्न होकर उनकी सब मांगे, इच्छा, अपेक्षा पूर्ण होता है? अगर हां तो आपका देश गरीब क्यूं है?

" हनुमान जयंती " 🌷🙏🌷

भक्ति की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

ज्ञान की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

वीर की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

शौर्य की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

शरणागत की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

जीवन की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

कर्म की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

धर्म की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

दूत की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

मित्रता की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

दास की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

रक्षक की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏शिक्षक की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

आचार्य की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

सेवा की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

त्याग की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

ब्रह्मचर्य की परिभाषा - श्री हनुमानजी 🙏

जन्म से अमरता अर्थात समय समय काल काल से यह परमात्मा सदा अचल - अखंड - अदभुत - अलौकिक चरित्र - श्री हनुमानजी 🙏

श्री हनुमानजी को शत् शत् नमन 🙏

🌷🙏🌷 " जय श्री राम " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

ओहहह! जबरदस्त 👍

यात्रा यात्रा और यात्रा 🌷

कोई कुंभ मेला 🙏

कोई राम मंदिर 🙏

कोई काशी 🙏

कोई मथुरा 🙏

कोई नाथद्वारा 🙏

कोई नर्मदा परिक्रमा 🙏

कोई बैठकजी 🙏

यात्रा परिक्रमा यात्रा परिक्रमा 🌷🙏🌷

श्रद्धा विश्वास की अपूर्व पराकाष्ठा 👍

न कोई दु:खी न कोई मजबूर न कोई गरीब

सारा हिन्दुस्तान भक्तिमय, आनंदमय 🌷

जहां जहां नजर दौड़ाएं

नज़ारा है सुखी सुखी

डाल डाल पर पंखी गाएं

ऐसा है हिन्दुस्तान हमारा

🌷🙏🙏🌷🙏🙏🌷🙏🙏🌷

हर एक को शुभकामनाएं 🙏

Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

श्री – शुभता का स्वर

"श्री" न केवल एक नाम का भाव,

यह तो चेतना का मधुर प्रभाव।

जहाँ हो शील, जहाँ हो तेज,

वहीं प्रकटे श्री का स्नेह-संदेश।

श्री पुरुष वह, जो नयन में नीतिधर हो,

मन में धैर्य, वाणी में अमृत स्वर हो।

कर्म में संयम, विचारों में प्रकाश,

हृदय में हो करुणा का सुवास।

श्रीमती वह, जो कोमल मुस्कान सी,

माँ की ममता, और दीप समान सी।

जिसके स्पर्श से घर हो मंदिर,

जिसके प्रेम में बहता सागर।

"श्री" वह शक्ति, जो नाम से नहीं आती,

वह तो आत्मा में जगती, चुपचाप समाती।

पुरुष हो या स्त्री – जो सत्य में लीन,

वही बन जाए 'श्री' – शुभता की तसवीर।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक कुटुंब है जो नित्य अपने माता-पिता, वडिल भाई बंधुओं की सेवा परिचारिका में व्यस्त हो कर अपना कारोबार भी नीति नियमन से अर्थव्यवस्था में सैद्धांतिक जीवन का आनंद लूट रहते है। नित्य क्रम में सेवा और मानसिक शारीरिक शुद्धि, पवित्रता और माधुर्यपूर्ण क्रिया आधारित मंगल प्रभात से सुहावनी शाम तक अपना दिवस पसार कर रात को सत्संग कथा वार्ता भजन कीर्तन करते करते हंसते हंसाते नाचते गाते हुए अपने ककक्ष में मधुर नींद में खो जाते है। 🙏
हररोज का जीवन 🙏
वर्षों वर्ष बीत गए पर कुटुंब सुखी संपन्न और आनंद परमानंद पाता अपने आप में गुलमिल जाता जीवन में न कोई मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांसारिक और आर्थिक तनाव, बदलाव या परिस्थिति या समय संजोग का परिवर्तन नहीं आया👍
यह क्षण भी यह कुटुंब माधुर्य ज्ञान भाव में जी रहा है 🙏
श्री प्रभु की असीम कृपा और साथ साथ कौटुंबिक वंशवेल संस्कार संचिता 🌷
संसार है - पर वह न बदले 🙏
बदले सारे ज्ञाति नाती
बदले सारे पास पड़ोसी
बदले सारे सगा संबंधी
बदले सारे जीव संसारी
बदले सारे दुनिया रागी
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
एक दिन की बात है - उनके घर एक साधु पधारे 🙏
योग्य स्वागत योग्य साधुमता
सत्संग सत्संग में साधु हो गया - एकतार
साधु बोला - ओहहह! है अदभुत परिवार
सदा श्री प्रभु बिराजे सभ्य सभ्य आकार
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
आज भी रहते है श्री नाथद्वार 🙏
जीवन की अनोखी चारित्र्यता संचारी
मैं करूं नित्य नित्य प्रणाम 🙏
" Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा में जाने वाले की संख्या ईतनी बढ़ी है कि हर कोई धर्मिष्ठ, खुदाबंद, ईसाई, खालसा के मार्ग पर चलने के लिए दौड़ते है 🙏

क्यूंकि वहीं से सबकी पहचान योग्य मानवता की होती है 🙏

पर

मंदिर में धूर्तता

मस्जिद में दुष्टता

चर्च में विषता

गुरुद्वारा में व्यंगता

पाएं

तो धर्म किसे कहे?

जो यही से बाहर आए तो कैसे!

मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा अवश्य जाओ 🙏

पर

धूर्तता को नष्ट करो

दुष्टता को खत्म करो

विषता को मार डालो

व्यंगता को भस्म करो

तो

हम धर्मिष्ठ

हम खुदाबंद

हम ईसाई

हम खालसा

🌷🙏🌷🙏🤝🙏🌷🙏🌷

यही मनुष्य जीवन की योग्यता है

🌷🙏🙏🌷🙏🌷🙏🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

एक भाविक झड़प से अपने पैरों को ज़ोर देते हुए नाथद्वारा हवेली की ओर दर्शन के लिए जा रहा था। जैसे उन्होंने ने दरवाजा देखा उन्होंने अपने पैरों की गति बढ़ा दी। थोड़े पहुंचा और गिर गया, बहुत चोंट आईं आसपास के लोग दौड़कर आएं और उन्हें खड़ा किया तो तुरंत लड़खड़ाते दौड़ने लगा। जैसे दरवाजा के निकट पहुंचा फिर वह गिर गया, सिक्युरिटी गार्ड ने संभाला और नजदीक के पगथिया पर बिठाया, दो मिनट हुईं और फिर वह दौड़ा जैसे तिबारी पहुंचा और फिर गिर गया, तुरंत व्यवस्थापक ने संभाला और बोला - दादा! तनीक बैठो आपको बहुत चोंट आईं है। भाविक खड़ा हो गया और अति आनंद विभोर से श्री प्रभु का दर्शन पाया और कुछ गुनगुनाके चल पड़ा। वह वही जगह पर आकर दो हाथ जोड़े और बोला - भैया लोग मैं गिर गया था तब आप लोगों ने मुझे संभाला, मुझे दर्शन करने के लिए साथ दिया - मैं आपका आभारी हूं 🙏

जो ईकठ्ठे हुए थे उन्होंने बोला - भाई सेवा का काम है ऐसी अनहोनी में ख्याल रखना पड़ता है 🙏

पर सब लोग अचंभित हो गए - अरे यह जोर से गिरा था, चोंट आईं थी, न चोंट का निशान और न कोई दर्द! अरे यह तो चलने के काबिल नहीं था, ऐसा कैसे हो गया? वह भाविक सिक्युरिटी गार्ड के पास गया और उनका आभार व्यक्त किया तो वह भी अचंभित रह गए।

भाविक सबको प्रणाम करता चला गया। 🙏

सारे नाथद्वारा में चर्चा हो गई - एक भाविक को श्री प्रभु ने संभाला🌷

राजभोग के दर्शन का समय हुआ - भारी भीड़ उमड़ी श्रद्धालुओं - मैं पहला - मैं पहला से कदम बढ़ा रहे थे। इतने में वह भाविक आया - सब लोगों की नज़र उन पर टिकी थी और धीरे धीरे सब दर्शन करने पहुंच रहे थे। वह भाविक के आने से जो धक्का-मुक्की होने वाली थी वह रुक गई और सबने दर्शन पाया 🙏

आखरी मिनिटों में वह भाविक दर्शन गृह में गया, जैसे नज़र से नज़र मिली तो श्री प्रभु हंसते कहने लगे - हे भाविक! तेरी अतूट श्रद्धा विश्वास ने आज हमारे हवेली की व्यवस्था में संतुलन बनाया। तेरा आना और भीड़ का ठहरना व्यवस्था में बड़ी मदद कर दी।

भाविक - हाथ जोड़कर कहा - आपकी कृपा और नाम मेरा! नहीं नहीं प्रभु🙏

आप मेरा कितना ख्याल रखते हो, मैं गिरा तो भी न चोंट और दर्द🙏

आपकी लीला आप जाने, बस मैं तो आपका दास हूं 🙏

टेरा आ गया 🙏

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🌷 🌷

દીકરી વળાવવાની વેળા 🙏🙌
દીકરી પિતાજીનાં ચરણ સ્પર્શ કરીને વિદાયનાં ડગ ભરે છે ત્યાં જ પિતાજી એ તેનાં શીશ ઉપર હાથ મૂકીને આશીર્વાદ આપતા બોલ્યા - બેટા! ઊભી રહે જે 🙏
બેટા! જ્યારે તું નાની હતી ત્યારે હું કામ પરથી આવ્યો ને જેવો ઘરમાં પ્રવેશ કરું છું અને તું બોલી - પિતાજી આજે બહાર ફરવા જઈએ
મેં કહ્યું - ચોક્કસ પણ હું હાથપગ ધોઈને તૈયાર થઈ જાઉં
પિતાજી ચાલો
અને અમે બંને વાતો કરતા કરતા ચાલવા માંડ્યા. થોડે દૂર ચાલ્યા બાદ એક બજારનાં નાકે એક રમકડાં વાળા ઉપર દીકરીની નજર પડી અને મને કહ્યું પિતાજી મને એક રમકડું અપાવો
અમે બંને રમકડાં જોતા જોતા દીકરી ની નજર એક સુંદર મજાની ઢિંગલી ઉપર પડી અને કહેવા લાગી - પિતાજી મને આ ઢિંગલી અપાવો.
પિતાજી બિચારો મજૂર માણસ એટલે તેને કહ્યું - બેટા! નહીં નહીં
દીકરીએ જિદ્દ પકડી અને રડતી ઊછળતી રસ્તે આળોટતી એક રટ જ પકડી
મને અપાવો
મને અપાવો
પિતાજી સહન કરતા તેને ઢિંગલી ના અપાવી અને આખરે તેને સમજાવી ઘરે લાવ્યા
પણ દીકરી ની રટ અને કકળાટ ચાલુ જ રહ્યો
એમાં ને એમાં દીકરી સૂઈ ગઈ
પિતાજી પણ સૂઈ ગયા
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
પિતાજી મને વળાવતી વખતે આવી વાત કેમ કરો છો? ભૂતકાળ ભૂલી જાઓ
બેટા! તને યાદ છે ને કે આવું તું નાની હતી ત્યારે બનેલું
દીકરી બોલી - હા પિતાજી પણ આ ટાણે તમે કેમ આ વાત કરો છો?
બેટા! યોગ્ય સમય આવ્યો છે એટલે આ વાત કરી છે
હાં! બેટા
જ્યારે તું નાની હતી ત્યારથી જ તને શીખવાડી રહ્યો હતો કે તને ગમતી વસ્તુ ને તું છોડતી જા!
તું દીકરી છે એટલે આ શિક્ષા ખૂબ અનિવાર્ય છે
પિતાજી 🙏
હાં! બેટા
આજે તું સાસરિયે જાય છે તો આ શિક્ષા તું કદી ભૂલતી નહીં
તો જ તું સરસ્વતી સ્વરૂપા, લક્ષ્મી સ્વરૂપા અને પ્રેમ સ્વરૂપાથી રહીશ 🙌
દીકરી પિતાજી ને વળગી ને કહે છે
પિતાજી તમે મારા પ્રિય પિતા છો અને તમને પણ છોડી દઉં!
પિતાજીએ કહ્યું બેટા જે શિક્ષા તને આપી છે તે ઉત્તમ અને વિશ્વાસ સભર છે.
દીકરી પિતાજી ને સામે જોતી જોતી ચાલી નીકળી
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" वैराग्य " आजके समय में कौन है वैराग्यी? कोई नहीं हो सकते 🙏

जो निरपेक्ष हो - वह वैराग्यी है 👍

शब्द, स्वर, द्रष्टि, मन, अक्षर और अंक से निरपेक्ष हो 👍

रज, ज़र्रा, कण, गण, प्रण और ऋण से वैराग्यी हो 👍

जो अहंकार, अभिमान, अंग, संग और व्यंग्य से वैराग्यी हो 👍

जो ईन्द्रियां, राग रंगेलीयां, और पहेलीयां से वैराग्यी हो 👍

जो मान सम्मान, हार जीत और एश्वर्य से वैराग्यी हो 👍

जो ज्ञान विज्ञान संज्ञान और प्रज्ञान से वैराग्यी हो 👍

ऐसा क्यूं कोई नहीं है?

भगवान श्री कृष्ण के वंशज या ज्ञाति और समाजी भी वैराग्यी नहीं थे 🙏

हां वैराग्यी थे गोप गोपियों 🙏

वैराग्यी थे भक्तों 🙏

अदभुत है यह वैराग्यी की पहचान 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर से बंसी की नाद आ रही थी कहीं से

कोई बुलाता था उनके नजदीकी मुझे

मैं खींची गई खींची गई उस नाद तक

देखा तो प्रियतम पुकारता था मुझे

उनके मुखड़े पर जब पड़े मेरे नैनन

नाद से बिखर रहे थे बूंद विरह आग में

मैं लिपटी अंगारों की प्रेम ज्वाला से

सागर उमड़ा एक दूजे में डूबते डूबते

एक गूंज उठी प्रेम मिलन से " राधे "

मैं श्याम हो भई प्रिय भये " राधा "

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

वल्लभ प्रक्ट भयो हमरे द्वार

वल्लभ प्रक्ट भयो हमरे द्वार

ब्रह्म संबंध केरा खुला द्वार

वल्लभ प्रक्ट भयो हमरे द्वार

श्री यमुना कृपा सींची हमरे आधार

पुष्टि मार्ग से किया उद्धार

श्री गिरिराज रज रज हमरे द्वार

परिक्रमा से जीवन किया सिद्धार

श्री अष्टसखा कीर्तन हमरे द्वार

अष्ट शमा दर्शन हमें निहार

श्री नाथजी सेवा हमारा निरधार

नित्य नित्य करें गृह प्रेम शृंगार

सुनी विनंती श्री वल्लभ आज़

श्री वल्लभ पधार्या आंगन आज़

वल्लभ प्रक्ट भयो हमरे द्वार

वल्लभ प्रक्ट भयो हमरे द्वार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

“Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" પ્રભુ ને શ્રમ ના પડે "

ખૂબ ઊંડાણ થી વિચાર્યું કે અનેક વ્યક્તિઓ વારંવાર કહેતા હોય છે - શ્રી પ્રભુ ને શ્રમ ના પડે "
🌷🙏🌷

એક વાર એક યાત્રાળુ યાત્રા કરવા નીકળ્યો, તેને તન મન અને ધન થી સંકલ્પ કરેલો કે શ્રી પ્રભુ ને શ્રમ ના પડે 🌷

ધીરે ધીરે નક્કી કરેલી દિશા અને માર્ગ પર કદમ ભરતો અને શ્રી પ્રભુ સ્મરણ કરતો આગળ ધપતો હતો. થોડા સમય બાદ તેને પાણી પીવાની ઈચ્છા થઈ અને થોડે જ આગળ યાત્રાળુ માટે પાણી ની વ્યવસ્થા કરેલી, ગામવાસીઓ આવતા જતા સહુ યાત્રાળુને પાણી પીવડાવતા અને આરામ આપતા. યાત્રાળુ ત્યાં પહોંચે છે અને પાણી નો ગ્લાસ હાથમાં લે છે ત્યાં જ પરબડી વાળો બોલ્યો- ભાઈ આપના પર શ્રી પ્રભુની કૃપા છે કે તમારા જેવા માટે શ્રી પ્રભુએ અમને પ્રેરણા આપી કે યાત્રાળુઓ ને સહારો આપવો.

યાત્રાળુએ વિચાર કર્યો શ્રી પ્રભુ અમારો કેટલો ખ્યાલ રાખે છે કે અમે આપને ધામ દર્શન કરવા નીકળ્યા અને આ વ્યવસ્થા 🙏

શ્રી પ્રભુ આપની કૃપા અપરંપાર છે 🙏

ત્યાં જ સ્વ આત્મા માંથી સ્વર સંભળાયો - શ્રી પ્રભુ ભક્તની કેટલી કાળજી રાખે છે અને સ્વ કષ્ટ ઉઠાવે છે 🙏

યાત્રાળુ એ પાણીનો ગ્લાસ ત્યાં જ મૂકી દીધો અને - બે હાથ જોડી કહેવા લાગ્યો

હે પ્રભુ! આપ અમારા માટે આટલો બધો શ્રમ ઉઠાવો છો! પ્રભુ મને માફ કરો 🙏

મેં તો સંકલ્પ લીધો છે કે આપને શ્રમ આપ્યા વગર યાત્રા કરીશ. 🌷

યાત્રાળુ આગળ ધપ્યા- હવે જ્યાં પાણી અન્ન ની વ્યવસ્થા હોય ત્યાં નજર જ નહીં કરવાની, કારણકે શ્રી પ્રભુને કષ્ટ પડે છે.

થોડે દૂર પહોંચ્યા તો સમજાયુ કે હવે એક ડગ નહીં ચલાય.

એટલે એક વ્યક્તિને પૂછી ધર્મશાળા માં આરામ કરવા ઉતર્યા. ત્યાં નાં વ્યવસ્થાપકે તરત રૂમ ની વ્યવસ્થા કરી અને આરામ ફરમાવવાનું નક્કી કર્યું.

રૂમ માં ફ્રેશ થઈ નાહી ધોઈ ને શરીર નો બધો થાક ઉતાર્યો. વ્યવસ્થાપક ને બોલાવી ચાય નાસ્તો નો બંદોબસ્ત કર્યો. જેવી ચાય ની ચુસ્કી ભરે છે ત્યાં જ વ્યવસ્થાપક બોલ્યો 🙏

આ તો ભગવાનની લીલા છે. તેઓની કૃપા વગર પાંદડું પણ હલતું નથી.

યાત્રાળુ એ વ્યવસ્થાપકને કહ્યું - હે ધર્મિષ્ઠ! આપ આટલું કષ્ટ ઉઠાવીને યાત્રાળુ ની ઉત્તમ સેવા કરી રહ્યા છો 🙏

વ્યવસ્થાપકે કહ્યું - અરે અરે મને દોષમાં ના મૂકો, હું તો સેવક છું મારા માલિક જે કરાવે તે કરૂં છું 🙏

યાત્રાળુ નો સ્વ આત્મા ફરી બોલ્યો - અહીં પણ શ્રી પ્રભુ જ કષ્ટ ઉઠાવે છે. 🙏

પેલો યાત્રાળુ ઊભો થઈ ગયો અને જેમતેમ જેમતેમ સાચવતો આગળ વધ્યો. મનમાં રટણ ચાલે - શ્રી પ્રભુ મારા માટે કેટલો શ્રમ લે છે 🙏

તે વિચારવા લાગ્યો - ડગલે પગલે શ્રી પ્રભુ કષ્ટ ઉઠાવે છે એટલે શ્રી પ્રભુને શ્રમ પડ્યા વગર રહે જ નહીં 🙏

મારી દરેક ઈચ્છા અને ક્રિયા માં શ્રી પ્રભુને શ્રમ પડે તે કેવીરીતે સ્વીકારાય?

યાત્રાળુ નાસીપાસ થઈ ગયો કારણકે દરેક ડગલે આવું જ 🌷

વિચારમાં ને વિચારમાં તે રસ્તા પર ઢળી પડ્યો ત્યાં જ એક વટેમાર્ગુ આવીને તેને ઝાલ્યો અને બાજુની ઝૂંપડી માં સુવાડી યોગ્ય સારવાર કરી તે યાત્રાળુ ને સ્વસ્થ કર્યો 👍

યાત્રાળુ બોલ્યો- હું ક્યાં છું? મને શું થયું છે?

વટેમાર્ગુ બોલ્યો- ભાઈ તમે થાકી ગયેલા અને અશક્તિ શરીરની તમને રસ્તા પર પાડી નાખેલા, મારી નજરે તરત તમને મદદ કરવા દોડાવ્યો, શ્રી પ્રભુ આપની ખૂબ સંભાળ રાખે છે કે જેઓ એ મને સંકેત કર્યો અને હું દોડી ને તમને સંભાળ્યા. પાડ તો શ્રી પ્રભુનો માનો, અમે તો તેઓના આશીર્વાદ થી જ આવી સેવા કરીએ છીએ 🙏

યાત્રાળુ એ વિચાર્યું- અહીં પણ શ્રી પ્રભુએ મારા માટે શ્રમ લીધો. તેની આંખો માંથી ચોધાર આંસુ વહેવા માંડ્યા અને કહેવા લાગ્યો - પ્રભુ! હું એવું તે શું કરૂં કે આપને કષ્ટ કે શ્રમ ના પડે?

શ્રી પ્રભુ મલકાયા અને સંકેત કર્યો- ભાઈ! આપ સહુને આપેલ આ શરીર અને જન્મ તે પ્રામાણિક, વિશ્વાસ, પ્રેમ લુટાવી, સંશય વિના ગુજારીશ તો મને કોઈ કષ્ટ કે શ્રમ જ નહીં પડે 🙏

સંશય ભરેલા મનોએ એવી અંધશ્રદ્ધા અને દુર્દશા ફેલાવી છે કે હું પોતે આ પળોજણ થી છૂટકારો મેળવવા કોશિશ કરૂં છું 🙏

આ આંધળા લોભીયા બની બેઠેલા કુળ વ્યક્તિત્વો આ જીવનને ભ્રષ્ટ અને અયોગ્ય બનાવે છે. કષ્ટ તો મને આવા ધર્મનાં પાખંડી ગુરુઓ થી મને શ્રમ અને કષ્ટ પડે છે 🙏 એટલે તું નાહક નો આવા વમળ માં ના ફસાતો 🙏 તું તારા સ્વ વિશ્વાસ થી આગળ ધપ 🙏

"Vibrant Pushti "

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

" गुरु कौन " 🌷🙏🌷

" अंगूलीमाल लूटारा " कौन नहीं जानता? स्कूल में पढ़ते थे तब "तथागत बुद्ध और अंगूलीमाल लूटारा" का पाठ हम पढ़ते थे।

बुद्ध जंगल में अकेले भ्रमण करते थे तब अंगूलीमाल की नज़र में वह आये तब अंगूलीमाल ने कहा - ठहरों!

बुद्ध ठहर गए - तो भी वह दौड़ता हांफता निकट आते ही बोला - ठहरों!

बुद्ध बोले मैं तो ठहरा हूं तुझे ठहरना है!

अंगूलीमाल बोला - जो है तुम्हारी पास वह मुझे दे दे!

बुद्ध बोले - अवश्य! जो मेरी पास है वह अवश्य तुझे देना ही है 🌷

पर मेरे एक प्रश्न का उत्तर दे दो बाद में सबकुछ मेरी पास है वह तुझे न्योछावर कर दूंगा🙏

कहो

इतना सारा लूट का माल, तु इसे करता क्या है?

अंगूलीमाल - मेरे कुटुंब का भरण-पोषण

बुद्ध - तो उन्हें बुलाले क्यूंकि मेरी पास तो अढळक अमूल्य धन है, तु अकेला उठायेगा कैसे?

अंगूलीमाल ने अपने कमर से रस्सा निकाला और पास वाले पेड़ से बुद्ध को बांध दिया

बुद्ध ने कहा - भैया! कस कर बांधना, शायद खुल न जाएं!

अंगूलीमाल ने कस कर और ऐसे बांधा रस्सा उनके सिवा कोई खोल न सके।

यहां मैं जान बूझ कर ठहरता हूं 🙏

" गुरु " कितना सौम्य और शांत उन्हें ऐसे उग्र, स्वार्थी, दुष्ट, क्रोधी, धूर्त, भ्रष्ट, और विघ्नसंतोषी व्यक्ति को अपना शिष्य बनाना था।

वह उनके हुकम से ठहरें

वह उनके उग्र स्वार्थी दुष्ट क्रोधी धूर्त भ्रष्ट और विघ्नसंतोषी व्यक्ति से बंधे

फिर भी शांत 🙏

गुरु उन्हें समझना है जो उग्र स्वार्थी दुष्ट क्रोधी धूर्त भ्रष्ट और विघ्नसंतोषी न हो। आज जो हमारी परिस्थितियां ऐसी इसलिए है कि हमें सही दिशा निर्देशक नहीं है।

इसलिए तो चारों ओर अंगूलीमाल है

अगर कोई गुरु नहीं पाये तो दिक्कत नहीं करनी है - हमारे आचार्य श्री वल्लभ का चरित्र और चित्रजी तो है 🙏

उन्हें श्री गुरु समझ कर हम अपना जीवन कृतार्थ कर सकते है 🙏

जैसे " एकलव्य "👍

हम अवश्य हमारा उद्धार कर पाएंगे 🌷

" Vibrant Pushti “

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बहुत अहिल्याएँ पत्थर हैं, इन्द्रों की करतूतों से।
अरी मेनकाओ! तुमने भी, अनगिन विश्वामित्र रचे॥

कठिन साधनाएँ फिसली हैं, सम्मोहक चिकनाई पर।
उर्वशियों की भावभंगिमा, रंभा की तरुणाई पर॥
कामदेव के पंचबाण का, वार वीर ने ही झेला।
यह अनंग ही बलवानों के, धीरज- संयम से खेला ॥
रूप-रंग की चिर-चौसर ने, युग-युग जाल विचित्र रचे।
अरी मेनकाओ! तुमने भी, अनगिन विश्वामित्र रचे ॥१

डगर-डगर पर शूर्पनखा है, अभी कदाचित् थकी नहीं।
घोर अघोरी की तपचर्या,अधिक दिवस टिक सकी नहीं॥
दोषी है यदि वह अनंग तो, रतियाँ भी सहभागी हैं।
आम्रपालियाँ हर युग में ही, हुईं धर्म अनुरागी हैं॥
मधुरिम लवणों ने पलभर में, पद-पद धुमिल चरित्र रचे।
अरी मेनकाओ! तुमने भी, अनगिन विश्वामित्र रचे ॥ २

राजनीति के द्यूत गृहों में, कुछ पासे तन धारी हैं।
लावण्याओं के सम्मुख तो, अक्षौहिणियाँ हारी हैं॥
चक्रवर्तियों की सत्ता पर, पाटल अधर फिरा डाले।
नयन कटाक्षों ने पल भर में, सुदृढ़ महल गिरा डाले ॥
राजभवन उसके चमके थे, जिसने कामुक चित्र रचे।
अरी मेनकाओ! तुमने भी, अनगिन विश्वामित्र रचे ॥ ३

शूर-प्रतापी सौ-सौ राजन, रंगमहल में ध्वस्त हुए।
विष-कन्याओं के सम्मुख भी, अनगिन सूरज अस्त हुए॥
खण्डहरों के प्रांगण में कुछ, रूप-राशि का भ्रमण मिला।
सूख चुके वटवृक्षों पर भी, बेलों का अतिचरण मिला ॥
चिंगारी को आग बनादे, मादक दैहिक इत्र रचे।
अरी मेनकाओ! तुमने भी, अनगिन विश्वामित्र रचे ॥ ४

वंशावलियाँ भी हँसती है, गणिकाओं की भूलों में ।
हुआ बावरा चन्द्र कलंकित, काम-ज्वार के झूलों में ॥
कुन्ती का आदेश बड़ा था, या फिर पुरुषों का छल था?
शिरोधार्य आज्ञा कर डाली, किस-किस का मन निर्बल था?
युद्धभूमि के नेपथ्यों में, कितने कांड पवित्र रचे?
अरी मेनकाओ! तुमने भी, अनगिन विश्वामित्र रचे ॥ ५
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" अहल्या " एक स्त्री, उत्तम और सिद्ध ऋषि की पत्नी 🙏
स्वरुपवान, बुद्धि मान, संस्कार से सुशिक्षित। पतिव्रता स्त्री अपने पति को समर्पण, दासी 🙏
कोई बुरी नजर वाले ने उन्हें क्या से क्या बना दिया 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
आजकल बुरी नजर किस पर नहीं पड़ती है?
अपने रुप
अपने ईमान
अपने विश्वास
अपने व्यवहार
अपने व्यवसाय
अपने सुख
अपने वैभव
अपने कुटुंब
और सोचते रहते है उनका निकंदन कब निकले!
हर कोई ऐसा सोचें तो - ऐसी नज़र से कौन बचें?
बचने का एक ही मार्ग - स्व चिंतन अध्ययन और ज्ञान भक्ति
तब ही ऐसी नज़र से हम बचे 🙏
“Vibrant Pushti “
" जय श्री कृष्ण " 🌷🌷🌷

जागते जागते जमाना ऐसा जागा

कहीं अपने संस्कार को ढूंढें

कहीं अपने वचन को ढूंढें

कहीं अपने शिक्षा को ढूंढें

कहीं अपने आपको को ढूंढें

कहीं अपने को समाज में ढूंढें

कहीं अपने राम में ढूंढें

कहीं अपने प्रेम में ढूंढें

कहीं अपनी उलझन में ढूंढें

कहीं अपनी भक्ति में ढूंढें

कहीं अपनी शक्ति में ढूंढें

कहीं अपनी बुद्धि में ढूंढें

कहीं अपने वंश में ढूंढें

कहीं अपनी यादों में ढूंढें

घूमे धूमो धूमाओ 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि – द्रष्टि

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

VIBRANT PUSHTI

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507